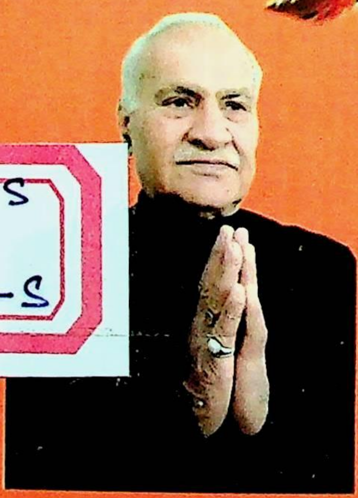
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

सम सामयिक लेख संग्रह





हितेश कुमार शर्मा

गणपति भवन सिविल लाइन, बिजनौर 246701 (उ०प्र०) भारत

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

185407

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

(समसामयिक लेख–संग्रह)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्पण

लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल
की पुण्य स्मृति में
समर्पित

यदि राजनीति लौहपुरुष की इच्छानुसार चलती तो आज देश की स्थिति कुछ और ही होती।

—हितेश कुमार शर्मा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

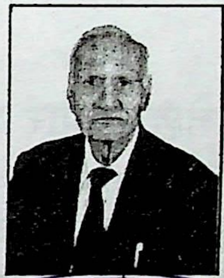
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

(समसामयिक लेख–संग्रह)



Central Library
185407
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

रचयिता

डॉ. हितेश कुमार शर्मा

गणपति भवन, सिविल लाईन्स, बिजनौर 246701 (उ.प्र.)

097
185407

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R.P.S
097
ARY.S
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

2014
प्रथम संस्करण
मूल्य रु॰ 300/- मात्र प्रति पुस्तक
सर्वाधिकार लेखक के पास सुरक्षित

लेखक
हितेश कुमार शर्मा
गणति भवन, सिविल लाइंस
बिजनौर 246701 (उ॰प्र॰)
टाइप सैटिंग : हरिओम कश्यप

ISBN : 978-81-929885-0-4

प्रकाशक
हरिगंगा प्रकाशन गणपति भवन, सिविल लाइंस,
बिजनौर 246701 (उ॰प्र॰) भारत

मुद्रक
अग्रवाल ग्राफिक्स, 350 जत्तीवाड़ा, बुढ़ाना गेट, मेरठ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉ० राम स्वरूप आर्य, बिजनौर
की स्मृति में सादर भेंट–
हरप्यारी देवी, चन्द्रप्रकाश आर्य
संतोष कुमारी, रवि प्रकाश आर्य

सत्यं शिवं सुन्दरम् : वर्तमान का दर्पण

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह जिस सामाजिक परिवेश में रहता है, उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। अगर कहीं कुछ गलत हो रहा है तो उसकी आत्मा उसका प्रतिवाद करना चाहती है मगर विभिन्न कारणों से वह चुप रहता है। कभी वह सोचता है, हमें करना क्या है? कभी सोचता है कि अकेला चना क्या भाड़ फोड़ सकता है, कभी व्यक्तिगत लाभ–हानि पर विचार करके भी चुप रहता है। उसके विपरीत साहित्यकार एक अतिसंवेदनशील प्राणी होता है। वह बुराई का प्रतिकार एवं अच्छाई की प्रशंसा किए बिना रह नहीं सकता, चाहे जो हो। अपने नैतिक कर्त्तव्य के समक्ष वह अपने हित–अनहित की भी परवाह नहीं करता। उसके पास लेखनी जैसा अजेय–अटूट शस्त्र है। बकलम दिनकर जी– 'कलम देश की बड़ी शक्ति है, भाव जगाने वाली। दिल ही नहीं दिमागों में भी आग लगाने वाली।' तो फिर डरना क्या, किससे और क्यों? समाज को बदलने के लिए किसी को तो आगे आना ही पड़ता है। युग–युग में ऐसे महान पुरुष होते रहे हैं, कभी विचारक के रूप में, कभी क्रांतिकारी के रूप में, कभी नेता के रूप में, कभी दार्शनिक के रूप में, कभी लेखक के रूप में, तो कभी किसी अवतार के रूप में। वे अपनी त्याग तपस्या से युग परिवर्तक व युग निर्माता होने का यश लाभ करते हैं।

कबीरदास जी ने कहा है कि 'साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप। जाके हिरदय सांच है, ताके हिरदय आप।' संस्कृत में भी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा गया है-- सत्यं वद, धर्म चर। सत्य एक ही होता है, उसका कोई विकल्प नहीं होता। सत्य ही शिव अर्थात कल्याणकारी होता है और जो कल्याणकारी होता है वही सच्चे अर्थो में सुन्दर होता है। साहित्य में हित्य का अर्थ कल्याण से ही है। साहित्य के पीछे सदैव कल्याण की भावना ही छिपी होती है। यह किसी को हानि पहुँचाने के लिए नहीं लिखा जाता। साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज की सच्ची तस्वीर साहित्य में ही परिलक्षित होती है। इससे वर्तमान को चेतना और भविष्य को प्रेरणा मिलती है।

कवि एवं लेखक श्री हितेश कुमार शर्मा की कृति "सत्यं शिवं सुन्दरम्' भी इसी भावना का परिणाम है। उन्होंने अपने इस ग्रंथ में वर्तमान के सच को आईना दिखाने का काम ही किया है। विद्वान लेखक इसके पहले भी गद्य और पद्य के माध्यम से और भी साहित्य रचनाएँ करते रहे हैं। उनकी पिछली रचनाओं की तरह ही यह रचना भी बड़ी प्रभावोत्पादक बन पड़ी है। उनकी रचनाओं के केन्द्र में 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' की भावना ही रही है।

एक बात को ध्यान में रख लें कि सत्य कड़वा होता है। यह भी जान लें कि 'कड़वी भेषज बिनु पिये, मिटे न तन को ताप।' शरीर को स्वस्थ बनाने की कड़वी दवाएं पीनी ही पड़ती हैं। जो कड़वाहट को ग्रहण करने एवं हजम करने की क्षमता रखता है वह स्वास्थ्य लाभ करता है। अच्छा स्वास्थ्य कल्याणकारी एवं सौन्दर्य का वाहक होता है।

सत्य खुरदरा एवं कठोर होता है। एक सुन्दर मूर्ति जिसे देखकर हम मुग्ध हो जाते हैं, मंदिर में स्थापित जिस मूर्ति को हम ईश्वर समझकर पूजते हैं, जिसके समक्ष श्रद्धा से नत हो जाते हैं, अपने लिए जिसके वरदान व आशीर्वाद की कामना करते हैं, मनौतियाँ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानते हैं, उस मूर्ति का सत्य है– एक कठोर व खुरदुरा पत्थर का टुकड़ा। वह तो कमाल है उस मूर्तिकार के हाथों का, जिसने छैनी–हथौड़ी उठाई और उस पत्थर को मूर्ति में बदल दिया। हीरे को चमकदार और मूल्यवान बनने से पहले अनेक काट–छाँट से गुजरना पड़ता है। संसार की कोई भी सुन्दर वस्तु पहले भददी ही रही होगी। गगनचुम्बी अट्टालिकाएँ जो देखने वालों को बरवश अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं, वे भी कठोर ईटों, सीमेंट व लोहा एवं राजमिस्त्री के हाथों का कमाल है।

तो बन्धुओ, विद्वान लेखक ने भी इस पुस्तक में जमाने की कड़वी सच्चाइयों को निर्भीक होकर हमारे सामने रखा है। इनमें ऐसा कुछ नहीं है जो आप नहीं जानते। ये वही सब कुछ है जो आप अक्सर समाचार पत्रों में पढ़ते हैं और चुपचाप रख देते हैं। किन्तु एक संवेदनशील व्यक्ति को तब तक चैन नहीं मिलता जब तक वह उसे कहें नहीं। मगर साहित्यकार को जो कुछ कहना होता है, उसे वह लेखनी के माध्यम से कागज के कैनवास पर उकेर देता है। हर घटना को रंग देता है और विचार हेतु पाठकों के लिए छोड़ देता है। अगर पाठक इसे सकारात्मक रूप से लें और रचनाकार द्वारा उठाई गई समस्याओं का अपनी क्षमताओं के अन्दर समाधान खोजने का प्रयास करे, तो इन्हीं सत्यों से शिव की साधना और सुन्दरम की प्राप्ति हो सकती है।

विद्वान लेखक ने इस ग्रंथ में एक ही शीर्षक 'सत्यं शिवं सुन्दम' के अन्तर्गत 30 आलेख प्रस्तुत किए हैं। जिनमें बढ़ते भ्रष्टाचार, घोटाले, हत्या, बलात्कार, चोरी, छिनताई, दल–बदल, राजनैतिक स्वार्थपरता, अपसंस्कृति, अश्लीलता, ब्लू फिल्में, मूल्यबोधहीनता, अलगाववाद, माओवाद, आतंकवाद आदि के प्रति अपनी चिन्ता व्यक्त की है। इसके अतिरिक्त समय–समय पर होने वाले

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आन्दोलन, उनकी विफलता व इसके कारण तथाकथित साधु के चरित्र पर प्रश्नचिह्न, क्रिकेट में फिक्सिंग, खिलाड़ियों के चुनाव में धाँधली, हिन्दुओं में एकता का अभाव, आरक्षण, नये प्रदेशों के निर्माण के पीछे की राजनीति, धारा 370 आदि पर अपने विचार व्यक्त करते हुए लेखक ने यथा आवश्यक अपने सुझाव भी दिये हैं और पाठकों को सोचने के लिए विवश भी किया है। इन आलेखों को पढ़कर कोई भी पाठक आकुल–व्याकुल हुए बिना नहीं रह सकता। विद्वान रचनाकार का लेखन बड़ा ही प्रभावोत्पादक है। उसकी लेखनी में दमखम हैं। बात कहने की तमीज व माद्दा है। अपनी शैली है।

बन्धुओं, गलतियाँ होती हैं तो उनके संशोधन भी हैं। बीमारियाँ हैं तो उनके इलाज भी हैं। यदि समय रहते हम सावधान–सतर्क हो जाएं तो सब कुछ संभव है। कर्मठ लोगों के शब्दकोश में असंभव नाम का शब्द ही नहीं होता। कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती। मुक्ति के रास्ते, विकास के पथ, हमारी बाट जोह रहे हैं। अगर हम उठें, जागें, तो क्या नहीं हो सकता। कवि के शब्दों में– 'अभी समय है अभी नहीं कुछ भी बिगड़ा है, देखो अभी सुयोग तुम्हारे पास खड़ा है।' बस ईमानदारी से संकल्प लेने की आवश्यकता है। सिद्धान्त की ओर नहीं प्रयोग की ओर जाने की जरूरत है। हमें कल्पना में नहीं, हकीकत में जीने का प्रयास करना चाहिए। देश और समाज की सच्चाइयों से रू–ब–रू होना चाहिए एवं उद्यमी होना चाहिए– 'उद्यम उद्यम उद्यम, बस उद्यम ही सबसे बढ़कर है।' 'उद्यमेन हि सिध्यन्ते कार्याणि न मनोरथै।' 'उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी देवेन देयं, इति कापुरुषा वदन्ति।'

बन्धुओं, देश में राजनीतिक परिवर्तन हुआ है, समय ने करवट बदली है। देश की जनता ने पुरानी सरकार को दरकिनार कर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया है। देशवासियों के हृदयों में आशा का संचार हुआ है। परिणाम आने लगे हैं, परन्तु अभी बहुत कुछ भविष्य के गर्भ में है...। अच्छे दिन आने का नारा चहुँ ओर गूँज रहा है। मगर फिर वही बात दुहराने की आवश्यकता है कि सत्य को अनदेखा करके शिवं एवं सुन्दर का सपना कभी साकार नहीं हो सकता। अतः 'सत्यं शिवं सुन्दरम' से गुज़रने की आवश्यकता है।

कुल मिलाकर हितेश कुमार शर्मा की यह पुस्तक 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' वर्तमान का दर्पण है। यह समय की आवश्यकता है, वक्त की आवाज है। पुस्तक पठनीय है, माननीय है। उनकी यह रचना जन–जन तक पहुँचे और अपने उद्देश्य में सफल रहे, ऐसी कामना है। इसके साथ ही हम उनके स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन और उज्ज्वलतम भविष्य की कामना करते हैं।

गुरु पूर्णिमा
संवत् 2071 वि.

कुँवर वीर सिंह मार्तण्ड
सम्पादक– साहित्य त्रिवेणी
कोलकाता–139

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

समसामयिक घटनाओं पर आधारित अत्र तत्र जनतंत्र तथा जय हो हिन्दुस्तान की प्रकाशित हो चुके हैं। बुद्धिजीवियों ने पढ़ा है और पढ़कर मुझे भी प्रोत्साहित किया है। सोच रहा था अब यह समसामयिक विषयों पर लिखना बन्द करूँ क्योंकि इसमें किसी ना किसी दल की भावना को ठेस पहुँचती है। फलस्वरूप शासन स्तर पर इन लेखों को पसन्द नहीं किया जाता और जनता के पसन्द करने से होता क्या है। लेकिन घटनाएँ रोज होती हैं दिल को छूती है, मन को कचोटती हैं और तब अनचाहे ही उस पर लिखने को कलम उठ जाती है। इसलिए सत्यम् शिवम् सुन्दरम् के नाम से समसामयिक लेख का संकलन आपके सामने लाना पड़ा, जिस दिन देश की परिस्थितियाँ सामान्य हो जाएँगी समस्याएँ कम हो जाएगी अथवा उनका समाधान निकलने लगेगा तब यह लेख भी बन्द हो जाएँगे। मुझे कोई पारिश्रमिक इन लेखों से प्राप्त नहीं होता है अखबार वाले भी इन्हें छापने में प्रसन्नता अनुभव नहीं करते। शासन स्तर से भी ऐसे लेखों पर पुरस्कार नहीं मिलता। किन्तु जब मन में पीड़ा होती है तो उसे व्यक्त करना भी आवश्यक होता है अन्यथा दम घुट जाएगा अथवा हृदयाघात हो जाएगा। अतः पीड़ा को कागज पर उकेर देता हूँ, अब जिसको जैसी लगे यह उस पर निर्भर करता है। भारतवर्ष एक विशाल देश है यहाँ संसाधनों की भी कमी नहीं है और समस्याओं की भी कमी नहीं है लेकिन कष्ट जब होता है जब समस्याएँ जानबूझकर पैदा की जाती है और उनका हल ढूँढने की बजाय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टाल–मटोल की जाती है। किसी भी एक समस्या को ले लीजिए, न्यायिक विधान ऐसा है कि चाहकर भी लम्बित मुकदमों का निस्तारण होने में कई–कई बरस लग जाते हैं। क्योंकि न्यायालयों में न्यायमूर्तिगण/न्यायाधीश के रिक्त पदों पर समय रहते नियुक्ति नहीं होती। क्यों स्थानांतरण से पूर्व ही अथवा साथ–साथ ही नियुक्ति का आदेश भी पारित नहीं होता। क्यों छेड़छाड़ की घटनाएँ नहीं रूक रही हैं। क्यों सामूहिक बलात्कार हो रहे हैं। स्पष्ट है कि कानूनी कार्यवाही समुचित नहीं है, मुजफ्फरनगर की जरा सी छेड़छाड़ की घटना ने कितने बड़े दंगे को जन्म दे दिया, दंगा भड़काने में किसका हाथ रहा, दंगाइयों के समर्थन में कौन था, निरपराध, निहत्थे लोगों पर हमला किसने किया। यह सभी समस्यांएँ कभी–कभी रात को सोने नहीं देती और अगली रात की नींद सुनिश्चित करने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि मन में उठ रहे उद्‌गार को कागज पर उडेल दिया जाए ताकि मन उसी में ना उलझा रहे लेकिन एक समस्या पर लिखने के बाद ऐसा नहीं लगता कि स्थिति शांत हो गई क्योंकि तुरन्त ही दूसरी समस्या सामने आ जाती है। गन्ना खेतों में सूख रहा है, मिल मालिक मिल चलाने को तैयार नहीं हैं। यदि गन्ना मंत्री, गन्ना विभाग, गन्ना समितियाँ लुप्त कर दी जाए। चीनी मंत्री, चीनी अधिकारी और चीनी सम्बन्धी विभाग समाप्त कर दिए जाए, किसान गन्ना बेचने को स्वतंत्र हो, मिल मालिक मिल चलाने को स्वतंत्र हो, और यह बिचौलिये हट जाए तो गन्ने और चीनी की समस्या समाप्त हो जाएगी लेकिन शासन समाप्त नहीं होने देगा और यही बात मन को कचोटती है, तभी सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की याद आती है। आज कुछ भी तो सुन्दर नहीं है। सत्य से हमने मुँह मोड़ रखा है, बस प्रतीक्षा है शिव के त्रिनेत्र की ताकि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामदेवरूपी यह राक्षस जो देश को लूट रहे हैं। जनविरोधी कार्य कर रहे हैं, जलकर भस्म हो जाएँ। पता नहीं क्या लिखना चाहता था और क्या लिख गया हूँ किन्तु यह अवश्य है कि इस पुस्तक में वर्णित समसामयिक घटनाएँ पाठक को सोचने के लिए विवश करेंगी और उसे उसके कर्त्तव्य की याद दिलाएँगी। यदि हम अधिकारों के स्थान पर अपने कर्त्तव्यों को समझ लें, यदि आज सभी मंत्रियों और नेताओं के अंगरक्षक हटा दिए जाए तो भ्रष्टाचार समाप्त हो सकता है। क्षमा कीजिए फिर बहक गया हूँ।

पुस्तक पढ़ने के बाद अपने विचार अवश्य लिखिएगा हो सकता है। कहीं मैं गलत लिख गया हूँ तो मुझे अवश्य ही दो शब्द लिखिएगा। मैंने अत्यन्त विनम्रतापूर्वक सुप्रसिद्ध लेखक एवं सम्पादक श्री कुँवर वीर सिंह मार्तण्ड कलकत्ता से इस पुस्तक का प्राक्कथन लिखने का अनुरोध किया है, जिसकी मुझे आशा है वह अवश्य ही स्वीकार करेंगे और तब यह पुस्तक बहुमूल्य हो जाएगी और लेख प्रासंगिक हो जाएंगे।

यदि किसी की भावना को मेरे किसी लेख से ठेस पहुँचती है तो मैं क्षमा प्रार्थी हूँ यदि समस्याओं के समाधान में पुस्तक से कोई सहयोग प्राप्त होता हो तो मुझे हर्ष होगा।

लेखों के संकलन और प्रकाशन में मेरी धर्मपत्नी उषा शर्मा का विशेष सहयोग रहा है। श्री राजन चौधरी प्रत्येक प्रकाशित लेख को पढ़कर मुझे प्रोत्साहित करना नहीं भूलते। डॉ. रामस्वरूप आर्य की सलाह मेरा मार्गदर्शन करती है। सभी के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। हरिओम कश्यप ने टाइप सैंटिंग व पुस्तक तैयार करने का कार्य बड़ी लगन व मेहनत से किया है, उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

दिनांक 29.11.2013 —हितेश कुमार शर्मा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–1

श्री केजरीवाल द्वारा बहुत से खुलासे किए गए घोटालों की ओर जनता का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया गया। बड़ी–बड़ी खोजबीन करके तथ्यों को प्रकाश में लाया गया किन्तु परिणाम क्या हुआ। शून्य। सभी घोटाले ठण्डे बस्ते में बाँध दिए गए। सभी घोटालों पर चुप्पी साध ली गई। कोई कार्यवाही नहीं हुई। वही पुराना तरीका भी नहीं अपनाया गया, जिसके अन्तर्गत आयोग बैठाया जाता था, जाँच कराई जाती थी, वह भी नहीं हुआ। सम्भवतः सरकार समझ गई थी, कि श्री केजरीवाल ने जो भी कुछ खुलासे किए हैं, या घोटाले उजागर किए हैं, उनको वह आगे नहीं बढ़ाएगे बल्कि स्वप्रसिद्धि पाने के लिए स्वनामधन्य बनने के लिए एक शोर होगा और तुरन्त ही श्री केजरीवाल राजनैतिक परिदृश्य पर दिखाई देंगे। वह श्री अन्ना की तरह से आन्दोलन को जारी नहीं रखेंगे बल्कि शीघ्र ही कोई पार्टी बनाकर उसकी घोषणा करेंगे और चुनाव लड़ने के लिए तैयारी करेंगे। सरकार ने श्री केजरीवाल के प्रति आरोप और खुलासे को बेबुनियाद और बचकाना कहकर टाल दिया। किसी भी मामले में कोई जाँच कराने की आवश्यकता नहीं समझी और कोई ज़नहित याचिका भी इन सन्दर्भो में गम्भीरतापूर्वक नहीं दायर की गई। श्री केजरीवाल को शाबाशी देना चाहूँगा कि उन्होंने ऐसे घोटाले सामने लाकर रखे, ऐसे–ऐसे तथ्य स्पष्ट किए, जो जनता को पता ही नहीं थे। एक विचार यह भी आता है कि क्या सारी जिम्मेदारी श्री केजरीवाल की ही है, जब श्री

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केजरीवाल ने कुछ तथ्य लाकर जनता के सामने खुलासे किये हैं, तब क्या जनता को इन सन्दर्भो में आगे बढ़कर कार्यवाही नहीं करनी चाहिए। क्या प्रत्येक घोटाले के सम्बन्ध में जनहित याचिकाएं नहीं दायर होनी चाहिए? क्या सरकार को इन घोटालों के सम्बन्ध में जाँच नहीं करानी चाहिए। यदि जो भी खुलासे श्री केजरीवाल ने किए हैं वह सभी सत्य हैं तो जनतंत्र में आवश्यक जाँच होनी चाहिए और स्थिति स्पष्ट होनी चाहिए कि श्री केजरीवाल सही हैं अथवा व्यक्ति विशेष के विरुद्ध जो आरोप लगाया गया है, वह गलत है। जनता को इन सभी बातों का संज्ञान लेना आवश्यक है। क्योंकि यदि जनता संज्ञान नहीं लेगी तो श्री केजरीवाल का राष्ट्रहित में किया गया सारा परिश्रम बेकार हो जाएगा। एक ही व्यक्ति पर सारी जिम्मेदारी डालना उचित नहीं है। जनता को इस सम्बन्ध में आगे बढ़ना होगा, श्री केजरीवाल के हाथ मजबूत करने होंगे और उन्हें शाबाशी देनी होगी। केवल अखबार में खुलासा पढ़कर चुप बैठ जाना एक प्रकार से कायरता होगी और कर्त्तव्य से विमुख होना सिद्ध होगा। यदि खुलासों के सन्दर्भ में कोई कार्यवाही नहीं हुई और काँग्रेस सरकार ने तथा गडकरी जी ने सभी खुलासों को बेबुनियाद कहकर टाल दिया तथा जनता और केजरीवाल चुप होकर बैठ गए तो यह देशहित में नहीं होगा। एक सोच यह भी हो सकता है कि श्री केजरीवाल राजनेताओ की धमकियों से डर गए हों अथवा अपने व्यक्तिगत हित में खुलासे करके उनको नई राजनीतिक पार्टी बनाकर भुनाना चाहते हों। कुछ भी हो लेकिन एक बात तो स्पष्ट है कि केजरीवाल ने उन घोटालों की ओर ध्यान दिलाया है, जिसकी ओर यदि केजरीवाल प्रयास न करते तो जनता को पता ही न चलता, इस बात के लिए वह प्रशंसा के अधिकारी हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल के अखबार में भी था आज के अखबार में भी कि श्री सचिन तेंदुलकर आठ रन बनाकर आउट हो गए। इससे पहले भी कई बार तीन रन बनाकर और शून्य पर आउट हो चुके हैं। एक विशेष बात यह भी रही है कि जब–जब श्री जी का शतक बना है तब तब देश हारा है। वैसे भी अब उनकी आयु लगभग 40 वर्ष हो चुकी है अब उनका टीम इण्डिया में चयन नहीं होना चाहिए। पता नहीं क्या कारण है कि हर बार उनका चयन कर लिया जाता है, इस सम्बन्ध में भी जाँच होनी चाहिए कि क्या चयन प्रक्रिया में फिक्सिंग तो नहीं चलता। यदि 40–40 वर्ष के लोगों को टीम इण्डिया में चयन किया जाता रहा तो युवाओं को अवसर प्राप्त नहीं होगा। जो सम्मान श्री तेंदुलकर को मिल चुका है, वह काफी है। अब वह भरोसेमन्द क्रिकेटर नहीं रहे। जब वह सौंवा शतक बनाने जा रहे थे तब किसी भी देश की टीम ने उन्हें आगे नहीं बढ़ने दिया। कई कोशिशों के बाद कई बार 10 से भी कम रन बनाकर आउट् होने पर वह शतक बना सके थे। इससे स्पष्ट है कि अब उनके स्थान पर युवाओं को अवसर दिया जाना चाहिए। चयन प्रक्रिया में कोई धाँधली न हो इसके लिए भी पूरी नजर रखनी चाहिए। जनता को भी ऐसे व्यक्ति का बायकाट कर देना चाहिए। यदि सचिन तेंदुलकर संन्यास लेने के लिए राजी नहीं है तो यह उनका व्यक्तिगत स्वार्थ हो सकता है और चयनकर्ता उनको वर्तमान में उनकी क्षमता को देखते हुए चयनित करते हैं। तो यह उनका व्यक्तिगत स्वार्थ हो सकता है। देशहित में कदापि यह नहीं है कि टीम इण्डिया में सचिन तेंदुलकर का चयन किया जाए। कहीं ऐसा तो नहीं है कि चयनकर्ता और चयनित व्यक्ति के स्वार्थ आपस में एक नई स्थिति पैदा कर रहे हों। यदि फिर भी चयनकर्ता नहीं मानते हैं तो जनता को आवाज

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठानी चाहिए तथा बहिष्कार करना चाहिए ऐसे चयन का जो देशहित में नहीं है। जब कपिल देव तथा गावस्कर रिटायर हो सकते हैं अथवा टीम इण्डिया में चयनित होने से रह सकते हैं तो सचिन ही क्यों नहीं। नवजोत सिद्धू का सचिन की तरफदारी करना और यह कहना कि उनके हाथ में बल्ला है, जिससे चूक हो सकती है, सुदर्शन चक्र नहीं है। व्यक्तिगत चाटुकारिता हो सकती है, किन्तु वास्तविकता ऐसी नहीं है, चूक एक या दो बार होती है, लगातार चूक नहीं होती। लगातार केवल अक्षमता ही प्रदर्शित होती है।

बड़े गर्व के साथ करीना कपूर ने यह खुलासा किया कि उन्होंने सैफ अली खान से विवाह केवल सम्बन्धों पर मुहर लगवाने के लिए किया है। वस्तुतः वह साढ़े पाँच वर्ष से सैफ अली खान के साथ लिव इन रिलेशनशिप में रह रही थी। बड़े हौसले की बात है यह स्वीकार करना कि अविवाहित होते हुए भी दो व्यक्ति पति–पत्नी की तरह से सम्बन्धों को बनाये रखे रहे हैं और हम उसे स्वीकार करें। क्या विवशता थी और क्या कारण था कि बिना विवाह किये साढ़े पाँच वर्ष तक दोनों पति–पत्नी की तरह से रहे। क्या भारतवर्ष में यही संस्कार हैं, क्या हिन्दू और मुस्लिम धर्म इस बात की अनुमति देते हैं कि बिना विवाह किये युवक और युवती पति–पत्नी की तरह से रहे। क्या सभ्यता और संस्कृति सब नष्ट हो चुकी है, जिसको पहले खुलेआम व्यभिचार कहा जाता था, उसे अब लिव इन रिलेशनशिप कहने लगे हैं। क्या नाम बदलने से सबकुछ बदल जाता है। क्या अविवाहित साथ–साथ रहना व्यभिचार की श्रेणी से बाहर हो गया है। शर्म आनी चाहिए हिन्दू और मुस्लिम धर्म के ठेकेदारों को जो ऐसे सम्बन्धों को अस्वीकार करने की बजाय आँख मूँदकर स्वीकार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर रहे हैं और ऐसे व्यक्तियों का सामाजिक बहिष्कार नहीं कर रहे, जो खुलेआम बिना विवाह किये पति–पत्नी की तरह से रह रहे हैं। फिल्म निर्माताओं को इन दोनों व्यक्तियों का बहिष्कार करना चाहिए। जिस बात से समाज पर बुरा असर पड़े उसे स्वीकार करना अथवा ग्राह्य करना समाज, सभ्यता और संस्कृति की दृष्टि से उचित नहीं है अन्यथा पशुओं में और मनुष्यों में कोई अन्तर नहीं रह जाएगा। व्यभिचार खुलेआम होने लगेगा और भारतीय दण्ड संहिता की इस संदर्भ में सभी धाराएँ निरर्थक हो जाएगी, जो लोग अविवाहित साथ–साथ रहकर पति–पत्नी जैसे सम्बन्धों का निर्वाह कर रहे हैं, उनका सामाजिक बहिष्कार किया जाना चाहिए और इस सन्दर्भ में वांछित कानून भी सरकार द्वारा बनाया जाना चाहिए तभी भारतीय संस्कृति और संस्कारों की रक्षा हो सकती है।

□□

R.P.S
097
ARY-S

Central Library
185407
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–2

कितना सत्य है और कितना शिव और कितना सुन्दर है, हमारे नेताओं का चरित्र, जिन्होंने घोर विरोध किया एफ॰डी॰आई॰ का और सरकार की खुलकर आलोचना की तथा किसी भी सूरत में एफ॰डी॰आई॰ को प्रभावी होने से रोकने का प्रण किया। अखबारों में रोज छपता था कि माननीय नेताजी और माननीय पूर्व मुख्यमंत्री एफ॰डी॰आई॰ के विरोध में हर सम्भव प्रयत्न कर रहे हैं। केन्द्र सरकार की आलोचना हो रही थी, एफ॰डी॰आई॰ के विरोध में पुतले जलाए जा रहे थे और बयान दिए जा रहे थे। बोलते–बोलते माननीयों के मुँह से झाग निकलने लगे थे। किन्तु संसद में जब वोटिंग का प्रश्न पैदा हुआ तो यही नेता लोग जो एफ॰डी॰आई॰ के घोर विरोधी थे, सदन से बर्हिगमन कर गए और सरकार को जीतने का पूरा अवसर प्रदान किया। जनता को लुभावने आश्वासन देकर, घोर विरोध के नारे लगवाए गए, प्रेस कांफ्रेस की गई और यह साबित करने का प्रयास किया गया, कि एफ॰डी॰आई॰ देशहित अथवा जनहित में नहीं है। किन्तु जब स्वहित का प्रश्न उत्पन्न हुआ तो माननीयों को यह लगा कि एफ॰डी॰आई॰ भले ही देशहित में ना हो लेकिन यदि इस बिन्दु पर सरकार गिर गई तो यह अवश्य ही हमारे हित में नहीं होगा। क्योंकि दोनों माननीय उत्तर प्रदेश में शासन कर चुके हैं और केन्द्र में प्रधानमंत्री बनने का सपना देख रहे हैं, जिसके लिए कॉंग्रेस के समर्थन की आवश्यकता पड़ सकती है, अतः कॉंग्रेस के द्वारा एफ॰डी॰आई॰ लगाने के प्रस्ताव का विरोध करना और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदन में सत्तासीन पार्टी के विरुद्ध वोटिंग करना उन्होंने उचित नहीं समझा और अपनी कुर्सी बचाने के लिए जनता के हितों की बलि चढ़ा दी। जनता जिए या मरे जनता को हानि हो या लाभ एफ॰डी॰आई॰ पुनः ईस्ट इण्डिया कम्पनी की तरह से देश को अपने पंजों में जकड़ लें लेकिन माननीयों का हित सर्वोपरि है। जनता पहचाने अपने इन नेताओं को और आगामी चुनाव में इस कथनी और करनी के अन्तर का फल चखाने के लिए तैयार रहे। जनता को समझ लेना चाहिए कि यह नेतागण जनहित अथवा देशहित की नहीं सोचते, साधारण व्यक्ति की तरह से यह भी स्वहित की सोचते हैं। इसीलिए जो एफ॰डी॰आई॰ को किसानों की दुश्मन, छोटे दुकानदारों को निगल जाने वाला मगरमच्छ कहकर सम्बोधित कर रहे थे उन्हें अब एफ॰डी॰आई॰ में कोई बुराई नजर नहीं आई। अगर जनता अब भी नहीं समझी तो कब समझेंगी। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, दलित, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई किसी के भी हित में एफ॰डी॰आई॰ नहीं है और यह माननीय इसी बात को रोज अपने बयानों में जनता के सामने रख रहे थे, अखबारों में छप रहे थे, भाषण दिए जा रहे थे लेकिन जब संसद में एफ॰डी॰आई॰ के पक्ष और विपक्ष में वोटिंग का प्रश्न आया तो यह सभी माननीय मैदान छोड़कर भाग गए, धन्य हैं ये नेतागण। जनता ने यदि इनको अब भी पहचानने में गलती की और इनकी कथनी और करनी के अन्तर को नहीं समझा तो हानि जनता को ही उठानी पड़ेगी, हानि देश की ही होगी अतः इन नेताओं का जो दोहरा मापदण्ड रखते हैं, जिनकी कथनी और करनी में अन्तर होता है, उनको भविष्य में संसद में जाने का अवसर नहीं दिया जाना चाहिए। जनता को अब सावधान हो जाना चाहिए आखिर कब तक इनकी लुभावनी बातों में आकर इनकी पिछलग्गू

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनी रहेगी। जनता को अपना राजनीतिक भाग्य स्वयं सुनिश्चित करना है। इससे अच्छा उदाहरण इनके दोहरे चरित्र का और कोई नहीं मिल सकता।

प्रमोशन के अवसर पर पदोन्नति में भी आरक्षण का लाभ दिये जाने को माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने उचित नहीं माना। इस पर नेताओं ने दलितों को भड़काना आरम्भ कर दिया और यह आवाज उठवाई गई कि प्रमोशन में भी आरक्षण का लाभ दिया जाना चाहिए। माननीय नेतागण केन्द्र सरकार पर यह दबाव बना रहे हैं कि प्रमोशन में भी आरक्षण का लाभ दिया जाए और अपने दलित संगठनों को लुभावने आश्वासन देकर लड़ने के लिए तैयार कर रहे हैं। माननीय सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय बड़ा सटीक और बड़ा उचित है। पुराने नेतागण भी आरक्षण के इस सीमा तक पक्षधर नहीं थे, जिस सीमा तक आरक्षण को खींचा जा रहा है। आरक्षण शिक्षा में हो, तथा प्रथम नियुक्ति में हो तब भी उचित है किन्तु एक बार आरक्षण का लाभ नियुक्ति में मिल जाने के बाद यदि पदोन्नति में भी आरक्षण का लाभ दिया जाता है तो यह उन योग्य व्यक्तियों के साथ अन्याय होगा, जो आरक्षण प्राप्त व्यक्ति से वरिष्ठ हैं तथा योग्यता में भी अधिक हैं, वरिष्ठ व्यक्ति के शीश पर कनिष्ठ व्यक्ति को बैठा देने से दोनों की ही हानि है। मैं देशहानि की बात नहीं कर रहा हूँ क्योंकि यह विषय तो अब गौण हो चुका है। देश की तो किसी को चिन्ता नहीं है। केवल कुर्सी की चिन्ता है और कुर्सी बचाने के लिए जनता को भड़काना, जनता की उचित–अनुचित मांगों का समर्थन करना नेताओं के चरित्र में आ गया है। वस्तुतः जब कनिष्ठ व्यक्ति को वरिष्ठ व्यक्ति से ऊपर बैठा दिया जाता है तो कनिष्ठ तो अनुभवहीन होने के कारण अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं कर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाता और वरिष्ठ कुण्ठाग्रस्त होकर अपने कार्य के प्रति उदासीन हो जाता है। लेकिन इससे नेताओं को कोई अन्तर नहीं पड़ता, अन्तर पड़ता है देश को, अन्तर पड़ता है जनता को। पदोन्नति में आरक्षण जब एक बार सर्वोच्च न्यायालय से उचित नहीं माना गया है तब पुनः उसके सम्बन्ध में आवाज उठाना अथवा जनता को भड़काना एक प्रकार से न्यायपालिका की अवमानना है और उन व्यक्तियों के साथ अन्याय है, जो अपनी योग्यता के कारण अनारक्षित होते हुए भी पद पर नियुक्त हुए हैं और अपनी योग्यता के आधार पर अनारक्षित होते हुए पदोन्नति प्राप्त करके उच्च पद पर आसीन हुए हैं। उनके ऊपर यदि तथाकथित आरक्षित व्यक्तियों को पदोन्नति देकर कनिष्ठ से वरिष्ठ बना दिया जाएगा और वरिष्ठ से भी वरिष्ठ बना दिया जाएगा तो देश का कोई लाभ होने वाला नहीं है। जनता को इस प्रकार की आवाज नहीं उठानी चाहिए और आरक्षित व्यक्ति को एक बार किसी पर नियुक्त होने के पश्चात अपनी योग्यता के बल पर आगे बढ़ने का अवसर उपलब्ध होना चाहिए। आरक्षण के बल पर कनिष्ठ से वरिष्ठ और वरिष्ठ से वरिष्ठतम पद पर 33 प्रतिशत अंक पाने वाले व्यक्ति की नियुक्ति 99 प्रतिशत अंक पाने वाले के प्रति अन्याय भी होगी और उसके अधिकारों पर कुठाराघात भी होगा। होना तो यह चाहिए कि अब आरक्षण को समाप्त कर दिया जाए क्योंकि पिछले 66 वर्ष से आरक्षण के पैरों पर चल रहे व्यक्ति कितनी उन्नति कर सके हैं और उनके आरक्षण से देश को कितना लाभ हुआ है, इसका मूल्यांकन करने के पश्चात ही उचित निर्णय लेना आवश्यक है। दलित नेतागण समाज को यह बताएँ कि आरक्षण के माध्यम से कितने दलित परिवारों को लाभ पहुँचा है और आरक्षण के आधीन नियुक्ति पाने वाले व्यक्ति

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कितने कर्मनिष्ठ और कर्त्तव्यपरायण है और अपने पटल का कार्य कितने सुचारू ढंग से चला रहे हैं। आरक्षण की नीति पर पुनर्विचार किया जाना आवश्यक है तथा नेताओं को तथाकथित दलित वर्ग को यह समझाना भी आवश्यक है कि वह अपनी योग्यता सिद्ध करें आरक्षण को अपना अधिकार ना माने।

फिर माँग उठी है पश्चिमी उत्तर प्रदेश में हाई कोर्ट बैंच स्थापना की। यह माँग इस प्रकार है जैसे कि हम नींव को मजबूत नहीं करना चाहते और भवन का निर्माण करना चाहते हैं। जैसे हम किसी जहरीले वृक्ष को जड़ से नहीं काटना चाहते, बल्कि टहनियाँ काट रहे हैं। मैंने पहले भी सुझाव दिया था और पुनः कह रहा हूँ पश्चिमी उत्तर प्रदेश के अधिवक्ताओं को, जनता को साथ लेकर, जन संगठनों को साथ लेकर, भारतीय किसान यूनियन को साथ लेकर पूरे उत्तर प्रदेश के बँटवारे की माँग करनी चाहिए, जिसका समर्थन उत्तर प्रदेश सरकार पहले कर चुकी है। उत्तर प्रदेश का बँटवारा आसान है बनिस्बत पश्चिमी उत्तर प्रदेश में हाई कोर्ट बैंच की स्थापना की मांग करना। उत्तर प्रदेश इतना बड़ा है कि इसका नियंत्रण सम्भव ही नहीं है। यही कारण है कि अन्य प्रान्तों के मुकाबले यहाँ आपराधिक घटनाएँ अधिक होती हैं, यहाँ मुकदमे अधिक लम्बित हैं, यहाँ साधनों की कमी है, सड़कें बेहाल हैं, यातायात की सुविधा पूर्णरूपेण प्राप्त नहीं है। दो हिस्सों में बँटने से उत्तर प्रदेश के दोनों हिस्सों का विकास तीव्र गति से होगा और जब उत्तर प्रदेश दो भागों में बँट जाएगा तो स्वतः दो हाईकोर्ट हो जाएँगी। उत्तर प्रदेश सरकार का यह प्रस्ताव केन्द्र सरकार से मनवाने के लिए हलके फुलके आयोजन से काम नहीं चलेगा, जितने समय से पश्चिमी उत्तर प्रदेश में हाईकोर्ट बेंच की माँग चल रही हैं। उतने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय से यदि सबने मिलकर उत्तर प्रदेश के बँटवारे के लिए जोर लगाया होता तो उत्तर प्रदेश का बँटवारा हो जाता तथा अपने आप ही दोनों हिस्सों में हाई कोर्ट की बैंच की स्थापना हो जाती। उत्तराखण्ड बन जाने से वहाँ की जनता खुशहाल है, वहाँ उन्नति तीव्र गति से हो रही है और स्वतः वहाँ पर उच्च न्यायालय की स्थापना हो गई है। भारतीय किसान यूनियन एक सशक्त संगठन है और अगर उसको साथ लेकर चला जाए तो उत्तर प्रदेश का बँटवारा सम्भव हो सकता है। अधिवक्तागण सुनिश्चित समझें कि केवल बँटवारे की स्थिति में ही हाईकोर्ट की एक और पीठ की स्थापना सम्भव हो सकती है अन्यथा इसी तरह की बयानबाजी होती रहेगी और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में खण्डपीठ की स्थापना नहीं होगी। केवल उत्तर प्रदेश के बँटवारे की स्थिति में ही हाईकोर्ट बैंच की स्थापना पश्चिमी उत्तर प्रदेश में हो सकती है। इस बिन्दु पर विचार, पुनर्विचार, गहन विचार आवश्यक है।

□□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–3

क्या कलयुग (वर्तमान) में सत्य के अर्थ बदल गये हैं, क्या अब शिव के स्थान पर शव की साधना होने लगी है और सुन्दरता का स्थान वासना ने ले लिया है। क्या कारण है कि अब सत्यम् शिवम् सुन्दरम् दिखाई ही नहीं देता। द्वापर में भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है–

यदा–यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः।
अभ्युथानम् धर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यहम।

गीता में इसका भावार्थ भी दिया गया है कि जब–जब धर्म की अवमानना होती है तब–तब धर्म की रक्षा के लिए मैं अवतरित होता हूँ। यदि यह सत्य है तो भगवान अब तक अवतरित क्यों नहीं हुए हैं। भगवान कृष्ण ने कंस का नाश किया क्योंकि वह धर्म के विपरीत आचरण कर रहा था, उसने अपने पिताश्री और अपने बहन–बहनोई को कारागार में डाल दिया था और अपनी बहन के 7 बच्चों की हत्या कर दी थी। आज केवल कारागार में डालने की बात नहीं है, जरा सी जमीन के झगड़े पर पुत्र अपने पिता को फावड़े से काट देता है अथवा गोली मार देता है, आज बहन–बहनोई को जेल में नहीं डाला जाता बल्कि ऑनर किलिंग के मामले में दोनों की हत्या कर दी जाती है। मासूम बच्चियों का अपहरण करके उनके साथ बलात्कार करके उनकी हत्या कर दी जाती है, बच्चों का अपहरण हो रहा है। शिशुपाल सरीखे दुष्ट आज भी हैं, बल्कि बहुत अधिक संख्या में हैं, जो रात–दिन अपने दुष्कर्मों के दुष्परिणामों के लिए भगवान को कोसते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौरवों–पाण्डवों की भाँति देश के बँटवारे ने भारत के सर पर भी कौरवों से अधिक दुष्ट शत्रु को बैठा दिया है, जो रात दिन आतंकियों को प्रशिक्षण देकर देश की शान्ति भंग करने में व्यस्त रहता है, दूसरा शत्रु बंग्लादेश यदा–कदा हमारी सीमा के अन्दर से हमारे सैनिकों को खींचकर ले जाता है और उनको अमानवीय यातना देकर मार देता है। केवल द्रौपदी के अपमान और चीरहरण के फलस्वरूप पाण्डवों के पक्ष में खड़े होकर भगवान ने कौरवों का संहार किया, ऐसा प्रसंग बबरूवाहन द्वारा महाभारत के युद्ध का हाल पूछने पर वर्णन किया गया। बबरूवाहन के अनुसार युद्ध में केवल भगवान कृष्ण ही सबका संहार कर रहे थे अन्य तो केवल निमित्त मात्र थे तो अब भगवान कृष्ण को उन स्त्रियों का आर्तनाद सुनाई क्यों नहीं दे रहा, जिनके अपहरण हो रहे हैं, जिनके शील भंग हो रहे हैं, जो कोठों पर बेची जा रही हैं। इससे ज्यादा धर्म की हानि और क्या होगी कि आतंकवादी मंदिरों पर हमला कर रहे हैं, जबरन लोगों का धर्म परिवर्तन कराया जा रहा है। धृतराष्ट्र की भाँति वर्तमान राजा कुर्सी मोह के कारण जनता से भेदभाव कर रहा है जनता के एक वर्ग का देश के संसाधनों पर पहला अधिकार बता रहा है, एक वर्ग को विशेष आरक्षण दिया जा रहा है। योग्यता और सज्जनता, देशभक्ति यह सब गौण हो चुके हैं। बाली की भाँति ऐसे कितने ही व्यक्ति हैं, जिन्होंने अपनी अनुज वधू को वासना का शिकार बनाया है। अखबार में छपा है कि ससुर ने अपनी विवधा पुत्रवधू से अनैतिक सम्बन्ध स्थापित कर लिये जिसके विरुद्ध उसकी पत्नी ने थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई। न्याय बिक रहा है। कार्यालयों में कर्मचारी के पदों पर रिक्तियाँ हैं किन्तु बेरोजगारी होते हुए भी नियुक्ति नहीं की जा रही है। धर्म की और कितनी हानि भगवान देखना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहते हैं, धर्म की और कितनी अवमानना भगवान के सामने आनी शेष है। आखिर वह कौन सी सीमा है, जिस सीमा पर जाकर भगवान की नजरों में धर्मस्य ग्लानिर्भवति सिद्ध होता है। यदि गीता का यह श्लोक सत्य है तो शिव का त्रिनेत्र क्यों नहीं खुल रहा, सज्जनों की रक्षा के लिए भगवान अवतरित क्यों नहीं हो रहे। देश में घोटालों की भरमार है। सुविधाशुल्क, न्यायशुल्क से अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। यदि अभी कुछ और देखना बाकी है और अभी भगवान को अवतरित होना आवश्यक प्रतीत नहीं होता तो दायित्व पूरी तरह से भगवान पर है ऐसा ना हो लोग गीता के इस श्लोक पर विश्वास करना ही छोड़ दें।

रामायण के अनुसार भी धर्म की हानि होने पर भगवान का अवतार आवश्यक माना गया है, तुलसीदास जी ने कहा है–

जब–जब होई धरम कै हानी। बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी।
करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी। सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी।
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा। हरहिं कृपानिधि राज्जन पीरा।

तुलसीदास जी की यह चौपाईयाँ निरर्थक हो जाएंगी यदि आज की स्थिति में भगवान धर्म की हानि का आंकलन नहीं कर पा रहे हैं। किस कदर असुर बढ़ चुके हैं, बाहर के आतंकवादी ही नहीं देश के अन्दर घुसपैठिये फैल गए हैं। जो भारतवासियों की सम्पत्तिं पर, स्त्रियों पर जबरन कब्जा कर रहे हैं। नेताओं को किस कदर अभिमान हो गया है कि घोटाला करते हैं, घोटाला उजागर होता है किन्तु स्पष्टीकरण देना नहीं चाहते, केवल घोटाले को बेबुनियाद बताकर उससे मुँह फेर लेते हैं। किस कदर बेशर्म हो गये हैं कि अभिमान जैसा शब्द भी शरमाने लगा है। पकड़े जाने पर भी सीनाजोरी करते हैं, जहाँ तक अनीति का

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न है कौन सा काम नीति के अनुसार हो रहा है, क्रिकेट में फिक्सिंग है, चयनकर्ता निजी स्वार्थ में उस व्यक्ति का बार–बार चयन कर रहे हैं, जिसकी क्षमता समाप्त हो चुकी है। पुल बनता है, सड़क बनती है और उद्घाटन के तुरन्त बाद टूट जाती है। केन्द्र सरकार से 100 रुपये जनता के लिए आवंटित किये जाते है, जो बिचौलिये खा जाते है, जनता तक केवल 1 रुपया पहुँचता है। गौवंश लगातार काटा जा रहा है। आज तक किसी गौवंश के हत्यारे को प्राणदण्ड नहीं दिया गया। ब्राह्मणों का अपमान आरक्षण के माध्यम से लगातार किया जा रहा है आरक्षित अयोग्य व्यक्ति को वरिष्ठता क्रम तोड़कर योग्य वरिष्ठ ब्राह्मण कर्मचारी से भी वरिष्ठ बना दिया जाता है। मंदिर तोड़े जा रहे हैं, साधु–सज्जनों का अपमान हो रहा है। रावण के द्वारा सीता माता का अपहरण करने के पाप के फलस्वरूप भगवान राम ने समस्त राक्षस कुल का नाश कर दिया था। क्या केवल सीता माता का अपहरण भगवान को दुखी करता है और जिन स्त्रियों का अपहरण, जिन कन्याओं का अपहरणं इस युग में हो रहा है, वह उनको दुखी करने के लिए काफी नहीं है। राक्षस के स्वर्ण मृग बनने पर भगवान राम ने उसको दण्डित किया था अब कितने स्वर्ण मृग समाज में घूम रहे हैं, जो सोने का लालच दिखाकर महिलाओं को ठगते हैं। कालेधन का निवेश स्वर्ण में करते हैं और स्वर्णाधिपति होने के पश्चात राजनीति में वह सबकुछ करते हैं, जो पहले कभी नहीं हुआ है। बच्चों को वितरित किये जा रहे भोजन में भी घोटाला होता है। सेना को दिये जानेवाले हथियारों में भी घोटाला होता है, मंदिर के पुजारियों की हत्या कर दी जाती है। मंदिर की मूर्तियों से स्वार्णाभूषण चोरी कर लिये जाते हैं, मंदिरों की जमीनों पर कब्जा कर लिया जाता है। इसके बाद भी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान शान्त हैं। हिरण्यकश्यप ने प्रह्लाद को मारने के लिए जैसे ही अपना अस्त्र उठाया भगवान नरसिंह रूप में प्रकट हुए और हिरण्यकश्यप का वध कर दिया। अब पिता स्वयं पुत्र का वध करा देता है। उसकी पत्नी को अपने घर में रख लेता है। पुत्री से अनैतिक सम्बन्ध स्थापित करता है। राजकोष से चोरी करता है, देश की सूचनाएँ शत्रु को बेचता है, दबंग सज्जन पुरुषों की सम्पत्ति पर कब्जा कर रहे हैं, महिलाओं का अपहरण कर रहे हैं, साधुओं के आश्रमों में व्यवसाय हो रहा है, आश्रमों में और भी कुछ हो रहा है, जो जगजाहिर है। फिर भी प्रभु अभी तक अप्रकट हैं। क्यों? आखिर वह कौन सी सीमा है, जहाँ पहुँचकर भगवान का अवतार आवश्यक हो जाता है।

रामधारी सिंह दिनकर ने कहा है–

> रामकथा में नहीं क्रौंच का दोषी केवल व्याध।
> जो तटस्थ हैं समय लिखेगा उनके भी अपराध।

यदि यह सत्य है, तो भगवान पर भी दोष जाता है, कि वह अभी तक तटस्थ बने हुए यह सब क्यों सहन कर रहे हैं, जब धृतराष्ट्र को पुत्र मोह में पाण्डवों के साथ पक्षपात करने का दण्ड मिल सकता है तो वर्तमान राजा को पक्षपात का दण्ड क्यों नहीं मिलना चाहिए और साथ ही उन सबको भी दण्डित क्यों नहीं किया जाना चाहिए जो तटस्थ बने हुए हैं। सड़क पर अपराध होता है, तो उसके पास से लोग गुजर जाते हैं, कोई उस पर आपत्ति प्रकट नहीं करता। कोई हादसा होता है, तो लोग अपने घरों की खिड़कियाँ बन्द कर लेते हैं ताकि उन्हें उस हादसे में गवाही न देनी पड़े। अपना अनैतिक काम कराने के लिए लगातार सुविधाशुल्क का प्रयोग हो रहा है, विषकन्याएँ तो नहीं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किन्तु कन्याओं का प्रयोग अपना कार्य साधने के लिए स्वार्थी लोग कर रहे हैं। मद्यपान के विरुद्ध सरकारी स्तर पर नारे भी लगाये जाते हैं और मद्य निषेध की रैलियाँ भी निकाली जाती है किन्तु मद्य के लिए दुकानों का आवण्टन भी किया जाता है मद्य निर्माण करने के लिए आसवनियों को लाइसेंस भी दिये जाते हैं। तम्बाकू खाना कैंसर को जन्म देता है। हर तम्बाकू के पैकेट पर और सिगरेट के पैकेट पर यह लिखा होता है लेकिन सिगरेट बनाने वाली कम्पनियों को बन्द नहीं किया जाता। तम्बाकू और गुटका बनाने पर प्रतिबन्ध नहीं लगाया जाता। इसी प्रकार नकली शराब बनाने की भट्टियाँ धड़ल्ले से चलती हैं, नकली शराब पीकर लोगों की मौतें होती हैं लेकिन आज तक इस पर प्रतिबन्ध नहीं लग सका। युवक बेरोजगार घूम रहे हैं और भले घरों के बच्चे जो उच्च शिक्षा प्राप्त हैं या तो होटलों में नौकरी कर रहे हैं या रिक्शा चला रहे हैं या मजदूरी कर रहे हैं और आरक्षण के नाम पर महिलाओं को पुलिस में भर्ती किया जा रहा है। कौन से युग में महिलाएँ सैनिक बनाई गई हैं आज तक स्पष्ट नहीं हुआ किन्तु वर्तमान युग में स्त्रियों को पुलिस में भर्ती किया जा रहा है और यह आशा की जाती है कि वह दुर्दान्त अपराधी को पकड़े। हर वह कार्य जो अनैतिक हो सकता है वह इस युग में हो रहा है और हमारे नेतागण हमारे तथाकथित राजनैतिक स्वामी केवल देख रहे हैं। केवल तटस्थ हैं। जनता जिसके मतदान के फलस्वरूप चयनित व्यक्ति मंत्री, विधायक या सांसद बनता है, वह जनता पर ही हुकूमत करने लगता है और नीचे से लेकर ऊपर तक सब अत्याचारों को देखते रहते हैं, कोई प्रतिवाद नहीं करते। सच्चरित्र कन्याओं के मुख पर तेजाब डाल दिया जाता है क्योंकि वह दुष्ट व्यक्ति की कुत्सित इच्छा को पूरा करने से मना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर देती है और जनसाधारण तटस्थ की भाँति उस तेजाब डालने वाले को भागते हुए देखती रहती है। दिन–दहाड़े सड़क पर गोली मार दी जाती है और गोली मारने वाला भरी भीड़ के बीच से भाग जाता है। पुलिस चौकी के सामने डकैती हो जाती है और पुलिस सोती रहती है। बड़े–बड़े नेताओं पर घोटालों के आरोप लगते हैं, बड़े–बड़े नेताओं के रिश्तेदारों पर घोटालों के आरोप लगते हैं किन्तु शासन और सत्ता तटस्थ होकर देखती रहती है। जाँच कराने को भी तैयार नहीं होती। ऐसा क्यों है। स्व॰ रामधारी सिंह दिनकर ने जो लिखा है, यदि वह सत्य है और सत्य होना है तो निश्चित मानिए देश की जनसंख्या आधी रह जाएगी। क्योंकि अपराधी के साथ–साथ जो तटस्थ हैं अपराध होते हुए देख रहे हैं, जो न्याय नहीं करना चाहते, जो अपराधी को बचाना चाहते हैं, वह सब भी सुदर्शन चक्र की जद में आ सकते हैं। देखना यह है कि रामायण और गीता का लिखा हुआ कब सत्य होता है। कब वो सीमा आती है, जिसके पश्चात् भगवान का अवतरित होना आवश्यक हो जाता है।

□□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–4

सच्चाई नाम है उसका कि जिसके पास कुव्वत है।
फक़त मनवाई जाती है, यह खुद मानी नहीं जाती।

और जब से पाकिस्तान बना है तब से वह यह सच्चाई मनवाने के लिए प्रयासरत है कि़ उसके पास ताकत है और वह हिन्दुस्तान को नुकसान पहुँचा सकता है। कभी किसी बहाने से, कभी किसी बहाने से सीमा रेखा का उल्लंघन करता रहता है और हमारे जवानों को हताहत करता रहता है। इस बार तो हद ही हो गई जब दो जवानों के साथ बर्बरतापूर्ण व्यवहार किया गया और उनमें से एक का सिर काटकर गायब कर दिया गया। इससे पहले भी पाकिस्तानी सेना ने कुमायूँ रेजीमेन्ट के दो सैनिकों के सिर काटकर गायब कर दिये थे और हम केवल मौखिक विरोध ही करते रहे हैं और वही इस बार भी किया हालाँकि वायुसेनाध्यक्ष तथा रक्षामंत्री ने कुछ तेज–तर्रार बात की लेकिन सलमान खुर्शीद साहब ने पाकिस्तान के सलमान बशीर साहब को बुलाकर विरोध प्रस्तुत कर दिया और यह भी कह दिया कि भारत इन्तकाम की कोई कार्यवाही नहीं करेगा। अब दोनों ठहरे भाई–भाई तो यह तो भाईयों के बीच का मसला हुआ इसलिए इन्तकाम की कार्यवाही को मना किया गया अगर बात देश की होती तो सलमान खुर्शीद साहब भी वही बयान देते जो वायुसेनाध्यक्ष ने दिया। वैसे हिन्दुस्तान अपनी कायरता के लिए सुप्रसिद्ध हो चुका है, एक बार पहले बंग्लादेश ने हमारे नौजवानों के साथ बर्बरतापूर्ण व्यवहार किया था और हमने केवल मौखिक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरोध पत्र ही प्रस्तुत किया था। बंग्लादेश और पाकिस्तान की फौजें इस प्रकार हमारी खिल्ली उड़ाती हैं कि दूर–दराज गाँव में बैठे आदमी का भी खून खौल उठता है। लेकिन दिल्ली में सम्भवतः पानी का प्रभाव है कि इसके पानी को पीकर जो भी संसद में बैठता है, वह केवल अपनी कुर्सी की बात करता है, देश की आन, बान, शान की बात नहीं करता। कितना भी अमानुषिक और बर्बरतापूर्ण व्यवहार हमारी सेना के साथ क्यों ना हो हम कभी हमलावर नहीं हुए हैं। अरे पाकिस्तान हमेशा हमले की पहल करता है इस बार अगर हम पहल कर दे तो क्या हर्ज है। हमारे देश के नेता कसम खाये कि फौज के बढ़ते कदम नहीं रोकेंगे। एक बार आर–पार की हो जाए तो कुछ दिनों को शान्ति हो जाएगी हालाँकि अटल बिहारी वाजपेयी भी आर–पार की बात करते रहे लेकिन आर–पार करने के बजाय बस लेकर पाकिस्तान पहुँच गये। आखिर हिन्दुस्तान पाकिस्तान से दोस्ती क्यों चाहता है जबकि पाकिस्तान खुलकर दुश्मनों जैसा व्यवहार करता है। हमेशा सीमा उल्लंघन करना, आतंकवादियों को घुसपैठ कराना, उनको अपने शिविर में ट्रेनिंग देना, हमारे जवान का सिर काटकर गायब कर देना शत्रुता की चरम सीमा है और हम दोस्ती की चरमसीमा पर खड़े होकर उसको हमेशा मौखिक विरोध ही भेजते हैं, कभी करोड़ों रुपये खर्च करके पल रही फौज का प्रयोग नहीं करते। हमें शर्म तो आती ही नहीं, हमें गालियाँ दे लो, हमसे मारपीट कर लो, हमें घोटालों में घसीट लो, हमारे साथ कुछ भी कर लो, लेकिन कुर्सी मत छीनो और इसी सिद्धान्त के अन्तर्गत हम पाकिस्तान के विरुद्ध कार्यवाही नहीं करना चाहते क्योंकि इससे हमारी तुष्टिकरण की नीति प्रभावित हो सकती है और मुस्लिम वोट हमसे छिटक सकता है जबकि हमारी सत्ता ही

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वोट के सहारे चल रही है। हमारे इस कायरतापूर्ण व्यवहार से पाकिस्तान के हौसले बुलन्द होते रहेंगे और हमारी फौज का मनोबल गिरता रहेगा और एक बार फिर इतिहास दोहराया जाएगा जब बहादुर शाह जफर के लाडलों के सिर काटकर थाली में रखकर उनको पेश किये गये थे। अगर हमने अपना कायरतापूर्ण व्यवहार नहीं छोड़ा तो फिर वही समय आ सकता है जब गुरुसिंहों के पुत्रों को दीवार में चिनवा दिया गया था। 2500 आतंकवादी घुसपैठ करने को तैयार हैं, बंग्लादेशी घुसपैठ लगातार जारी है और हम कबूतर की तरह बिल्ली को देखकर आँख बन्द करके बैठ गये हैं। अब जनता को और फौज को ही कुछ निर्णय लेने होंगे। आवश्यकता है देश में 10–20 भगत सिंह की, जो देशद्रोहियों के साथ–साथ पाकिस्तान के घर में जाकर अपने साहस का परिचय दे सकें।

दिल्ली में गैंगरेप हुआ। सारी दुनिया में गूँज उठी। बड़े–बड़े वक्तव्य आये, विरोधाभासी बयान भी हुए, कैंडेल मार्च भी निकले किन्तु गैंगरेप नहीं रूके। आज भी सामूहिक बलात्कार जारी हैं, वह कोई दिन नहीं होता जब अखबार में सामूहिक बलात्कार अथवा दुष्कर्म के बाद हत्या की खबर नहीं छपती। दुष्कर्म लगातार बढ़ रहे हैं और इसका कारण है कि दुष्कर्मी को अथवा बलात्कारी को वह सजा बहुत मामूली लगती है, जो उसे बलात्कार अथवा दुष्कर्म के विरुद्ध मिलती है। यदि बलात्कारी को और दुष्कर्मी को प्राणदण्ड की सजा दी जाए और फाँसी भी चौराहे पर दी जाए तो बलात्कार और दुष्कर्म रूक सकते हैं अन्यथा नहीं। कोई भी व्यक्ति किसी भी लड़की पर तेजाब डाल देता है और तेजाब से झुलसी हुई लड़की अगर बच जाती है तो जो कुरूपता का दंश वह जिन्दगी भर झेलती है, उसके बदले में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेजाब डालने वाले को कोई सजा नहीं मिलती। यदि पकड़ा जाता है तो कुछ दिनों बाद ही जमानत हो जाती है यही स्थिति बलात्कारी के केस में है जब बलात्कारी को और तेजाब डालने वाले को यह पता है कि येन–केन प्रकारेण साम, दाम, दण्ड, भेद का सहारा लेकर वह जमानत प्राप्त कर लेगा तो उसे ऐसी घटनाओं को अंजाम देने में कोई डर नहीं लगता। बलात्कार पीड़िता अथवा तेजाब से झुलसी युवती उम्र भर उस दंश को झेलती हैं, जो उन्हें आरोपी ने दिया है और आरोपी कभी–कभी तो हफ्ते दो हफ्ते बाद ही जमानत पर रिहा होकर बाहर आ जाता है और कभी सजा भी मिलती है तो बहुत थोड़ी। कतिपय मामलों में राजनैतिक हस्तक्षेप भी बलात्कारी और तेजाब डालने वाले अथवा दुष्कर्मी के पक्ष में होता है। पीड़िता को डराया धमकाया जाता है कि वह समझौता कर ले। उसके परिवार को डराया जाता है लेकिन शासन का कोई सहयोग पीड़िता को पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं होता, जिसके कारण बलात्कारियों के हौसले बढ़ते रहते हैं। साथ ही हमें इस बात पर ही विचार करना होगा कि लड़कियों को पढ़ाई के नाम पर 25 और 30 साल तक अविवाहित रखना और उन्हें ब्वॉयफ्रेंड बनाने का अवसर प्रदान करना उचित नहीं है। पहले 20 वर्ष की आयु में लड़कियों का विवाह हो जाता था अब माता–पिता को ही फुर्सत नहीं है कि वह लड़की के विवाह की चिन्ता करें और लड़की भी स्वच्छन्दता का आनन्द लेने के लिए विवाह को मना कर देती है और पढ़ाई की आड़ में ब्यायफ्रेंड के साथ घूमती है। लड़कियों को अपना आचरण बदलना चाहिए। माँ–बाप का भी कर्त्तव्य है कि लड़कियों पर प्रतिबन्ध लगायें। लड़कियों के वस्त्र शालीनतापूर्ण होने चाहिए और रात्रि 7 बजे के बाद किसी भी लड़की का घर से बाहर रहना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिबन्धित होना चाहिए। कुछ समय पूर्व गाजियाबाद में भी ऐसी घटना हुई थी, जिसमें कॉल सेन्टर से ब्यायफ्रेड के साथ लौटती हुई एक लड़की के साथ दुराचार हुआ था। लेकिन हम घटनाओं से सबक लेना भूल गये हैं। ब्वायफ्रैंड की परम्परा को रोकना होगा, लड़कियों को 7 बजे के बाद घर से निकलना प्रतिबन्धित करना होगा, उनके कपड़ों की शालीनता की ओर ध्यान देना होगा। युवतियों को आरक्षण नहीं सरंक्षण देना होगा तभी ऐसी घटनाएँ रूकेगी। रेलों में अकेले सफर करने वाली युवतियों के साथ भी दुर्व्यवहार हो रहा है। युवतियों को चाहिए कि वह अकेली सफर न करें। बहुत आवश्यक हो तो पति, भाई अथवा पिता के साथ सफर करें। साधारणतया अकेला सफर नहीं करना चाहिए।

रेलवे ने किराया बढ़ा दिया। मेरी दृष्टि से पूर्ण रूप से अनुचित नहीं है। सामान्य दर्जे तथा शयनयान का किराया नहीं बढ़ना चाहिए था वातानुकूलित कोच में किराया बढ़ा दिया जाना चाहिए था क्योंकि सामान्य दर्जे में गरीब लोग सफर करते हैं। जनता की, जनता के वास्ते तथा जनता द्वारा चुनी गयी सरकार को गरीब जनता के बारे में सोचना चाहिए। मालवाहक किराये में भी वृद्धि की जा सकती है। किराया बढ़ना इसलिए उचित है क्योंकि नई पटरियाँ बिछानी आवश्यक हैं, सौ साल पुराने पुलों पर रेलगाड़ियाँ दौड़ रही हैं, उनका भी विकल्प तलाश करना है, नये पुल बनने हैं, नये स्टेशन बनने है, इस सबके लिए रेवले को पैसे की आवश्यकता है और रेलवे के पास कोई ऐसा साधन नहीं है कि वह किराया बढ़ाए बगैर नई लाइनों का निर्माण कर सके, पुराने पुलों के स्थान पर नये पुल बना सके अथवा रेल लाइनों का रख–रखाव कर सके। वैसे जितनी लापरहवाही वर्तमान में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेलवे में है, इतनी और विभागों में नहीं है। कभी—कभी तो पूरी गाड़ी में कोई टिकट चैकर नहीं होता और सामान्य दर्जे में तो टिकट चैकर आता ही नहीं। शयनयान में यदि कोई टिकट चैकर होता है तो कुछ प्रतिशत बिना टिकट यात्रियों की रसीदे कटती हैं। स्टेशन पर भी अब उतनी सख्ती नहीं है जितनी सख्ती पहले थी, अब यात्री दिल्ली जैसे स्टेशन पर भी बगैर टिकट चैक कराये स्टेशन से बाहर आ जाता है। कहीं पढ़ा था कि रेलवे में कई लाख रिक्तियाँ हैं। क्यों नहीं भरी जा रही, क्या रिक्तियाँ भरने के लिए भी सुविधाशुल्क की आवश्यकता होती है या सम्बन्धित मंत्री महोदय को इसमें कोई रूचि नहीं है। यदि सख्ती से रेलवे में चैकिंग किया जाए तो प्रतिदिन करोड़ों रूपये की आय ईमानदारी से रेलवे को हो सकती है। अभी एक मामले में एक वातानुकूलित शयनयान के टिकट चैकर को पकड़ा गया। वह बिना टिकट यात्रियों को वातानुकूलित शयनयान में ले जाता था। सबूत के अभाव में छोड़ दिया क्योंकि यात्री भी अपना कर्त्तव्य नहीं निभाना चाहते, वह भी आगे नहीं आते। आवश्यकता है राष्ट्रीय चरित्र की, जब तक राष्ट्रीय चरित्र दृढ़ नहीं होगा, हम देश के बारे में नहीं सोचेंगे तब तक कुछ नहीं हो सकता। रेलों में चैकिंग, स्टेशनों पर सख्ती सभी कुछ आवश्यक है और यह उतना ही आवश्यक है, जितना की नई रेल लाइन बिछाना, नये पुल बनाना और नये स्टेशन बनाना आवश्यक है। आजादी के बाद से कितनी नई रेल लाइनें बिछायी गई, कितने नये पुल बने यदि इसकी गणना की जाए तो जो अँग्रेज बना गये थे उससे कमतर ही सिद्ध होगी। जबकि आजादी के बाद प्रत्येक दिशा में अच्छा कार्य होना चाहिए था। आज भी सौ साल पुराने पुलों पर रेलें दौड़ रही हैं, आज भी पटरियों का रखरखाव सुरक्षा की दृष्टि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से अच्छा नहीं है। रेलों में यात्रियों के साथ जो दुर्व्यवहार हो रहा है, उस पर भी अंकुश लगना आवश्यक है। महिला यात्रियों से टी.टी.ई. तक दुर्व्यवहार करने से बाज नहीं आते। दुर्व्यहारी पकड़े जाते हैं किन्तु येन–केन प्रकारेण साम, दाम, दण्ड, भेद के कारण तथा राजनैतिक हस्तक्षेप के कारण छूट जाते हैं क्योंकि गलती की सजा या तो मिलती नहीं अथवा यदि मिलती भी है तो बहुत मामूली, जिससे उनके हौसले बुलन्द होते हैं और फिर से अपनी हरकत को दोहराते हैं क्योंकि उनके हौसले बुलन्द होते हैं पटरियाँ काट दी जाती है, नट बोल्ट खोल लिये जाते हैं। रेलों में दुर्घटनाएँ होती हैं। इन सबका रोकना आवश्यक है, जिसके लिए हमें रेलवे पुलिस फोर्स में वृद्धि करनी चाहिए और प्रत्येक ट्रेन में कम से कम आठ रेलवे पुलिस फोर्स के जवान चलने चाहिए। यदि हम किराया बढ़ाते है तो हमें यात्रियों की सुरक्षा और सुविधाओं का भी ध्यान करना होगा।

□□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–5

सच को साबित करना बहुत टेढ़ी खीर है, जबकि झूठी गवाही देने के लिए बहुत से लोग मिल जाते हैं, नरेन्द्र मोदी गुजरात के विकास का एक सच है। यह सच सत्यम् शिवम् सुन्दरम् का रूप ले सकता है लेकिन भाजपा की अर्न्तकलह, भाजपा के प्रत्येक व्यक्ति का स्वयंभू/ब्रह्मास्मि चरित्र राह में रोढ़े उत्पन्न कर सकता है। वस्तुतः भाजपा में एकता की कमी है। भाजपा में नेता बड़बोले है और अपने–आपको अपने नेता के समक्ष उससे भी श्रेष्ठ सिद्ध करने के प्रयास में लगे रहते हैं। एक–दूसरे की बुराई करना, एक–दूसरे के चरित्र में खोट निकालना भाजपा का तरीका बन गया है। कभी एक सिन्हा कुछ कहते हैं तो दूसरे सिन्हा कुछ कहने लगते हैं। रामजेठमलानी अपना विचार अलग व्यक्त करते हैं तो आडवाणी जी कभी बेहद खामोश और कभी अत्यन्त मुखरित होकर बोलने लगते हैं। एकजुटता नहीं है। भाजपा को काँग्रेस से सीख लेनी चाहिए। केजरीवाल ने राबर्ट बढ़ेरा के विरुद्ध कुछ बातें कही तो इससे पहले कि राबर्ट वढेरा कुछ बोलते सभी काँग्रसियों ने एकजुट होकर केजरीवाल के वक्तव्य का विरोध करना शुरू कर दिया। राहुल गाँधी को प्रधानमंत्री बनाने के लिए वरिष्ठ काँग्रेसी नेता खुलेआम कह रहे हैं और कोई भी एक शब्द उसके विरोध में बोलने को तैयार नहीं है। यही स्थिति सलमान खुर्शीद के बारे में भी कही जा सकती है, उन पर लगे आरोपो का बचाव भी पूरी एकजुटता के साथ किया गया। काँग्रेसी ही नहीं अन्य घटक दल भी जो केन्द्र

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकार में काँग्रेस के साथ हैं, वह भी विरोध करना तो दूर अपना विचार भी प्रकट नहीं कर रहे हैं। ऐसी ही एकजुटता मुस्लिम समाज में भी है और यही कारण है कि आज काँग्रेस सबसे ताकतवर पार्टी बनी हुई है। एकजुटता के मामले में बसपा भी काँग्रेस के बराबर ही खड़ी है, वहाँ पर भी बसपा की सुप्रीम पावर जो एक बार कह देती है उसे कोई नहीं काटता। सभी एक स्वर में एक ही बात बोलते हैं। ऐसी ही एकजुटता यदि भाजपा में उत्पन्न हो जाए और भाज़पाई अपने ही व्यक्तियों का विरोध करना उसमें दोष निकालना बन्द कर दें तो भाजपा एक बड़ी शक्ति के रूप में देश में उभर सकती है और नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री बन सकते हैं और हमें फिर से लाल बहादुर शास्त्री की याद आ सकती है। नरेन्द्र मोदी में वह गुण है कि वह देश को विकास के रास्ते पर ले जाएँगे। तमाम विरोधाभासी स्थितियाँ समाप्त हो जाएगी और मैं तो यह मानता हूँ कि आतंकवाद पर भी नकेल लग सकती है। प्रश्न है भाजपाइयों का एक स्वर से नरेन्द्र मोदी के स्वर में बोलना। आपसी अर्न्तकलह को भूलकर अपनी श्रेष्ठता को अपनी जेब में रखकर केवल नरेन्द्र मोदी का समर्थन किया जाए, सपने में भी उसके विरोध में कुछ न बोला जाए तो नरेन्द्र मोदी भी जीत सकते हैं और भाजपा भी सत्ता में आ सकती है। गुजरात की स्थिति नरेन्द्र मोदी ने बहुत अच्छी कर दी है जब पिछले दिनो अलग–अलग प्रान्त में बलात्कार और गैंग रेप के मामलों की गणना हो रही थी तो गुजरात में यह स्थिति शून्य दर्शायी गई थी। कितने आश्चर्य की बात है कि जब प्रत्येक राज्य में बलात्कार हो रहे है तो गुजरात में ऐसी घटना नहीं हो रही। यह नरेन्द्र मोदी का कमाल है या गुजरात की जनता बेमिसाल है अथवा महात्मा गाँधी की जन्मभूमि होने के कारण यह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपलब्धि है। बहरहाल यदि भाजपाई विरोध नहीं करेंगे तो भाजपा का सत्ता में आना और नरेन्द्र मोदी का प्रधानमंत्री बनना सुनिश्चित हो सकता है अन्यथा आपसी लड़ाई में तीसरे व्यक्ति को लाभ होना सामान्य सी बात है। हमें इस विषय पर सोचना होगा और भाजपाईयों को स्वनियंत्रण लागू करना होगा अन्यथा यदि जयचन्द, मीरजाफर और आम्भिक जैसे नेता हावी हो गये तो खतरा ही खतरा है।

दिल्ली में गैंगरेप काण्ड एक राजनीतिक बहस का मुद्दा बन गया है। क्या ऐसा पहली बार हुआ है क्या इससे पहले गैंगरेप नहीं हुए, क्या इससे पहले गैंगरेप के बाद हत्या नहीं हुई। यदि पहले हुए गैंगरेपों के सन्दर्भ में केन्द्र अथवा राज्य सरकार सचेत हो जाती तो ये दुर्घटना नहीं हो सकती थी। दिल्ली बलात्कारों, अपहरण, लूट, हत्या सबकुछ झेल रही है किन्तु स्वार्थी नेताओं के हाथ में खेल रही है, जिनके अपने निजी स्वार्थ है और वह उन निजी स्वार्थो के कारण न तो बाइकर्स गैंग पर नियंत्रण कर सकते हैं, न ही अपहरण रोकने में दिलचस्पी रखते हैं और न ही गैंगरेप से उन्हें कोई अन्तर पड़ता है। अन्तर पड़ता है किसी बड़े नेता के कुत्ते के खो जाने का जब सारा प्रशासन लाइनहाजिर हो जाता है। यह तो इत्तेफाक की बात है कि इस गैंगरेप में भयानक क्रूरता दिखायी गई, यह केवल गैंगरेप ही नहीं था बल्कि एक क्रूर प्रयास था प्रत्येक दृष्टिकोण से पीड़ित महिला को हताहत करने का, क्षति पहुँचाने का और यही कारण रहा कि गैंगरेप के साथ–साथ उसको शारीरिक क्षति भी पहुँचाई गई। गैंगरेप के विरुद्ध पहले ही कठोर कानून क्यों नहीं बनाये गये। मैं बहुत समय से कह रहा हूँ कि बलात्कारी का अंग–भंग कर देना चाहिए। उम्र कैद के साथ–साथ उसे नपुंसक भी बना दिया

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाना चाहिए। ताकि वह जीवन भर पश्चाताप की आग में जलता रहे और दोबारा बलात्कार भी ना कर सके। इस गैंगरेप में एक विशेष बात यह हुई कि एक तथाकथित नाबालिग आरोपी ने सबसे क्रूरतम कार्य किया। अदालतें कहती हैं कि नाबालिग का मुकदमा बाल अदालत में चलना चाहिए। और इस कारण उसको उन आरोपियों की सूची से बाहर कर दिया गया, जिनको उम्रकैद या फाँसी की सजा हो सकती है। मैं माननीय सर्वोच्च न्यायालय से अनुरोध करता हूँ कि अपराध की भयंकरता और उसकी सजा का मापदण्ड उम्र नहीं बल्कि कर्म के अनुसार होना चाहिए यदि एक तथाकथित नाबालिग बालिग व्यक्ति से भी क्रूरतम अपराध करता है तो उसे उसी क्रूरता के साथ सजा भी दी जानी चाहिए, जिस क्रूरता से उसने अपराध किया है। इसमें बालिग और नाबालिग का भेद नहीं किया जाना चाहिए वर्ना वह तथाकथित नाबालिग बाल अदालत की थोड़ी सजा भुगत कर सुधरने के स्थान पर और भी क्रूरतम अपराधी बन सकता है। इस गैंगरेप के सन्दर्भ में राजनीति करने के स्थान पर मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाते हुए यदि चिन्तन किया जाए और कानून बनाये जाएँ तो ज्यादा अच्छा होगा, ऐसे मामले में राजनीति की रोटियाँ सेकना अमानवीय तो है ही अनैतिक भी है। गैंगरेप आज भी हो रहे हैं, रोज अखबार में खबर छपती है कि गैंगरेप किया गया और गैंगरेप के बाद हत्या भी कर दी जाती है। गैंगरेप इतनी आसानी से रूकने वाले नहीं हैं। जब तक आरोपियों को चौराहे पर फाँसी नहीं दी जाएगी। उनको उम्रकैद के साथ–साथ नपुंसक नहीं बनाया जाएगा। तब तक गैंगरेप होते रहेंगे और हत्याएँ होती रहेंगी। पिछले बहुत से वर्षो से गैंगरेप एक दैनिक समाचार बन गया था। यदि समय पर संज्ञान ले लिया जाता तो दिल्ली जैसी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्घटना नहीं हो सकती थी। अब भी समय है अगर हम भविष्य में गैंगरेप रोकना चाहते हैं तो हमें तद्नुसार आरोपी को फाँसी अथवा नपुंसकता के साथ उम्रकैद का प्राविधान करना होगा। अन्यथा गैंगरेप होते रहे हैं, हो रहे हैं और होते रहेंगे और हम राजनीति करते रहेंगे।

मुकदमों के मामले में हम कितने सच्चे हैं और कितने उदारवादी है और कितने पक्षपाती है, यह रात–दिन स्पष्ट होता रहता है। बिहार का चारा घोटाला अभी तक लम्बित पड़ा हुआ है क्योंकि कद्दावर नेता अपने खिलाफ मुकदमा चलने ही नहीं देते और वह मुकदमा ठण्डे बस्ते में बँध जाता है। कोई भी व्यक्ति जुर्म करने के बाद सजा पाना नहीं चाहता अतः जब तक यह सिद्ध न हो जाए कि वह इस जुर्म से साफ बच जाएगा तब तक वह अपने मुकदमे की कार्यवाही रूकवाये रखता है। सलमान खान ने सन 2002 में अपनी कार से कुछ व्यक्तियों को कुचल दिया था, जिसमें सम्भवतः एक व्यक्ति की मौत भी हो गई थी। वह मुकदमा अब सन 2013 में अदालत द्वारा संज्ञान में लिया गया है। यह मुकदमा 12 वर्ष तक कहाँ दबा रहा, किस कारण से इसका निस्तारण तत्समय नहीं किया गया और 12 वर्ष बाद जब सम्भवतः गवाहियाँ मिट गई होंगी और हो सकता है कि गवाह भी मर गये हों या बिक गये हो तब इस मुकदमे को उठाना आरोपी को लाभ पहुँचाने का आधार बन सकता है। इसी प्रकार काले हिरण की हत्या का मामला भी बहुत समय से चल रहा है इसमें भी मामले को दबाकर रखा गया, जिसका कारण एक ही हो सकता है कि गवाहं मर जाए, गवाही मिट जाए और मुकदमा कमजोर पड़ जाए। मुकदमों के मामले में अपराध का छोटा–बड़ा देखा जाना आवश्यक है किन्तु व्यक्ति के छोटे–बड़े के आधार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर मुकदमे को लम्बित रखना अथवा उसकी मर्जी के मुताबिक चलाना या उसको लाभ पहुँचाने वाले काम करना यह सर्वथा अनुचित है। समान व्यवहार आरोपियों से करना भारतीय संविधान का लक्ष्य है, कानून में कोई छोटा–बड़ा नहीं होता और न ही होना चाहिए, कानून में सबको समान मानना और देखना सर्वथा उचित है, इसी कारण से न्याय की देवी की आँख पर पट्टी बँधी रहने का प्रतीक भी सृजित किया गया है, जिसका तात्पर्य है कि न्याय की दृष्टि में सब समान है और किसी की सूरत या शक्ल, या पद अथवा धन का प्रभाव न्याय पर नहीं पड़ना चाहिए। क्योंकि न्याय की देवी के लिए यह सब देखना वर्जित है। अब जब सलमान खान के विरुद्ध मुकदमा आरम्भ हो ही गया है, तो इसका निस्तारण भी एक वर्ष में कर देना चाहिए। बार–बार मुकदमे में तारीख लेना, मुकदमे का लम्बा खीचना आरोपी को लाभ पहुँचाने के समान हो सकता है, जिसके लिए अदालत भी जिम्मेदार ठहरायी जानी चाहिए। माननीय सर्वोच्च न्यायालयों को ऐसी सभी मामलों में संज्ञान लेना चाहिए। वह चाहे नेताओं के हो या धन कुबेरों के, अभिनेताओं के अथवा जन साधारण के, जो कई–कई वर्ष से लम्बित पड़े हुए हैं और येन–केन–प्रकारेण या तो लम्बित करा रखे हैं, या फाइल दब गई है अथवा दबवा दी गई है, ऐसे मुकदमे शीघ्र अति शीघ्र निस्तारित होना जनहित में है, जिसके लिए आवश्यक है कि प्रत्येक न्यायालय व उच्च न्यायालय में न्यायाधीशों के रिक्त स्थान पर नियुक्तियाँ की जाए और तदुनुसार कर्मचारी भी नियुक्त किये जाए। लोकतंत्र की स्थापना के लिए, लोकतंत्र की मजबूती के लिए न्यायतंत्र निष्पक्ष और मजबूत होना आवश्यक है।

□□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–6

सच को साबित करना बहुत टेढ़ी खीर है लेकिन सत्य सर पर चढ़कर बोलता है और सत्य को दबाया नहीं जा सकता। सत्य यह है कि कुम्भ हादसा कोई दैवी घटना नहीं थी बल्कि मनुष्यों द्वारा कुम्भ के अवसर पर इलाहाबाद में अनियंत्रित भीड़ के कारण हुआ। कुम्भ के अवसर पर प्रत्येक व्यक्ति अपने घर से त्रिवेणी स्नान के लिए यह सोचकर चला कि आज स्नान करने से समस्त प्रकार के पुण्य प्राप्त होंगे और समाप्त प्रकार के पाप मिट जाएँगे और इसी विश्वास के आधार पर सवा अरब की आबादी में से दो करोड़ लोग इलाहाबाद पहुँच गये। धर्मशालाओं में रेलवे स्टेशन पर इतने लोगों के समाने का स्थान नहीं था। कुम्भ में गंगा किनारे भी भीड़ ही भीड़ हो गई। संगम के प्रति श्रद्धा और भक्ति भावना बहुत अच्छी है सर्वोपरि है किन्तु सत्य यह भी है कि भगवान कण–कण में विराजते हैं। गंगा जी में भी हैं और अपने घर के अन्दर लगे हुए नल के जल में भी हैं यदि भक्ति भाव से कुम्भ के अवसर पर अपने घर में ही स्नान किया जाए और भगवान का ध्यान करके दिन का आरम्भ किया जाए तो मेरा मानना है कि वही पुण्य प्राप्त होगा, जो संगम स्नान से प्राप्त होता है। एक सन्त ने कहा है कि मन चंगा तो कठौती में गंगा। मन में यदि भगवान के, गंगा के, गाय के, गायत्री के प्रति भक्तिभावना है तो घर में स्नान करने पर भी वही पुण्य प्राप्त होना अवश्यम्भावी है, जो कुम्भ में गंगा स्नान पर प्राप्त होता। एक विश्वास के आधार पर अनियंत्रित भीड़ का एक स्थान पर एकत्रित होना दुर्घटनाओं को न्यौता देने के समान है। इलाहाबाद

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और प्रयाग के स्टेशन पर एक–एक लाख आदमी यदि जमा हो जाएगा तो दुर्घटना हो सकती है। एक प्लेटफार्म से दूसरे प्लेटफार्म पर जाने में फलाईओवर बोझ से टूट सकता है। रेलिंग टूट सकती है। मैं यह मानता हूँ कि जो हादसा हुआ वह मानव कृत था किन्तु इससे भी बड़ा हादसा हो सकता था, जो भगवत्कृपा से नहीं हुआ। संगम स्नान पर अनियंत्रित भीड़ का एकत्र होना उचित नहीं है, हमें ऐसे विश्वासों को तोड़ना होगा। जिसके आधीन पति–पत्नी सिर पर सामान और गोद में बच्चे को उठाकर बिना डेरे तम्बू के गंगा किनारे स्नान के लिए भाग लेते हैं और सिर छुपाने के लिए इधर–उधर जगह ढूँढते हैं। कुम्भ में आग भी लगी किन्तु भारी नुकसान नहीं हुआ। फिर भी जो नुकसान हुआ उसकी भरपाई तो नहीं हो सकती किन्तु यह सब चेतावनी है उन घटनाओं के विरुद्ध जो अनियंत्रित भीड़ के कारण हो सकती है। पुरातन काल में जनसंख्या कम थी। साधु–महन्तों के अखाड़े भी कम थे और अखाड़ों में साधुओं की संख्या भी कम थी अतः कुम्भ जैसे पर्व पर इतनी अधिक भीड़ नहीं होती थी और दुर्घटनाएं भी कम होती थी। किन्तु अब परिस्थितियाँ बदल चुकी हैं। अतः हमें अपनी सोच बदलनी होगी। गंगा स्नान का जो पुण्य कुम्भ के अवसर पर है वही सामान्य दिनों में भी है। संगम स्नान कभी भी किया जा सकता है उसके लिए कुम्भ का होना आवश्यक नहीं है। यात्रा में असुविधा, प्रयाग/इलाहाबाद पहुँचकर असुविधा। स्नान की असुविधा। स्थान की असुविधा सभी सामने आती हैं। रेलवे के प्लेटफार्म को जनसंख्या के हिसाब से खीचकर बड़ा नहीं किया जा सकता और ना ही संगम के तट की लम्बाई, चौड़ाई घटाई/बढ़ाई जा सकती है। हमें स्वतः आत्मनियंत्रण करना होगा और ऐसे भीड़

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरे पर्वो से बचना होगा। वैसे भी यह सब मेले, यह सब पर्व साधु–संन्यासियों के लिए हैं, जो एक महीने तक गंगा किनारे रह सकते हैं किन्तु कामकाजी गृहस्थ किसी भी प्रकार से एक महीने तक बिना कुछ कार्य किये केवल कुम्भ स्नान के लिए अगर रहता है तो उसके लिए सुविधाजनक नहीं है। हमें पूरी तरह से इस बारे में विचार करना होगा और जनता को यह संदेश पहुँचाना होगा कि गंगा किनारे ऐसे भीड़ भरे आयोजन नहीं होने चाहिए। कुम्भ, महाकुम्भ, गंगा स्नान आदि पर्वो को दिनचर्या से निकालना होगा। गंगा स्नान कभी भी किया जा सकता है, संगम स्नान कभी भी किया जा सकता है पुण्य वही है जो कुम्भ में होता है। भीड़ से बचना अत्यन्त आवश्यक है फिर करोड़ों लोगों के गंगा किनारे जाकर रहने से गंगा प्रदूषित ही होती है। क्योंकि मल त्याग करना। लघुशंका करना, यह सब गंगा को गन्दा ही करते हैं, क्योंकि लघुशंका और दीर्घशंका के बाद व्यक्ति गंगाजल से ही हाथ धोता है और करोड़ों लोगों का मल त्याग करना वही रेत में पड़ा रहता है, और वर्षा आने पर वह सब गंगा जल में घुल जाता है। इसी कारण परीक्षण से यह पता चला है कि नदियों का पानी पीने योग्य नहीं रहा।

राजनीति में सत्य तो है ही नहीं। जब सत्य नहीं है तो शिव और सुन्दर की कल्पना करना ही व्यर्थ है। जब अफजल को फाँसी नहीं दी जा रही थी तो विपक्ष शोर मचा रहा था कि अफजल को फाँसी क्यों नहीं दी जा रही। और अब जब अफजल को फाँसी दे दी गई तो उस पर राजनीति हो रही है। शोक सभाएँ हो रही है, प्रश्नोत्तर हो रहे हैं। ऐसा क्यों है, क्या विपक्ष का और सत्ता पक्ष का काम आपस में एक–दूसरे का विरोध करना ही रह गया है। क्या विपक्ष सत्तापक्ष के अच्छे कार्य की सराहना नहीं कर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता। क्या सत्ता पक्ष कोई कदम उठाने से पहले विपक्ष की राय जानना जरूरी नहीं समझता। क्या देशहित में मिल–जुलकर कार्य नहीं हो सकता। यह राजनीति देशहित में नहीं है। सत्ता पक्ष और विपक्ष को देशहित के मुद्दों पर एक राय हो जाना चाहिए। अफजल को फाँसी देना सर्वथा उचित था। यदि हम यह विचार करें कि हानि–लाभ, जीवन–मरण, यश–अपयश विधि हाथ तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि अफजल की फाँसी का दिन विधाता के द्वारा निश्चित किया गया था और उसी निश्चित तिथि पर अफजल को फाँसी दी गई। यदि यह मनुष्य के हाथ में होता तो इतने साल से अफजल की दया याचिका दम्बित न रहती और सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के अनुसार उसको तभी फाँसी दी जा सकती थी। इसलिए सभी बिन्दुओं पर विचार करने के बाद निष्कर्ष यही निकलता है कि प्रत्येक कर्म का दिन, समय निश्चित है, उससे पूर्व कुछ नहीं हो सकता। अतः इस बिन्दु पर राज़नीति करने की आवश्यकता नहीं है कि फाँसी देर से क्यों दी गई, फाँसी पहले क्यों नहीं दी गई। जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री का इस सन्दर्भ में कथन उचित नहीं है। जम्मू कश्मीर भारत का हिस्सा है। यदि केन्द्र सरकार कोई निर्णय लेती है तो उस पर प्रान्तीय सरकारों को विरोध करने का कोई अवसर नहीं है। देशद्रोही को फाँसी की सजा देना सर्वथा उचित है। जिस व्यक्ति ने संसद पर हमला किया, जो संसद की गरिमा को नष्ट करना चाहता था, जो सांसदों को मारना अथवा बन्दी बनाना चाहता था उसको फाँसी दिया जाना न्यायिक प्रक्रिया का सम्मान करने के समान है, जनता की भावनाओं की सम्प्रभुता का सम्मान है। इस बिन्दु पर राजनीति नहीं होनी चाहिए।

मोबाइल का प्रयोग केवल बात कहने और बात सुनने तक ही

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीमित होना चाहिए। मोबाइल में फोटो खीचना, क्लिपिंग करना, एस.एम.एस. भेजना यह सब झगड़े की जड़ हैं। मोबाइल का मुख्य उद्देश्य तो समाप्त हो गया है अब यह अश्लील सी.डी. बनाने, क्लिपिंग करने तथा एस.एम.एस. बनाने का कार्य अधिक कर रहा है। मोबाइल से अश्लील सी.डी. बनाकर इंटरनेट पर भेजने की भी प्रक्रिया आरम्भ हो चुकी है। कई लड़कियों ने इससे डरकर आत्महत्या भी की है। मोबाइल यदि मोबाइल रहता और वही कार्य करता, जो टेलीफोन करता है, तो सर्वथा उचित था। किन्तु मोबाइल से ऐसे बहुत से काम लिये जा रहे हैं, जो दुर्गन्धयुक्त हैं, जो उचित नहीं हैं। मोबाइल से फोटो खीचना प्रतिबन्धित होना चाहिए बल्कि ऐसे मोबाइल जिनमें फोटो खीचना अथवा सीडी बनाना या इन्टरनेट का कार्य लेना जोड़ दिया गया है, वह सभी मोबाइल जब्त कर लिये जाने चाहिए और केवल सीधा–सादा यन्त्र जो टेलीफोन की जगह कार्य कर सके वही रहना चाहिए। भिन्न–भिन्न क्रियाओं में फँसे मोबाइल से समाज में दुर्गन्ध फैल रही है। मोबाइल से वह कार्य लिये जा रहे हैं, जो उचित नहीं हैं। एस.एम.एस. भेजना भी आवश्यक नहीं है। मोबाइल को मोबाइल ही रहने दिया जाए इसे जासूस की श्रेणी में ना रखा जाए और ना ही इससे पोस्टमैन का काम लिया जाए तभी उचित होगा आशा है सरकार इस ओर ध्यान देगी और ऐसे सभी मोबाइल जिसमें सुनने और बोलने की प्रक्रिया के अतिरिक्त अन्य आविष्कृत उपक्रम भी समाहित हैं, उन्हें जब्त करने का और अप्रचलित करने का आदेश देगी। इससे समाज में व्याप्त दुर्गन्ध और मोबाइल के दुरूपयोग पर रोक लगेगी।

□□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–7

हो सकता है किसी दिन सत्य बहुत कड़ुवा हो जाए लेकिन अगर सत्य को सींचा नहीं जाएगा, लिखा नहीं जाएगा तो उजागर नहीं होगा और उजागर नहीं होगा तो धुँधला पड़ जाएगा। और अगर धुँधला पड़ जाएगा तो व्यक्ति उससे परिचित नहीं होगा। वर्तमान राजनीति की स्थिति भी यही है, सत्य दूर–दूर तक दिखाई नहीं दे रहा। नेतागण सुरक्षा के घेरे में चलते हैं, जनता उनसे सत्य–असत्य के बारे में पूछ नहीं सकती। पुरातन काल के राजा–महाराजा भी जब नगर में निकलते थे तो इतने सुरक्षा घेरे में नहीं चलते थे। आज माननीय सर्वोच्च न्यायालय के अनुसार सुरक्षा घेरा एक प्रकार से स्टेटस सिम्बल बन गया है। इसका कोई कायदा–कानून नहीं है। यदि नेताजी को जान का खतरा है, जो राजनीति में आने से पहले नहीं था, तो नेताजी राजनीति में क्यों आए? क्या नेताजी के बगैर राजनीति चल नहीं पा रही थी अथवा कोई और कारण ऐसा था, जिसने नेताजी को राजनीति में आने के लिए विवश किया और जब नेताजी राजनीति में आ गये तो जनता से दूर हो गए, उस जनता से जिसके जनप्रतिनिधि बनकर विधायक अथवा सांसद चयनित हुए थे। जनता के किसी भी प्रश्न का उत्तर देने के लिए, किसी व्यक्ति के पत्र का उत्तर देने के लिए नेताजी के पास समय नहीं है। देश की जो दुर्दशा है, उसके बारे में विचार करने का नेताजी के पास समय नहीं है। किसी से मिलने के लिए नेताजी के पास समय नहीं है। नेताजी के पास समय केवल घोटाला करने के लिए। अपने पद और कुर्सी की रक्षा करने के लिए और केवल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना वोट बैंक पक्का करने के लिए है। अन्य किसी भी व्यक्ति के लिए, कार्य के लिए नेताजी के पास कोई समय नहीं है। निर्दोष व्यक्ति यदि नेताजी का जानने वाला नहीं है अथवा नेताजी के वोट बैंक को प्रभावित नहीं कर सकता तो भले ही वो किसी स्तर पर प्रताड़ित किया जा रहा हो नेताजी की सहानुभूति प्राप्त नहीं कर सकता। और एक अपराधी/दोषी व्यक्ति भले ही कत्ल करके आया हो, भले ही कोई भी दुष्कर्म किया हो उसे छुड़ाने के लिए नेताजी थाने तक पहुँच जाएँगे। थानेदार को फोन करेंगे और प्रत्येक दृष्टि से उसके समर्थन में खड़े हो जाएँगे। स्पष्ट है कि राजनीति में आने से पहले नेताजी देशभक्त भी थे, जनता के बीच के व्यक्ति भी थे प्रत्येक व्यक्ति के साथ उन्हें सहानुभूति थी किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं था। प्रत्येक के काम आने के लिए तत्पर रहते थे किन्तु नेता जी बनते ही देशभक्ति गायब हो गई, स्वार्थ हावी हो गया। जनता से भेदभाव होने लगा, काम के व्यक्ति के काम आने के सन्दर्भ में नेताजी की सोच और नेताजी का दृष्टिकोण बदल गया। ऐसा क्यों हुआ क्योंकि राजनीति में बड़ा भारी परिवर्तन हुआ है, पहले सम्भ्रान्त घरों के व्यक्ति लाल बहादुर शास्त्री, रफी अहमद किदवई, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, सरदार वल्लभभाई पटेल, सेठ गोविन्ददास जैसे व्यक्ति राजनीति में आते थे, जो जनप्रतिनिधि पहले थे, नेता बाद में थे। किन्तु इन लोगों चुनाव लड़ने के लिए धन की आवश्यकता पड़ती थी और धन इनके पास नहीं था। अतः यह धनाढ्य व्यक्तियों का सहारा लेते थे बल्कि यह कहा जाए कि धनाढ्य व्यक्ति स्वयं अच्छे कुलीन व्यक्ति की चुनाव में सहायता करने के लिए आगे आ जाते थे तो गलत नहीं होगा। बाद में सोच बदली और धनाढ्य व्यक्ति यह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोचने लगे कि जब हमारे सहयोग से चुनाव में नेताजी का चयन होता है तो उनके स्थान पर हम ही क्यों ना चुनाव लड़े और इस प्रकार श्री कृष्ण कुमार बिड़ला, बॉबी जिन्दल जैसे रईस लोग स्वयं चुनाव लड़ने लगे और अब धनाढ्य व्यक्तियों का राजनीति में वर्चस्व हो गया। यह धनाढ्य व्यक्ति भी कुछ दबंग लोगों के सहारे चुनाव लड़ते थे क्योंकि राजनीति धीरे–धीरे व्यवसाय बनती जा रही थी। इस प्रकार धनाढ्य व्यक्तियों ने कुछ शक्तिशाली लोगों को अपने साथ जोड़ा और चुनाव लड़ना आरम्भ किया। कुछ समय पश्चात इन शक्तिशाली व्यक्तियों ने यह सोचा कि नेता जी हमारे बगैर चुनाव नहीं लड़ सकते और हमारे दम पर ही वह जीतते हैं तो क्यों न हम स्वयं ही चुनाव लड़े। इस प्रकार उन तथाकथित दबंग/शक्तिशाली लोगों ने स्वयं चुनाव लड़ना आरम्भ कर दिया और जब यह शक्तिशाली व्यक्ति नेताजी बन गए तो परिस्थितियाँ बदल गई और वह सब होने लगा जो अब हो रहा है। इससे छुटकारा कैसे मिले? कुलीन व्यक्ति धनाढ्य नहीं हो सकता और वर्तमान में धन और जनबल के बगैर चुनाव नहीं लड़ा जा सकता। अतः चुनाव में वही लोग जीत कर पहुँच रहे हैं, जो धनिक भी हैं, दबंग भी हैं और जिनके पास अपनी निजी अंगरक्षकों की फौज है। यही कारण है कि आज स्थिति बदली हुई है। सड़कें टूट रही हैं, टूटने दो। घोटाले करना हमारा अधिकार है। हम जनप्रतिनिधि नहीं हैं, जनता के स्वामी हैं। कत्ल हो रहे हैं, अपहरण हो रहे हैं, हमसे क्या मतलब। जनता अपनी सुरक्षा अपने–आप करे। इस तरह से आज के नेताजी केवल स्वयंभू और स्वयंसिद्ध बने हुए हैं, जनता की उन्हें कोई परवाह नहीं है।

सच को हम नहीं नकार सकते। अमर उजाला के मुखपृष्ठ पर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो समाचार प्रकाशित हुए हैं। नंबर 1. गैंगरेप के बाद युवती ट्रेन के आगे कूदी। नंबर 2. किशोरी छात्रा से घर में घुसकर गैंगरेप। नंबर 3. पंचों की दंबगई में इन्साफ भटका गैंगरेप शिकार किशोरी को पंचायत की वजह से तीन दिन तक न्याय नहीं मिला। इसके अतिरिक्त भी गैंगरेप के और समाचार हो सकते हैं, जो अन्य अखबारों में प्रकाशित हुए होंगे। इसके अतिरिक्त लगभग 50 अपराध के और विवरण प्रति अखबार में मिल जाएँगे। कितने अखबार छपते हैं। उन सबमें ही यह खबर होती है, कितने हजार गैंगरेप देशभर में होते हैं। इसका अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता किन्तु यह सत्य है कि दिल्ली की भयावह गैंगरेप की घटना के बाद भी गैंगरेप जारी हैं। गैंगरेप पर कोई रोक नहीं लगी है, हमारी सोच नहीं बदली है। सरकार विवश है। समाज में विकृति उत्पन्न हो गई है। बेरोजगार युवक अपराध की ओर मुड़ जाते हैं। युवतियाँ अत्यधिक पढ़ाई करने के साथ–साथ निरंकुश और उच्छृंखल होती जा रही हैं। पहनावा भी उत्तेजक है, जो लोग युवतियों को तंग जीन्स और अपर में देखते हैं। उनके मस्तिष्क पर दुष्प्रभाव पड़ना अवश्यम्भावी है किन्तु माता–पिता अपनी पुत्रियों पर रोक लगाने में असमर्थ हैं। क्योंकि आज लड़की स्वतंत्र होने के भयानक दलदल में फँसती जा रही है, वह माँ–बाप की बात नहीं सुनती। बॉयफ्रेड की कल्पना करती है अपनी सुरक्षा के प्रति चिन्तित नहीं है, देर रात तक घर से बाहर रहना महानगरों की सभ्यता बन चुका है। यदि युवकों को रोजगार नहीं मिला और युवतियों को पढ़ाई के नाम पर 20 वर्ष के बाद भी अविवाहित रखा गया तो गैंगरेप नहीं रूकेंगे यह मेरा सुनिश्चित मत है, यदि लड़कियों ने अपना पहनावा नहीं बदला तो दुष्कर्मियों को बढ़ावा मिलता रहेगा। यदि लड़कियों ने सुनसान

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान पर बॉयफ्रेंड के साथ जाना बन्द नहीं किया। दिन ढलने से पहले घर आने की आदत नहीं डाली और पाश्चात्य संस्कृति के स्थान पर अपनी पुरानी संस्कृति को नहीं अपनाया तो सुनिश्चित है गैंगरेप होते रहेंगे। भले ही इसके लिए कितना भी सख्त कानून क्यों ना बन जाए। वैसे कानून का बनना भी आवश्यक है यदि गैंगरेप में आरोपी को नंपुसक बनाकर उम्रकैद की सजा दी जाए अथवा फाँसी की सजा दी जाए तब ही कुछ बचाव हो सकता है। अन्यथा यह सामाजिक कोढ़ फैलता जाएगा और हम किंकर्त्तव्यविमूढ़ देखते ही रहेंगे।

और एक सच। वीरप्पन प्रख्यात चन्दन का तस्कर मुठभेड़ में मारा गया, उसके साथी गिरफ्तार हुए और अब 23 वर्ष बाद उन्हें फाँसी की सजा सुनाई गई है। उन्होंने सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष सम्भवतः यह दलील रखी है कि जब उन्हें उम्रकैद से अधिक अवधि तक जेल में रखा जा चुका है तो अब फाँसी की सजा सुनाने का क्या औचित्य है। वीरप्पन के साथियों का मुकदमा 23 वर्ष तक क्यों लटका रहा? इसका फैसला दो–तीन साल के अन्दर क्यों नहीं हुआ। यह हमारी न्याय व्यवस्था का दर्पण है। यदि मुकदमा दो–तीन साल में तय हो गया होता तो अब तक वीरप्पन के साथियों को फाँसी लग गई होती। तथा जेल में जो उनके रख–रखाव पर खर्चा हुआ। वह भी ना होता। लेकिन मुकदमे को लम्बा खीचना एक आदत बन चुकी है। इस ओर कोई ध्यान नहीं दे रहा कि न्याय में देरी से न्याय की मौत हो जाती है। यदि न्यायालयों में निर्धारित न्यायाधीशों की संख्या पूरी कर दी जाए। कर्मचारियों की संख्या पूरी कर दी जाए और कानून बना दिया जाए कि जिस मुकदमे में तीन बार से अधिक तारीख ली गई तो तारीख लेने वाला अधिवक्ता अथवा वादी या

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका पैरोकार तथा तारीख देने वाला न्यायाधीश दोनों ही दोषी होंगे और दोनों के ही विरुद्ध कार्यवाही की जाएगी और इस बारे में सख्ती से कानून भी बनाया जाए और सख्ती से निबटा भी जाए तब ही हम ऐसे मामलों से बच सकते हैं, जिनमें मुकदमा निर्णय समय पर नहीं होता और व्यक्ति विशेष निर्णय से पहले ही उतने साल की सजा काट चुका होता है, जितनी उसे उस मुकदमे में होती। संविधान कहता है न्याय सस्ता व सुलभ होना चाहिए। कानूनविद कहते हैं कि न्याय में देरी अन्याय के समान है। सरकार और न्यायपालिका दोनों ही सक्षम है मुकदमों का त्वरित निर्णय कराने की व्यवस्था करने में किन्तु दोनों ही चुप हैं, मुकदमे चलते रहते हैं। आरोपी या तो जमानत पर बाहर आकर फिर उसी अपराध में लिप्त हो जाता है अथवा साक्ष्यों को नष्ट करने में लग जाता है या जमानत न मिलने की दशा में जेल में सड़ता रहता है। निर्दोष व्यक्ति के लिए मुकदमे का लम्बा खीचना सजा से कम नहीं है और दोषी व्यक्ति के लिए मुकदमें का लम्बा खीचना अपने–आपमें एक सजा है। प्रतिदिन पैरवी पर जाना, हर दूसरे–तीसरी बार गवाहों को ले जाना। सबूतों का इकट्ठा करना। सबूतों का खो जाना, सभी कुछ झेलना पड़ता है, जिस मुक़दमे का फैसला दो साल में हो जाना चाहिए, उसमें यदि 30 साल लगते हैं, तो इसके लिए जिम्मेदार अधिवक्ता, न्यायपालिका और सरकार तीनों हैं। तीनों को ही मिलकर यह प्रयास करना चाहिए कि मुकदमे का निपटारा शीघ्र हो जाए। किन्तु सम्भवतः कर्त्तव्य शब्द संविधान में परिभाषित नहीं हुआ है अन्यथा अधिवक्ताओं का कर्त्तव्य है कि जिसने उसको अभिभाषक नियुक्त किया है, उसकी निष्ठा से पैरवी करें। तथा न्यायहित में मुकदमे में अकारण ही तारीख ना लें। विपक्षी से हमसाज होकर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने वादी को हानि न पहुँचाए। अदालतों को सख्त होना चाहिए कि वह मुकदमें को बार–बार स्थगित न करें। तथा जो भी पक्ष जान बूझकर तारीख लेने का प्रयास करे उस पर भारी आर्थिक दण्ड आरोपित करें। लोकतंत्र में न्याय तंत्र की रक्षा आवश्यक है यदि न्याय तंत्र उपेक्षित है तो समाज में अन्याय बढ़ जाएगा इसलिए आवश्यक है कि संविधान में दी गई परिभाषा के अनुसार न्याय सस्ता, सुलभ और शीघ्र प्राप्त होना चाहिए।

□□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–8

भारतवर्ष में प्रतिदिन नये घोटाले का पता चलना उतना ही सत्य है जितना प्रतिदिन सूरज का निकलना। ऐसे बहुत से कम दिन बीतते हैं, जब किसी नये घोटाले का पता न चले। छोटे–मोटे घोटाले तो होते ही रहते हैं। किन्तु बड़े–बड़े घोटाले जो सारे देश की जनता को झकझोर देते हैं, वो भी यदाकदा बहुतायत से सामने आते हैं। वर्तमान में नया घोटाला हैलीकाप्टर की खरीद में चल रहा है। इस नये घोटाले को लेकर पक्ष और विपक्ष इतने सक्रिय है कि पुराने सभी घोटाले ठण्डे बस्ते में बँध गये हैं। टू–जी स्पैक्ट्रम घोटाला, हाऊसिंग सोसायटी घोटाला, राष्ट्रमण्डलीय खेल घोटाला, कोयला घोटाला, मंत्री जी से संबंधित विकलांग सहायता घोटाला तथा पूर्ति सप्लाई कम्पनी घोटाला ऐसे अनगिनत घोटाले हैं, जो सामने आ रहे हैं। व्यक्तिगत घोटाले तो हैं ही, जो सी0बी0आई0 रिपोर्ट या लोकायुक्त द्वारा देखे जाते हैं और उनमें यदाकदा कार्यवाही भी होती है। विचित्र बात यह है कि नया घोटाला सामने आते ही पुराने सभी घोटाले स्मृति पटल से ऐसे हट जाते हैं, जैसे प्रातःकाल से छाया कोहरा दोपहर 12 बजे के बाद साफ हो जाता है। कार्यवाही इतनी धीमी गति से चलती है कि अन्तिम निर्णय होने तक घोटाला ही अस्तित्वहीन हो जाता है। यदि समस्त घोटालों के आँकड़ों को जोड़ा जाए तो भारतवर्ष की जनता के प्रत्येक व्यक्ति के हिस्से में एक लाख रुपये तो आ ही सकते हैं। आखिर घोटालों से एकत्रित किया हुआ धन किस काम आ रहा है, किस काम आता है। केवल स्विस बैंक में जाकर जमा हो जाता है या सोने की छड़ों के रूप में अथवा सम्पत्ति

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खरीदकर डालने के काम आता है। इसका कोई उपयोग या उपभोग घोटाला करने वाला नहीं कर पाता हाँ उसकी सन्तान अवश्य ही उच्छृखंल हो जाती है। बड़े–बड़े घोटालों को देखकर अधिकारियों और कर्मचारियों की भी जीभ लपलपाने लगती है। एक चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के पास जब कई सौ करोड़ की सम्पत्ति के होने का पता चलता है तो कोई विशेष आश्चर्य नहीं होता, क्योंकि जब हजारों और लाखों करोड़ के घोटाले हो रहे हैं तब कई सौ करोड़ का घोटाला क्या अर्थ रखता है। यदि देखा जाए तो समूचा भारतवर्ष घोटालों के नाम से जाना जाने लगा है। हर महीने कम से कम तीन या चार बड़े घोटालों का पता चलना अवश्यम्भावी हो गया है और हम कुछ नहीं कर पा रहे हैं। क्योंकि घोटाले राजनितिज्ञों द्वारा किये जा रहे हैं, जिनके सम्बन्ध में केवल जाँच किया जाना ही काफी मान लिया जाता है और जाँच भी इतनी धीमी गति से चलती है कि वह अन्त तक पहुँचते–पहुँचते गतिहीन हो जाती है। भाजपा अध्यक्ष के विरुद्ध आरोप लगा, उन्होंने त्याग पत्र दे दिया और भाजपा के नेताओं ने ही अपने अध्यक्ष की आलोचना आरम्भ कर दी। काँग्रेस के एक मंत्री जी पर आरोप लगा तो समस्त काँग्रेसी एकजुट होकर उनके बचाव में उतर आए। घोटालो में पता चलने पर पारदर्शिता होनी चाहिए। जनता को पता चलना चाहिए कि घोटालों पर क्या निर्णय हुआ। घोटाला निस्तारण हेतु एक अलग उच्च स्तरीय समिति निष्पक्ष, ईमानदार और न्यायप्रिय लोगों की बननी चाहिए और ऐसे लोगों का चयन देश स्तर पर होना चाहिए। केवल दिल्ली में ही रहने वाले लोग सर्वाधिक न्यायप्रिय, निष्पक्ष या ईमानदार नहीं होते। देश के अन्य हिस्सों में रहने वाले लोग भी उतने ही ईमानदार, न्यायप्रिय या निष्पक्ष है, जितने दिल्ली के हो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकते हैं। बल्कि यदि देखा जाए तो दिल्ली पहुँचकर आदमी ज्यादा घोटाला करने लगता है बनिस्पत जब तक वह दिल्ली नहीं पहुँचता।

भारतवर्ष में विस्फोटो की संख्या और उनकी पुनरावृत्ति लगातार बढ़ती जा रही है। कभी काश्मीर में विस्फोट होता है, कभी जयपुर में होता है, कभी अहमदाबाद में होता है, कभी पंजाब में होता है और देश की राजधानी दिल्ली में होता है। हाल ही में हैदराबाद में विस्फोट हुआ है। विस्फोट करने वाले सुनिश्चित लोग हैं तथा पूर्णतया इस कार्य में सुशिक्षित भी हैं। विस्फोट करते हैं, पहले से अनुमान होता है कि विस्फोट होगा। किन्तु हम रोक नहीं पाते। क्योंकि हम सख्ती से उन लोगों के विरुद्ध जाँच, पूछताछ या कार्यवाही नहीं कर सकते, जिन पर हमें विस्फोट का शक होता है। हमारे पास पुलिस बल भी कम है और जो है वो जैसा है वह जनता जानती है। आखिर विस्फोट कैसे रूके? निरीह जनता का इन विस्फोटो से बचाव कैसे हो। झगड़ा तो जनता का जनता से नहीं है, बल्कि सत्ता का सत्ता से है और आश्चर्य की बात देखिये विस्फोट में सत्ता पर आँच नहीं आती। बल्कि निरीह जनता मारी जाती है। बाद में स्कैच बनाये जाते हैं। संदिग्ध व्यक्तियों को पकड़ा जाता है, पूछताछ होती है लेकिन कुछ हाथ नहीं लगता, जो संगठन प्रतिबन्धित हैं उनकी हमें जानकारी है, लेकिन हम उनके सदस्यों को छेड़ नहीं सकते। उनसे पूछताछ नहीं कर सकते। संदेह होने पर गिरफ्तारी भी कभी–कभी नहीं होती और यह सभी प्रतिबन्धित संगठन सक्रिय हैं। हमें मालूम है कि विस्फोटक सामग्री साइकिल पर रखकर लाई जाती है, क्योंकि साइकिल पर कोई नम्बर नहीं होता। अतः उसके स्वामित्व की पहचान नहीं हो सकती। किन्तु हम कितनी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साइकिलों को चैक कर सकते हैं। ऐसे कितने पुलिसमैंन और जाँच एजेन्सियाँ हमारे पास है, कि दिन भर साइकिल को ही चैक करते रहे। यदि साइकिल सवारों को चैक करना आरम्भ कर दिया तो विस्फोटक गधे पर लादकर भी लाये जा सकते हैं, कुत्ते के गले में बाँधकर भी भेजे जा सकते हैं। प्रश्न यह है कि यह विस्फोटक भेजने वाले, या विस्फोट करने वाले कैसे पहचाने जाए और किस प्रकार इनके विरुद्ध कार्यवाही की जाए। यदि पुरातनकाल की सजा को देखते हुए विस्फोट करने वालों को चौराहे पर फाँसी दे दी जाए अथवा उनके दोनों हाथ काट दिए जाए या पत्थरों से मार दिया जाए तब सम्भवतः एक बार को तो जनता भड़केगी, एक बार तो विस्फोट करने वालों के हिमायती हिंसात्मक होंगे, लेकिन भविष्य सुधर जाएगा। हमारी लचर नीति, हमारी केवल निन्दा प्रस्ताव पास करने क़ी नीति विस्फोट नहीं रोक सकती। निन्दा नहीं विस्फोट करने वाले के गले में फाँसी का फन्दा होना चाहिए ताकि अन्य लोगों को सबक मिले। केवल मात्र मौखिक निन्दा करने से काम सधने वाला नहीं है। हमें सख्त कदम उठाना होगा। सख्त शब्द का प्रयोग नहीं सख्त कार्यवाही का प्रयोग होना चाहिए। तभी निरीह जनता बच सकती है, तभी रेलों में, बसों में होने वाले विस्फोट रोके जा सकते हैं। यह उक्ति सर्वथा सत्य है कि शठे शाठयम् समाचरेत। यदि हम दुष्ट के साथ वैसा ही बर्ताव नहीं करेंगे जैसी दुष्टता उसने की है तब हम दुष्टता को खत्म नहीं कर सकते। दुष्टता को नहीं रोक सकते। विस्फोट करने वालों को जेल में रखकर उनकी खातिरदारी करना राजधर्म नहीं माना जा सकता। यह एक प्रकार से प्रजा के साथ अन्याय है कि उसको सताने वाला जेल में बैठकर डबल रोटी मक्खन का नाश्ता करता है, मनपसन्द खाना खाता है और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आराम के बिस्तर पर सोता है, जिस व्यक्ति ने जनता को काँटे दिए हैं, जख्म दिए हैं और उसको भी जख्म दिए जाने चाहिए, उसकी भी रातें कांटों पर सोने के समान होनी चाहिए।

देश में किसी भी बात पर आन्दोलन करना और आन्दोलन भी हिंसात्मक और हिंसा में भी आगजनी करना आम बात हो गई है। दंगाई जानबूझकर सरकारी सम्पत्ति को आग लगाते हैं तथा सरकारी वाहन फूंकते हैं और देश में अशांति फैलाते हैं। हड़ताल होती है और हड़ताल में केवल मात्र हड़तालियों द्वारा तोड़–फोड़ और आगजनी की जाती है। सरकार वोट की राजनीति के अन्तर्गत दंगाईयों को कुछ नहीं कहती बल्कि पुलिस से भी यह आशा करती है कि वह दंगाईयों से भाईचारें का व्यवहार करें जब हड़तालिये सम्पत्ति फूंक रहे हों अथवा सरकारी वाहनों में आग लगा रहे हों अथवा प्राइवेट गाड़ियों में तोड़फोड़ कर रहे हो तो चुपचाप देखती रहें। यही कारण है कि हड़ताल और आन्दोलन के दौरान दंगा करने वालों के हौसले बुलन्द रहते है और वह जान बूझकर बार–बार वही हरकत दोहराते हैं। सरकार भी जायज और नाजायज बात को सुनने के लिए तैयार नहीं होती। क्योंकि इसमें सरकार की नाक कटती है अगर सरकार जनता की बात मान ले तो उसकी नाक कटने का प्रश्न उत्पन्न हो जाता है। कभी–कभी सत्ता पक्ष को यह लगता है कि यह माँग या यह आन्दोलन विपक्ष द्वारा चलाया जा रहा है तो वह उसे और भी नहीं मानती। यदि आरम्भ में ही जायज बात को स्वीकार कर लिया जाए भले ही वह विपक्ष की हो, भले ही वह जनता की हो तो आन्दोलन, हड़ताल, आगजनी रूक सकती है। तेलंगाना राज्य की स्थापना के लिए आन्दोलन चल रहा है, उत्तर प्रदेश में हाईकोर्ट बैंच की पश्चिम में स्थापना के लिए आन्दोलन जारी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है लेकिन सरकार सुनने को तैयार नहीं। उत्तर प्रदेश के विभाजन के लिए उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री ने लिख दिया फिर भी सरकार सुनने को तैयार नहीं क्योंकि राजनीतिक पार्टियों को एकदूसरे का विरोध करने की आदत पड़ गई है, सही बात को भी कोई सुनना नहीं चाहता, केवल विरोध की राजनीति हावी है। आगजनी में जो सरकारी सम्पत्ति फुंकती है, उसका भार जनता पर पड़ता है। उसका नुकसान देश के विकास को झेलना पड़ता है, इसलिए आगजनी करने वालो को देखते ही गोली मारने के आदेश होने चाहिए। सरकारी सम्पत्ति को जलाने का, प्राइवेट वाहनो में तोड़फोड़ करने का किसी को अधिकार नहीं होना चाहिए। सरकार को अपनी कमजोरी दूर करनी चाहिए। वांछित पुलिस बल की संख्या निर्धारित की जानी चाहिए और उसी के अनुसार नियुक्तियाँ की जानी चाहिए। देश में पुलिसबल की भी कमी है और सरकारी मनोबल की भी कमी है। सरकार का मनोबल इतना कमजोर नहीं होना चाहिए कि सरकारी सम्पत्ति जलती रहे और सरकार रोम के नीरो की भांति टुकर–टुकर देखती रहे अथवा बाँसुरी बजाती रहे। आवश्यक है कि आन्दोलनकारियों से, हड़तालियो से सख्ती से निपटा जाए और जो लोग भी सरकारी सम्पत्ति को हानि पहुंचाते है, उन्हें देखते ही गोली मारने के आदेश दे दिए जाने चाहिए। तभी देश का विकास हो सकता है, तभी जनता की सुरक्षा हो सकती है।

□□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–9

सत्य कड़ुवा होता है और कोई इसे स्वीकार नहीं करता लेकिन सत्य यही है कि दिल्ली में हुए सामूहिक बलात्कार और निर्भया की हत्या के बाद जो देश में उबाल आया और जो कानून इस सम्बन्ध में बनाने का विचार हुआ उसके बाद भी सामूहिक बलात्कार की घटनाएँ प्रतिदिन हो रही हैं। कोई दिन ऐसा नहीं जाता, जिस दिन सामूहिक बलात्कार का समाचार न मिलता हो। हिन्दुस्तान समाचार पत्र रविवार 10 मार्च 2013 के मुखपृष्ठ पर लिखा है, "जीप में गैंगरेप का प्रयास।" ऐसे समाचार प्रतिदिन अखबारों में छपते रहते हैं। अमर उजाला 11 मार्च 2013 के पृष्ठ 3 पर प्रकाशित हुआ है कि "रेप के प्रयास के आरोपी को माफी।" तथा पृष्ठ 5 पर लिखा है "बस में छात्रा से छेड़छाड़।" यह सब क्यों हो रहा है? सख्त कानून की गूंज उठने के बाद भी सामूहिक बलात्कार नहीं थम रहे हैं। यदि गहन चिन्तन किया जाए तो इसके लिए युवतियाँ, उनके माता–पिता अधिक दोषी हैं। जब से युवतियों ने लक्ष्मणरेखा लांघी है, तब से सामूहिक बलात्कार की घटनाएँ बढ़ी हैं। काल सेन्टर पर काम करना, रात को अकेले या बॉयफ्रेंड के साथ घर लौटना ऐसी घटनाओं को दावत देने के समान है। लड़कियों का अधिक पढ़ना और देर से विवाह होना भी इन घटनाओं को जन्म दे रहा है। कोई सा समाचार पत्र उठाकर देख लिजिए किसी ना किसी छात्रा के सन्दर्भ में कुछ ना कुछ छपता रहता है, जब पच्चीस–पच्चीस, तीस–तीस साल तक लड़कियाँ पढ़ेंगी और अविवाहित रहेंगी तब क्या होगा। इस प्रकार की घटनाएँ नहीं रूक सकती। हिन्दुस्तान

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनांक 10 मार्च 2013 के पृष्ठ 8 पर प्रकशित हुआ है, "छात्रा के साथ पकड़ा गया रसूखदार का बेटा" इसी प्रकार के समाचार प्रतिदिन प्रकाशित होते हैं, जिसमें पढ़ाई के नाम पर देर–देर तक दूर–दूर तक जाने वाली लड़कियाँ अक्सर अपने मित्रों के साथ पकड़ी जाती हैं। अमर उजाला 11 मार्च 2013 पृष्ठ 4 पर कालम में लिखा है "प्रेमी युगल पकड़ा गया" कभी भी कहीं भी आप देख सकते हैं। यह घटनाएँ एक प्रकार से बहुत आम हो गई हैं। इस सबके लिए केवल मात्र बलात्कारियों को दोष देना ही काफी नहीं है, हमें अपने ऊपर भी लगाम लगानी पड़ेगी, लड़कियों को पढ़ाना अच्छा है, आवश्यक है, लेकिन उनकी विवाह की आयु भी सुनिश्चित होनी चाहिए। बीस वर्ष व्यतीत हो ज़ाने के पश्चात् कोई भी घटना हो सकती है, इससे बचने के लिए आवश्यक है कि एक लक्ष्मणरेखा का स्वनिर्माण किया जाए, जिसको लड़कियाँ, युवतियाँ, महिलाएँ लांघने की गलती ना करें। वेष–भूषा पर भी ध्यान देना आवश्यक़ है, ऐसे टाइट कपड़े पहनना, जिनसे सारा शरीर झाँकता हो उचित नहीं है। देखने वालो की गलती कम होती है, दिखाने वालों की गलती ज्यादा होती है। अतः लड़कियों को ऐसे वस्त्र पहनने चाहिए, जिनसे शरीर दबा–ढका रहे। देर रात्रि में घर से बाहर नहीं रहना चाहिए, ऐसी नौकरी नहीं करनी चाहिए, जिसमें रात को लौटना पड़े। लड़कियों का विवाह बीस–इक्कीस वर्ष की आयु तक कर देना चाहिए। तभी यह घटनाएँ रूक सकती हैं अन्यथा सामूहिक बलात्कार की घटनाएँ केवल मात्र कानून बनाने से नहीं रूकेगी। हमें स्वनियंत्रण करना पड़ेगा। अपनी पुत्रियों को अधिक पढ़ाने के चक्कर में घर से बाहर भेजकर होस्टलों में रखना भी इस प्रकार की घटनाओं को जन्म दे रहा है। एक आयु के बाद लड़के–लड़कियाँ अपने ऊपर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियंत्रण रखने में सफल नहीं हो पाते फलतः लड़के–लड़कियों में मित्रता पनपती है और कभी–कभी बॉयफ्रेंड अपने अन्य दोस्तों को भी अनुग्रहीत करने के लिए सामूहिक बलात्कार का आयोजन कर बैठता है।

भारतवर्ष में प्रत्येक राजनीतिक दल का यह प्रयास है कि देश का भला हो या ना हो। मतदाता नाराज नहीं होना चाहिए और प्रमुख मतदाता केवल दो ही हैं, अल्पसंख्यक अथवा आरक्षित। किसी भी राजनीतिक दल को ले लीजिए, पूरा प्रयास यह रहता है कि अल्पसंख्यक नाराज ना हो जाएं और उन्हें खुश करने के लिए प्रत्येक वह कार्य किया जाता है, जो बहुसंख्यक के लिए कभी नहीं किया गया। एक राजनीतिक दल का मुखिया कहता है भारतवर्ष के संसाधनों पर पहला हक अल्पसंख्यकों का है, दूसरा राजनीतिक दल कहता है कि केवल अल्पसंख्यक कन्याएँ ही हमारी बेटियाँ हैं, और उन्हीं को वांछित चैक प्रदान किये जाएँगे। एक राजनीतिक दल अल्पसंख्यकों को प्रत्येक क्षेत्र में आरक्षण की माँग करता है। दूसरे राजनीतिक दल का मुखिया कहता है, कि यदि एक व्यक्ति विशेष को देश का प्रधानमंत्री बना दिया गया तो वह अल्पसंख्यकों को बाहर निकाल देगा अर्थात् प्रत्येक राजनीतिक दल केवल मात्र अल्पसंख्यकों के लिए चिन्तित है। अल्पसंख्यक किसी भी प्रकार का भाषण दें, किसी का भी सिर कलम करने का फतवा जारी करें। वह भड़काऊ नहीं माना जाता किन्तु बहुसंख्यक समाज का कोई व्यक्ति अपने समाज की रक्षार्थ कोई बयान देता है तो उसे भड़काऊ मान लिया जाता है। इसका कारण क्या है। इस पर गहन चिन्तन की आवश्यकता है। इसी प्रकार से आरक्षण का प्रश्न है। प्रत्येक व्यक्ति आरक्षण चाहता है किन्तु आरक्षण के नाम पर राजनीति हो रही है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरक्षण केवल दिखावे का, लुभाने वाला प्रयास है। आरक्षण का लाभ किसी को प्राप्त नहीं हुआ। किन्तु आरक्षण के नाम पर राजनीतिक दल अपना वोट बैंक पक्का करना चाहते हैं, इसीलिए आज भी आरक्षण जिन्दा है, जबकि आजादी को 65 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और अब तक आरक्षित परिवारों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति बेहतर हो सकती थी। यदि उनके उत्थान के बारे में सोचा जाता किन्तु केवल आरक्षण का कानून बनाकर प्रत्येक बात को ठण्डे बस्ते में डाल दिया गया और आरक्षित समाज आज भी वहीं है, जहाँ पहले था। यदि विचार करें कि प्रत्येक राजनीतिक दल इन दोनों के बारे में ही क्यों सोचता है तो यह स्पष्ट होता है कि इन दोनों में एक बात समान है, वह है इनकी एकता आज यदि किसी विधायक अथवा सांसद की चुनाव की बात चलती है तो अल्पसंख्यक समाज आपस में बातचीत करके केवल एक ही व्यक्ति को अपना प्रत्याशी बनाता है और सारे अल्पसंख्यक मिलकर उसी का समर्थन करते हैं। जबकि बहुतसंख्यक समाज में एकता नहीं है। तथाकथित हिन्दुत्व का गान करने वाले राजनीतिक दल में भी एकता नहीं है और एकता ही अल्पसंख्यकों की सबसे बड़ी शक्ति, आरक्षित व्यक्तियों की सबसे बड़ी शक्ति है, उनकी इसी एकता के कारण प्रत्येक राजनीतिक दल उनकी परवाह करता है। जहाँ चुनाव में अल्पसंख्यक दल का एक व्यक्ति ही सर्वमान्य होता है, वहाँ बहुसंख्यक समाज के 10 व्यक्ति स्वयंभू राष्ट्रभक्त बनकर खड़े हो जाते हैं, फलतः जनबल के आधार पर अल्पसंख्यक व्यक्ति को अकेला होने के कारण समस्त मत प्राप्त हो जाते हैं, और वह जीत जाता है जबकि बहुसंख्यक समाज के मत बंट ज़ाने के कारण प्रत्याशी की हार सुनिश्चित हो जाती है। वर्षो से हम यह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देख रहे हैं लेकिन सबक लेने को तैयार नहीं हैं। क्योंकि हम बंटे हुए हैं। हममें एकता नहीं है। यही कारण है कि कोई भी राजनीतिक दल हमें महत्व नहीं देता। जहाँ अल्पसंख्यकों को हज यात्रा के लिए धन दिया जाता है आरक्षण प्राप्त व्यक्तियों को प्रत्येक सुविधा प्रदान की जाती है, वही बहुसंख्यक समाज के व्यक्ति मौलिक अधिकारों से भी वंचित रह जाते हैं। सोचना होगा और गहन चिन्तन करना होगा तभी परिस्थिति परिवर्तित हो सकती है। अन्यथा परिवर्तन सम्भवन नहीं है।

चुनाव की बात आई है तो देश की राजनीति को वर्तमान में वह क्षेत्रीय दल प्रभावित कर रहे हैं, जिनका राष्ट्र स्तर पर कोई महत्व नहीं है। यह क्षेत्रीय दल पाँच या दस सीट लोकसभा अथवा विधान सभा में प्राप्त कर लेते हैं और फिर सत्ता पक्ष के साथ गठजोड़ करके अपना स्वार्थसिद्ध कर लेते हैं। सत्ता पक्ष को भी बहुमत प्राप्त करने के लिए इन छोटे–छोटे दलों के चार–पाँच चयनित व्यक्तियों से गठजोड़ करना आवश्यक हो जाता है और फिर चलता है सिलसिला दबाव का। यह छोटे–छोटे दल केन्द्रीय सत्ता पर हावी होने का प्रयास करते हैं और सफल भी हो जाते हैं क्योंकि यदि यह छोटे–छोटे दल के दस–पाँच व्यक्ति सत्ता को समर्थन देना बन्द कर दें तो हो सकता है सरकार गिर जाए और सरकार इसी अपने गिरने के डर से इनका दबाव सहन करती रहती है और देशहित का कोई भी कार्य, विकास का कोई भी कार्य नहीं हो पाता। क्योंकि सब अपने–अपने स्वार्थ में लिप्त रहते हैं। देश की चिन्ता किसी को नहीं होती। कानून ऐसा बनना चाहिए कि यह क्षेत्रीय दल लोकसभा के लिए अपना प्रत्याशी खड़ा न कर सके। छोटे–छोटे दलों को सांसद या प्रत्याशी बनने से रोक लगाई जानी चाहिए।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह क्षेत्रीय दल जिनकी अपने प्रान्त के अतिरिक्त अन्य किसी प्रान्त में कोई पहचान नहीं है, उनको संसद में प्रवेश का अधिकार नहीं मिलना चाहिए। इससे सत्तापक्ष मजबूत होगा और देशहित के कार्य हो सकेंगे। क्षेत्रीय दलों को केवल विधानसभा तक ही सीमित रखना चाहिए अन्यथा 50–60 सांसदों के बल पर व्यक्ति लगभग 500 संसद सदस्यों के सर पर चढ़कर प्रधानमंत्री बनने का सपना देखने लगता है और इस प्रकार होता है ब्लैकमेंलिंग, जिसका नुकसान देश को और जनता को होता है। संसद में केवल उसी दल के व्यक्ति जाने चाहिए, जो पूरे देश में अपनी पहचान रखता हो और प्रत्येक प्रान्त से संसद सदस्य निर्वाचित कराने में सक्षम हो। तो सत्तापक्ष को और विपक्ष को दोनों को सुविधा रहेगी। अन्यथा सत्तापक्ष और विपक्ष दोनों ही इन क्षेत्रीय दलों के दो–दो–चार सांसदों का दबाव झेलने के लिए विवश रहेंगे और ना तो विपक्ष ही देशहित का निर्णय लेने के लिए सत्ता पक्ष को विवश कर सकता है और न ही सत्ता पक्ष देशहित के कार्यो को निर्बाध रूप से सम्पन्न कर सकता है। सोच आवश्यक है, गहन चिन्तन आवश्यक है। तभी देश का भला होगा अन्यथा त्रिशंकु सरकार देश का कोई भला नहीं कर सकेगी।

□□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–10

कभी–कभी झूठ को इस तरह प्रस्तुत किया जाता है कि वह सच लगने लगता है और कहते भी हैं कि यदि कोई झूठ 100 बार बोला जाए तो उसमें से सच की बू आने लगती है। यही स्थिति वर्तमान में हमारी सरकार की है, जो समर्थन प्राप्ति के लिए हाथ जोड़ रही है। मैं पहले भी कह चुका हूँ कि कोई भी सहयोगी दल केन्द्र में सरकार को गिराना नहीं चाहेगा क्योंकि कोई भी सांसद नहीं चाहता कि दोबारा चयनित होने का खतरा मोल ले तथा जो दोनों हाथ में वर्तमान में लड्डू हैं उनको छोड़ दे। सरकार से समर्थन वापसी की गीदड़ भभकियाँ रोज सुनने को मिलती है, और फिर किसी न किसी स्तर पर आकर समझौता हो जाता है। कितने दुख की बात है कि छोटी–छोटी क्षेत्रीय पार्टियों के सामने काँग्रेस जैसे राष्ट्रीय दल की मुखिया हाथ जोड़कर समर्थन मांगती है और ये छोटे–छोटे क्षेत्रीय दल अपने पांच प्रतिशत से भी कम सांसदों के बल पर सरकार को दबाव की राजनीति के तहत अपनी मांगे मनवाने के लिए विवश करते रहते हैं। अच्छा तो यह होता कि गिड़गिड़ाने की बजाय एक बार सरकार को गिरने ही दिया जाता। जो दल दबाव की राजनीति के अन्तर्गत केन्द्र में सरकार को गिराना चाहता है, उसकी असलियत जनता के सामने आ जाती और काँग्रेस की दृढ़ता की जनता प्रशंसा करती। किन्तु पता नहीं कौन सा भय है, कौन सा प्रलोभन है, जो काँग्रेस प्रत्येक क्षेत्रीय सहयोगी दल की धौंस को सह रही है और कुर्सी बचाने के लिए, सत्ता में कायम रहने के लिए हाथ जोड़कर समर्थन की मांग कर रही है। जिन नेताओं पर भ्रष्टाचार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

185407
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

के आरोप लगे हैं, वह भी अपने चन्द सांसदों के बल पर दबाव की राजनीति के अन्तर्गत केन्द्र सरकार पर अपना दबाव बनाये हुए है और इसकी आड़ में सी.बी.आई. जांच से बच रहे हैं। यदि एक बार सरकार भले ही गिर जाए लेकिन भ्रष्टाचारी नेताओं के चेहरे साफ हो जाएं तो कम से कम जनता तो यह समझ ले कि किस नेता में देशहित है और कौन सा नेता स्वार्थ में लिप्त है, जो दल समर्थन वापस ले रहे हैं। उनको लेने देना चाहिए। काँग्रेस क्यों यह समझती है कि अगर वह सत्ता से बाहर हो गई तो समाप्त हो जाएगी अथवा उसके अस्तित्व पर खतरा आ जाएगा। जबकि ऐसा नहीं है। यदि काँग्रेस सिद्धांत पर रहते हुए नैतिक मूल्यों के आधार पर समर्थन पर गिड़गिड़ाने की बजाय सरकार को गिरने देगी तो जनता की नजरों में काँग्रेस की छवि उतनी ही उज्ज्वल हो जाएगी, जितनी इन्दिरा गाँधी के समय में थी। इसलिए काँग्रेस को चाहिए कि वह अपनी सैद्धान्तिक नीति पर अडिग रहे तथा किसी के आगे भी अनैतिक बात के लिए समर्थन को गिड़गिड़ाएं नहीं इसी में देशहित है, इसी में जनहित है और इसी में काँग्रेस हित है।

होली का अवसर है अतः आशाराम जी के मन में भी होली की उमंग उठी और उसी तरंग में उन्होंने कई हजार लीटर पानी भक्तों के ऊपर बौछार करके नष्ट कर दिया। महाराष्ट्र, जहाँ पर वर्तमान में सूखा घोषित कर दिया गया है, जहाँ लोग पीने के पानी को तरस रहे हैं, वहाँ कई हजार लीटर पानी इस तरह बर्बाद कर देना कोई समझदारी नहीं है। ऐसा लगता है कि अब आशाराम जी पर अहंकार हावी होने लगा है। कभी वह भक्तों के थप्पड़ मार देते हैं, कभी वह सरकारी आदेश की अनसुनी कर देते हैं और कभी अपनी मनमानी चलाते हुए ऐसे काम कर बैठते

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, जो जनहित अथवा देशहित में नहीं हैं। उनके आश्रम में मौतें भी हो चुकी हैं, जिसकी जाँच अधर में लटकी हुई है। वस्तुतः इस सबके लिए सरकार दोषी है। आशाराम जी हों या रामदेव जी, परमार्थ निकेतन हो अथवा अन्य किसी भी सन्त का आश्रम, जहाँ व्यवसाय होने लगता है वहां सरकार को दखल देना चाहिए। प्रत्येक आश्रम में व्यवसाय हो रहा है, दवाएँ बन रही हैं, मालाएँ बाँटी जा रही है, पुस्तकें छप रही हैं, और वह बेची जा रही हैं। आश्रमों के रख–रखाव में करोड़ों रूपये वार्षिक खर्च हो रहे है, यह धन कहाँ से आ रहा है, इस पर उपहार कर क्यों नहीं लगाया जाता। पुस्तकों, मालाओं और दवाओं की बिक्री से जो आय हो रही है, उस पर आय कर क्यों नहीं लगाया जाता। दवाओं की गुणवत्ता की जाँच क्यों नहीं की जाती। वस्तुस्थिति यह है कि आश्रमों में जो गुप्तदान होता है, वह सभी कालाधन होता है, जिसमें देने वाला आश्रम के स्वामी की निगाह में तो आ जाता है किन्तु कागजों में उसका नाम नहीं आता। ऐसे समस्त गुप्तदान पर आयकर लगना चाहिए, जो व्यक्ति अपने नाम से दान देते हैं, उस पर उपहार कर लगना चाहिए और यह देखा जाना चाहिए उन्होंने उस दान को अपने हिसाब–किताब में दिखाया है अथवा नहीं। वह अधिकारी जो या तो धर्मभीरु हैं अथवा कर्मभीरु हैं। वह खुले हाथ से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए कालेधन का दान करते हैं और बड़प्पन दिखाने के लिए अपना नाम गुप्त रखने का प्रयास करते हैं। महन्त जी समझते हैं कि देने वाला कितना उदार ह्रदय है कि लाखों दे रहा है फिर भी अपना नाम नहीं चाहता। इन आश्रम के महन्तों को भी साधारण व्यक्तियों की भांति ही लिया जाना चाहिए। यह ईश्वर का अवतार नहीं हैं, केवल भारत की जनता की धर्मभीरुता को

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुना रहे हैं। वर्तमान में इतने दुष्कर्म हो रहे हैं। आय के साधन इतने अनैतिक हो गये हैं, कि प्रत्येक व्यक्ति अपने दुष्कर्मों से मुक्ति पाने के लिए अनैतिकता के कोप से बचने के लिए इन महन्तों की शरण में जाता है। आज एक साधारण आदमी यदि गेरुवे वस्त्र पहनकर मन्दिर में बैठ जाए तो एक वर्ष बाद उसके पास इतनी भीड़ लगने लगेगी कि वह स्वयं नहीं गिन पाएगा। भारत की जनता युक्तियुक्त ढंग से नहीं सोचती बल्कि अंधविश्वास के साथ चलती है और यही कारण है कि आश्रमों में भीड़ बढ़ती जा रही है। निदान कुछ नहीं है। सरकार को इन पर अंकुश लगाना पड़ेगा। इनके कोप से डरने की आवश्कता नहीं है क्योंकि इनके अन्दर कोप करने की क्षमता ही नहीं है और ना ही यह अपने कोप से किसी को हानि पहुँचा सकते हैं। अतः निर्विवाद रूप से इन आश्रमों पर विधि अनुसार कार्यवाही की जानी चाहिए। और उन अधिकारियों पर भी नजर रखनी चाहिए, जो ऐसे आश्रमों में गुप्तदान देते हैं।

और भारतवर्ष क्रिकेट के मैदान में वीरतापूर्ण प्रदर्शन कर रहा है, भले ही हमारी सरकार कायरतापूर्ण व्यवहार करती हो। लेकिन क्रिकेट के खिलाड़ी बड़े परिश्रम से अपनी जीत को बरकरार रखे हुए हैं। वास्तव में जब से श्री भगवान का साया क्रिकेट पर से हटा है तब से नये–नये खिलाड़ी अपना जलवा दिखाने को बेकरार हैं और जलवा दिखा भी रहे हैं। कई खिलाड़ियों के दोहरे शतक बन चुके हैं, कई खिलाड़ियों ने कई–कई विकट एक पारी में लिये हैं। पहले नये खिलाड़ियों को प्रोत्साहन नहीं दिया जा रहा था। यह पहला मौका है जब भारतीय क्रिकेटरों के शतक भी बने है और देश भी जीता है। वरना अक्सर यह होता था कि एक व्यक्ति विशेष के शतक बनते थे और देश हारता था। ऐसा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगता है कि टीम इण्डिया के क्रिकेटरों का चयन भी श्रीभगवान के प्रभाव में होता था और प्रत्येक क्रिकेटर श्रीभगवान के उस प्रभाव से भयभीत भी था इसलिए कोई भी न खुलकर खेल पाता था और न ही शतक बना पाता था। भला हो भगवान का उनके अर्न्तध्यान होने के समाचार के पश्चात पहली बार भारत की टीम ने क्रिकेट के खेल में चार की सीरिज चारों मैंच जीतकर हासिल की। जो चयनकर्ता अब श्रीभगवान के चयन के लिए लालायित हों उनको क्रिकेट बोर्ड से हटाकर अपने घर की छत पर क्रिकेट खेलने का अवसर दिया जाना चाहिए। ऐसे लोगों का भारत की प्रतिष्ठित टीम में कोई स्थान नहीं होना चाहिए, जो केवल एक ही खिलाड़ी का प्रार्दुभाव चाहते हैं। और खिलाड़ी भी कैसा, जो अपने आपको भगवान कहलाने में प्रसन्न होता है और टीम के कप्तान पर भी हावी रहता है। वस्तुतः क्रिकेटर की भी आयु सीमा निश्चित होनी चाहिए एक ऐसे क्रिकेटर को जो दस मैचों में छह रन, बीस रन, साठ रन और कभी–कभी एक रन बनाकर आउट हो जाता है, वह यदि ग्यारहवीं मैच में शतक बना लेता है तो वह महान नहीं है। वह चयनकर्ता भी संदिग्ध है, जो ऐसे खिलाड़ी का बार–बार चयन करते हैं। क्रिकेट में यदि क्रिकेटर की आयु सीमा निश्चित हो जाएगी तो ऐसे क्रिकेटर बार–बार चयनित नहीं। किये जा सकेंगे, जो केवल व्यक्तिगत शतक के लिए खेलते हैं। बल्कि ऐसे क्रिकेटर आएँगे, जो व्यक्तिगत शतक के साथ–साथ देशहित का भी ध्यान रखेंगे। चयनकर्ताओं को निष्पक्ष होकर देशहित में चयन करने की सलाह देना आज के युग में जबकि क्रिकेट में भी मैच फिक्सिंग होने लगा है तथा अन्य खेलों में भी नूरा कुश्ती का चलन हो गया है निरर्थक ही है। चयनकर्ता भी प्रत्येक 3 वर्ष बाद बदले जाने चाहिए। कोई भी कुर्सी किसी की

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बपौती नहीं बननी चाहिए और किसी को भी आयुपर्यन्त भारत की टीम इण्डिया में क्रिकेट खेलने का अवसर नहीं दिया जाना चाहिए। श्रीभगवान को भी चाहिए कि सम्मानपूर्वक अर्न्तध्यान हो जाए वरना कहीं ऐसा न हो कि देश की जनता में जो उनके लिए सम्मान है, वो ही अर्न्तध्यान हो जाए।

□□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–11

न्यायालय में गीता पर हाथ रखकर कहलवाया जाता है कि मैं जो कुछ कहूँगा, सत्य कहूँगा और सत्य के सिवा कुछ नहीं कहूँगा, किन्तु कहने में कितना सत्य होता है, यह कहने वाला ही जानता है, यही स्थिति राजनीति की है। सारे राजनीतिक दल एक–दूसरे को साम्प्रदायिक बताने पर तुले हुए हैं और खुलेआम कहते हैं कि साम्प्रदायिक ताकतों को सत्ता से बाहर रखने के लिए वह केन्द्रीय सरकार (काँग्रेस) को समर्थन दे रहे हैं अर्थात् काँग्रेस साम्प्रदायिक नहीं है और जिस पार्टी को वह सत्ता से बाहर रखना चाहते हैं, वह साम्प्रदायिक है। मैं जनता से पूछता हूँ कि जो राजनीतिक दल साम्प्रदायिक ताकतों को बाहर रखने के लिए केन्द्र सरकार का समर्थन कर रहे हैं, क्या वह असाम्प्रदायिक हैं। हम उस दल को असाम्प्रदायिक कैसे कह सकते हैं, जो केवल अल्पसंख्यक कन्याओं को आर्थिक सहायता प्रदान कर रहा है, जो केवल मुस्लिमों के आरक्षण की बात करता है तथा वह राजनीतिक दल अथवा उसका मुखिया असाम्प्रदायिक कैसे हो सकता है, जो केवल दलितों के नाम पर प्रोन्नति में आरक्षण की माँग कर रहा है, जिसके पास दलितों के अतिरिक्त अन्य सबके लिए यह नारा है– तीर, तराजू और तलवार, इनके मारो जूते चार। वह दल कैसे असाम्प्रदायिक हो सकता है, जो केवल वोट बैंक के लिए दलितों को साथ लेकर चलना चाहता है। अन्य सभी जाति के लोग उसको समझ नहीं आते और न ही किसी को आरक्षण दिये जाने का समर्थक है, जिसे गरीबो की नहीं वोट बैंक के आधार पर केवल दलितों की चिन्ता है। केन्द्र सरकार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या साम्प्रदायिक नहीं है, जब प्रधानमंत्री स्वयं यह कहते हैं कि देश के संसाधनों पर पहला अधिकार अल्पसंख्यकों (जो अब बहुसंख्यक हो चुके हैं) का है, जो हज यात्रा पर जाने के लिए अल्पसंख्यक को सब्सिडी देने का पक्षधर है। लेकिन तथाकथित बहुसंख्यकों को (जो अब अल्पसंख्यक हो गये हैं) तीर्थ यात्रा पर जाने के लिए (मानसरोवर य़ात्रा) कोई सहायता नहीं देना चाहता। वह सभी दल जो या तो दलितों की राजनीति करते हैं अथवा अल्पसंख्यकों की राजनीति करते हैं, वह सभी साम्प्रदायिक हैं और जिसे यह साम्प्रदायिक कहकहर सत्ता से बाहर रखना चाहते हैं, यदि उसको देखें तो वह साम्प्रदायिक नहीं है बल्कि वह सर्वधर्म समभाव के सिद्धान्त पर आधारित है। वह दल जिसे धर्मान्ध कहा जाता है, उसमें सभी दल के लोग सम्मिलित हैं। क्या मजाक है कि यदि वरुण गांधी हिन्दुत्व के सन्दर्भ में कुछ बोलते हैं, तो उनका भाषण साम्प्रदायिक तथा भड़काऊ कहा जाता है और यदि श्रीमान अब्दुल्ला बुखारी की सभा में कोई अल्पसंख्यक पत्रकार यह कहता है कि अयोध्या में रामजन्म भूमि की जमीन सरकारी कागजात में राजा दशरथ के नाम दर्ज है अतः यह जमीन रामजन्म भूमि के लिए छोड़ देनी चाहिए तो उसकी पिटाई कराई जाती है। उसे काफिर कहा जाता है। क्या बहुतसंख्यकों को काफिर कहने वाले लोग साम्प्रदायिक नहीं है। जितने भी राजनीतिक दल अपने वोटों के लालच में किसी एक जाति विशेष या सम्प्रदाय विशेष के लोगों को अन्य लोगों के मुकाबले विशेष स्थान देते है, वह सभी साम्प्रदायिक हैं। खालिस्तान की माँग करने वाले सभी आतंकवादी साम्प्रदायिक हैं और उनका समर्थन करने वाले भी। हमे दूसरों को साम्प्रदायिक कहने से पहले अपनी गिरेबान में झाँकना चाहिए और जनता को इतना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूर्ख नहीं समझना चाहिए कि वह साम्प्रदायिक और असाम्प्रदायिक का भेद न समझे। केन्द्र में पूर्णतया साम्प्रदायिक सरकार है। प्रान्तों में साम्प्रदायिक सरकारे हैं। दो दलों को छोड़कर शेष सभी साम्प्रदायिक है अतः साम्प्रदायिक शब्द का प्रयोग बन्द कर देना चाहिए।

वर्तमान में मन्दिरों में, आश्रमों में अकूत सम्पदा इकट्ठी हो रही है, कुछ मन्दिर ऐसे है, जहाँ कई–कई लाख प्रतिदिन का चढ़ावा आता है। मन्दिरों में प्राप्त होने वाला धन सत्कार्यो में व्यय होना चाहिए। इस धन का भण्डारण सर्वथा अनुचित है। जहाँ पर कई–कई लाख रुपये प्रतिदिन चढ़ावे में प्राप्त होते हैं, वहाँ कई अरब का धन एकत्रित करके रखना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। प्रथम तो इन आश्रमों के और मन्दिर के मठाधीशों को स्वयं ही सोचना चाहिए कि यह धन गरीब बच्चों की शिक्षाओं में, गरीब कन्याओं के विवाह में, बेरोजगार व्यक्तियों की सहायता में तथा अन्य मूलभूत आवश्यकताओं पर खर्च किया जाना चाहिए। बगैर नाम लिये मैं प्रत्येक मन्दिर के लिए कह रहा हूँ, वर्तमान में महाराष्ट्र में सूखा आया हुआ है, बुन्देलखण्ड में बहुत समय से सूखा है, उड़ीसा में गरीबी की स्थिति भयंकर है। बिहार की स्थिति भी कुछ अधिक अच्छी नहीं है, जहाँ गरीबी, भूखमरी और सूखे के कारण लड़कियों–बच्चों को बेचने की नौबत आ जाए, वहाँ स्थिति अच्छी नहीं कही जा सकती। अतः इन मन्दिरों और आश्रमों के मठाधीशों को महाराष्ट्र में, उड़ीसा में, उत्तर प्रदेश में, बिहार में अथवा बंगाल में जहाँ भी आवश्यकता हो, जहाँ भी सूखा पड़ने की सम्भावना हो, वहाँ नलकूप बनवाने चाहिए। वहाँ तालाब खुदवाने चाहिए तथा पट्टीपूर्ति के साँई बाबा की तरह से नहर बनवानी चाहिए। गाँव में अस्पताल खुलवाने चाहिए, विद्यालय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनवाने चाहिए और सौर ऊर्जा का प्रबन्ध करके गाँव–गाँव में बिजली पहुँचानी चाहिए, सरकार के सहारे सारे काम छोड़ देना और स्वयं चढ़ावे में प्राप्त धन का एकत्रीकरण करना और स्वयं पर खर्च करना पुण्य का कार्य नहीं है, पाप है। और धन का भण्डार भरना कभी भी पुण्य का कार्य नहीं हो सकता। धन को सत्कर्मो पर व्यय करना, गरीब, बेरोजगार व्यक्तियों की सहायता के लिए खर्च करना, शिक्षा पर खर्च करना, भुखमरी और सूखाग्रस्त क्षेत्रों में खाने और पानी का साधन जुटाने में करना पुण्य का कार्य हो सकता है अतः इन आश्रमों के और मंदिरों के मठाधीशों को चाहिए कि अरबों रुपये की जो सम्पत्ति मंदिरों में जमा है, उसका 50 प्रतिशत भाग सूखाग्रस्त क्षेत्रों में नलकूप बनवाने, तालाब खुदवाने, नहर बनवाने तथा अस्पताल व विद्यालय बनवाने में खर्च करें। भगवान को मंदिर में एकत्रित धन को देखकर कोई प्रसन्नता नहीं होती जबकि यह धन सत्कार्यो के लिए व्यय किया जाता है तब वह प्रसन्न होते हैं। कई प्रान्तों में ऐसे बहुत से गाँव हैं, जहाँ 65 वर्ष की आजादी के बाद भी पीने के पानी की सुविधा नहीं है। जहाँ खेती पानी की कमी के कारण वांछित फल प्रदान नहीं करती। वहाँ पर सरकार को चाहिए था कि नलकूप बनवाती अगर खुदाई सम्भव नहीं थी तो जमीन के ऊपर पक्के तालब बनवाती लेकिन वोटों के लालच में, अपनी कुर्सी बचाने के चक्कर में सरकार को उन क्षेत्रों का ध्यान ही नहीं आया, जहाँ लोग भूख से और प्यास से मर रहे हैं, बल्कि सरकारी नेताओं ने ऐसे लोगों का मजाक भी उड़ाया, उनकी भावनाओं को ठेस भी पहुँचायी। अतः इन धार्मिक स्थलों में मठाधीशों को उन प्यासे और भूखे लोगों के लिए कम से कम पानी और खाना जुटाने का साधन गाँवों में करना चाहिए और यह कोई बड़ी बात नहीं है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्मनाथ मन्दिर में, तिरुपति बालाजी में, जगन्नाथपुरी में, बद्रीनाथ आश्रम में चढ़ावे के रूप में जो धन प्राप्त होता है। उसके आधे प्रतिशत से पूरे देश के सूखाग्रस्त इलाकों में नलकूप बनवाये जा सकते हैं। तालाब खुदवाये जा सकते हैं। पक्की नहरों का निर्माण कराया जा सकता है। अस्पताल और विद्यालयों की स्थापना की जा सकती है। यदि राजा स्वार्थी हो जाये और जनता पर ध्यान न दे तो राजगुरुओं/महन्तों/मठाधीशों/साधु–संन्यासियों का यह कर्त्तव्य है कि वह जनता को जीवित रखने के लिए वह सब कार्य करें जो आवश्यक हैं भले ही इसके लिए भीख क्यों न माँगनी पड़े।

बड़े–बड़े मन्दिरों में, बड़े–बड़े मठों में भगवान विराजित है, भक्तों की लम्बी–लम्बी लाइन लगी हुई है, लाखों रुपये रोज का चढ़ावा आ रहा है, जनता की श्रद्धा में कोई कमी नहीं है लेकिन ऐसी श्रद्धा जिससे भगवान का अपमान होता हो, वह अनुचित ही नहीं घृणा करने योग्य है। आज भारतवर्ष में प्रत्येक हिन्दु के घर में जो कलैन्डर टँगे हुए होंगे, उसमें भगवान का चित्र बना हुआ होगा और जिस साल का वह कलैन्डर होगा, उस पूरे साल घर के सभी सदस्य भगवान के चित्र के सामने श्रद्धा से नतमस्तक होते रहेंगे किन्तु वर्ष समाप्त होने के पश्चात उस कलैन्डर का क्या होता है। सड़क पर फेंक दिया जाता है और उस पर पैर रखकर जनता गुजर जाती है। कुत्ते उसको अपवित्र कर देते हैं। यह कैसी श्रद्धा है। गणेश चतुर्थी पर गणपति बप्पा मोरिया के नारे के साथ गणेशजी की प्रतिमा का विसर्जन सागर में किया जाता है यह कैसी श्रद्धा है। दुर्गा पूजा के अवसर पर देवी माँ की मूर्ति सागर में विसर्जित की जाती है, यह कैसी श्रद्धा है। उस सागर में जिसमें तमाम विश्व की गन्दगी नदियों के माध्यम से आकर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरती है, पानी के जहाज में सफर करने वाले व्यक्ति उसमें मल–मूत्र का त्याग करते हैं, उस सागर में गणेश जी की और माँ दुर्गा की मूर्तियों का विसर्जन करना कितना उचित है, कितना पापमय है इस पर विचार आवश्यक है। दुख होता है हिन्दुओं की मानसिकता पर, हँसी भी आती है। विवाह के निमंत्रण पत्र बाँटे जाते है, गणेश जी का अस्पष्ट चित्र बनाकर उनसे विघ्न हरण की प्रार्थना की जाती है। पिसे हुए आटे के पैकेट पर, दाल के पैकेट पर, मसालो के पैकेट पर, अगरबत्ती पर धूपबत्ती पर, माचिस पर बीड़ी–सिगरेट के बण्डलों पर भगवान का चित्र छाप दिया जाता है। क्या हो गया है हिन्दु समाज को, क्या बुद्धि एकदम चरने चली गई है या भ्रष्ट हो गई है, कभी किसी और धर्मावलम्बी को भी इस प्रकार की चेष्टा करते हुए देखा गया है क्या किसी और धर्म के लोग इस प्रकार अपने भगवान की, मालिक की या खुदा के चित्रों को ऐसे छापते हैं। हिन्दुओं के अलावा इतनी धर्मान्धता किसी धर्म में नहीं देखी जाती। हमें अपनी सोच बदलनी चाहिए, जिससे भगवान हम पर कृपा करें, किसी भी देवी–देवता का चित्र इस प्रकार से नहीं छापा जाना चाहिए कि उसका अन्त व्यक्तियों के पैरों में आकर हो। जो भी श्रद्धा–पूजा या भक्ति करनी है वह अपने घर में मूर्ति स्थापित करके करनी चाहिए मूर्तियों का विसर्जन गन्दे समुद्र के जल में नहीं किया जाना चाहिए, जिस समुद्र के जल को लोग पीना पसन्द नहीं करते, जिसके बारे में कहा गया है कि यह किसी तपस्वी के मूत्र त्याग से उत्पन्न हुआ, उसमें गणेश जी और देवी माता की मूर्तियां विसर्जित करना पाप ही कहा जा सकता है पुण्य नहीं और हमारे यही पाप इस समय हमें दुखी कर रहे हैं। भगवान का अवतार भी इसी कारण नहीं हो रहा। क्योंकि धार्मिक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावनाएं लुप्त हो गई है और धर्मान्धता व्याप्त हो गई है। आश्रमों और मठों में जो लीलाएं हो रही है, वह भी भगवान से छिपी नहीं है। यदि अब भी हिन्दु नहीं चेतेंगे और स्वनियंत्रण स्थापित नहीं करेंगे तो स्पष्ट है कि वह दिन दूर नहीं जब भगवान को कुपित होकर प्रलय का आयोजन करना पड़ेगा। हमें अपनी धार्मिक भावनाओं पर नियंत्रण रखना होगा तभी हम बच सकते हैं। तभी हमारे कार्य सत्कर्मो की श्रेणी में आ सकते हैं। अन्यथा प्रलय अवश्यम्भावी है।

□□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–12

समाचार–पत्रों का दायित्व है कि जो भी छापें सत्य छापें और सत्य के अतिरिक्त कुछ न छापें। कितना भी प्रलोभन क्यों ना मिले, सत्य ही छपना चाहिए। यदि सत्य की जगह लगी–लिपटी बात छाप दी जाती है किसी व्यक्ति विशेष को नाराज न करने की दृष्टि से अथवा खुश करने की दृष्टि से कुछ ऐसा छापा जाता है, जो सत्य नहीं है तो स्पष्टतया पीत–पत्रकारिता आरम्भ हो जाती है और आजकल समाचार–पत्रों ने कुछ ऐसा छापना शुरू कर दिया है, जो चाटुकारिता की श्रेणी में आता है और मैं समझता हूँ कि चाटुकारिता भी एक प्रकार से पीत–पत्रकारिता ही है। क्रिकेट जैसे अवसरवादी और स्वयंसिद्ध फिक्सिंग वाले खेल में किसी क्रिकेट के खिलाड़ी को क्रिकेट का भगवान कहना भगवान का अपमान तो है ही। चाटुकारिता की भी पराकाष्ठा है। यदि यह पीत पत्रकारिता नहीं है तो क्या है। अवश्य ही कुछ समाचार–पत्र इस सन्दर्भ में मेरा मार्गदर्शन करेंगे। इसी प्रकार अभिनय के क्षेत्र में दिलीप कुमार, अशोक कुमार, राजकुमार, राजकपूर जैसे अनेक अभिनेताओं से बराबरी न कर पाने वाले अभिनेता को महानायक कहना अथवा बिग बी कहना किस श्रेणी में आता है। एक अभिनेता को कुछ अखबार वालो ने किंग खान कहना शुरू कर दिया है और परिणाम यह हुआ कि वह अपने–आपको बड़े–बड़े बुद्धिमानों से ऊपर समझने लगे। अमेरिका में उनकी नियमित जाँच क्या हुई, उन्हें इसका दुख हुआ। समाचार–पत्र ही दोषी हैं इस बात के। किंग खान क्या होता है। क्या अभिनय के क्षेत्र में इन श्रीमान से ऊपर कोई हुआ ही नहीं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या मिलता है समाचार–पत्रों के स्वामियों को इस प्रकार के विशेषण का प्रयोग करने से। किसी अभिनेता को मिस्टर परफैक्शनिस्ट कहना, किसी को दबंग कहना सर्वथा अनुचित है। यह अभिनेता केवल हमारी आपकी नकल करते हैं। परदे पर जो कुछ दिखाया जाता है वह सत्य नहीं होता। लड़ाई–झगड़े और स्टंट सीन काफी अभिनेताओं के उनके डुप्लीकेट करते हैं। फिर यह विशेषण इनके लिए क्यों। इसी प्रकार राजनेताओं को विशेषण देना और विशेषण से पुकारना, चाटुकारिता तो है ही, लेकिन मेरी दृष्टि में यह पीत पत्रकारिता भी है। इसी चाटुकारिता ने समय से पहले ही राजेश खन्ना को मृत्यु के मुख में भेज दिया है। यदि उसको सुपर स्टार न कहा गया होता और वह इसके घमण्ड में उन सब लोगों को न भुला बैठता, जिन्होंने उसे उठाया था तो सम्भवतः अभी नहीं मरता। लेकिन इस सुपर स्टार के विशेषण ने राजेश खन्ना को मार दिया, जो वर्तमान का सबसे लोकप्रिय अभिनेता अपने समय में रहा है। समाचार–पत्रों को चाहिए कि वह इस प्रकार के विशेषण लगाने बन्द करें क्योंकि इससे व्यक्ति विशेष का तो कुछ भला नहीं होता। बल्कि चाटुकारिता के चलते आदमी अपनी वास्तविकता को भूल जाता है और ऐसी हरकते करने लगता है, जैसे वह सुपर ह्यूमैन हो।

मैंने पहले भी लिखा था पुनः लिख रहा हूँ। राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्रों ने जिस प्रकार से शहर के आधार पर वहाँ के संस्करण निकालने आरम्भ किये हैं, वह उचित नहीं है। इससे स्थानीय समाचार पत्र तो कष्ट में हैं ही, पाठक भी सुखी नहीं हैं। राष्ट्रीय समाचार पत्र में जिस शहर में वह जाता है, उस शहर के कुछ समाचार देकर उसे उस शहर का बना दिया जाता है। समाचार भी पूरे नहीं होते और स्थानीय समाचार पत्र का स्थान

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छीनने की कोशिश होती है। बड़ी मछली छोटी मछली को खाती है, यह किसी से छिपा नहीं है। भारतीय समाचार–पत्रों का यदि कोई संगठन है तो उसे इस पर विचार करना चाहिए कि राष्ट्रीय स्तर के समाचार–पत्र शहर के आधार पर समाचार प्रकाशित न करे और जिस शहर में वह वितरित होते हैं, उस शहर का एक पृष्ठ का संस्करण अपने साथ नत्थी न करें। वस्तुतः स्थानीय समाचार पत्र ही स्थानीय समाचारों के साथ न्याय कर सकता है, दिल्ली, कानपुर, कलकत्ता, बम्बई अथवा मद्रास से छपने वाला समाचार पत्र यदि जिस शहर में वितरित होता है, उस शहर का एक पृष्ठ का स्थानीय संस्करण निकालता है तो वह न्याय नहीं कर सकता। क्योंकि स्थानीय समाचार एक पृष्ठ के ही नहीं होते। पहले यह होता था (जब राष्ट्रीय स्तर के समाचार–पत्र स्थानीय परिशिष्ट नहीं निकालते थे।) कि पाठक एक राष्ट्रीय स्तर का समाचार पत्र लेता था और एक स्थानीय समाचार पत्र लेता था इस प्रकार 5–6 रुपये रोज का खर्चा करके वह स्थानीय और राष्ट्रीय सभी समाचार पत्रों से अवगत हो जाता था। अब यह स्थिति नहीं है, अब व्यक्ति सोचता है कि स्थानीय समाचार पत्र लेकर क्या करेगा जब राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्र में शहर के आधार पर परिशिष्ट प्रकाशित होने आरम्भ हो गये हैं। लेकिन इससे उसे संतुष्टि नहीं होती। अतः अपूर्ण समाचार ज्ञात होने का दुख सालता रहता है। राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्रों ने अपने मूल्य भी बढ़ा दिया है और पृष्ठ भी बढ़ा दिए है, पृष्ठ तो अपने–आप ही बढ़ जाएंगे, जब राष्ट्रीय स्तर का समाचार–पत्र मेरठ/मुरादाबाद/अमरोहा/बिजनौर आदि के स्थानीय परिशिष्ठ/संस्करण अपने समाचार–पत्रों में छापना आरम्भ कर देंगे। होना यह चाहिए कि राष्ट्रीय समाचार–पत्रों में राष्ट्र स्तर के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही समाचार छपे और स्थानीय समाचार पत्रों को स्थानीय समाचार छापने के लिए छोड़ देना चाहिए। इससे दोनों घर बस जाएँगे और पाठक भी दोनों अखबार लेकर संतुष्टि अनुभव करेगा। यदि माननीय पूर्व न्यायमूर्ति श्री मार्कण्डेय काटजू इस वृतान्त को उचित समझते हैं तो उन्हें पहल करनी चाहिए ताकि बड़े समाचार–पत्र, छोटे समाचार–पत्रों का जीवन हरण न करें।

दिल्ली में जब निर्भया/दामिनी नामक युवती तथा उसके मित्र के साथ जो घटना हुई थी और सामूहिक बलात्कार की घटना के बाद पीड़िता की मृत्यु हो गई थी, तो काफी हल्ला मचा था और काफी आक्रोश जनता में था। अब पुनः वही घटना दोहराई गई है, और वह भी एक अबोध बालिका के साथ पुनः वही वातावरण बन रहा है आरोपियों की स्वाकारोक्ति से स्पष्ट होता है कि यदि उन्होंने अत्यधिक मात्रा में शराब का सेवन न किया होता तो सम्भवतः यह घटना टल सकती थी यदि उन्होंने मोबाइल पर ब्लू फिल्म न देखी होती तो यह घटना टल सकती थी। लेकिन समाज के अन्दर ही समाज के शत्रु छिपे हुए हैं। आप किसी भी टी0वी0 चैनल को देख लीजिए उसमें विज्ञापनों तथा सीरियलों में कामुकतापूर्ण दर्शन छह इंच का नेकर पहने हुए अभिनेत्रियों के होते हैं। क्रीम का विज्ञापन हो अथवा बालसफा का विज्ञापन हो युवतियों की नग्न टाँग दिखाने का फैशन हो गया है। इसी प्रकार कपड़ों पर जो सैन्ट लगाने अथवा बदन पर सैन्ट लगाने के जो विज्ञापन हैं, उनमें एक व्यक्ति को अपने बदन पर सैन्ट का स्प्रे करते हुए दिखाया जाता है और उसकी तरफ छह इंच का नेकर पहने हुए टॉपलैस कन्याएँ दौड़ती हुई नजर आती हैं। विज्ञापन चाहे बर्तन साफ करने का हो अथवा होटल में खाना बनाने का हो अथवा किसी वस्तु के प्रचार का हो या साबुन का हो, सबमें

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्द्धनग्न युवतियों का प्रदर्शन स्पष्ट रूप से देखा जाता है। फिल्मों में वास्तविकता के नाम पर अश्लील दृश्यों का प्रदर्शन, बलात्कार का प्रदर्शन, व्यभिचार का प्रदर्शन एक आम बात हो गई है। बल्कि एक फिल्म निर्माता तो मल्टी सैक्स की वकालत करते नजर आते हैं। संमलैंगिक सम्बन्ध और अविवाहित साथ–साथ रहने का प्रचलन ये सभी बातें युवकों की कामुकता को जाग्रत करने में सहायक होती हैं। कण्डोम के किसी विज्ञापन को उठाकर देख लीजिए, जो बड़े–बड़े होर्डिंग्स पर शहर के बीचोबीच लगा होता है, उसमें किस प्रकार नारे लिखे होते है, किस प्रकार युवतियों की भाव भंगिमाएँ दिखाई जाती हैं, यह किसी से छिपा नहीं है। यह विज्ञापन युवकों में कामुकता जाग्रत करने के लिए एक माध्यम है। यदि ब्लू फिल्म पर पाबन्दी लगा दी जाए, टी0वी0 पर प्रदर्शित होने वाली अश्लीलता को रोक दिया जाए और युवतियों को सात बजे शाम के बाद अपने परिवार के किसी सदस्य के साथ के अतिरिक्त अकेले या पुरुष मित्र के साथ जाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाए तो यह सामूहिक बलात्कार रूक सकते हैं। लड़कियों की जीन्स और ब्लाऊज (बिना दुपट्टे के) पहनने पर कुछ पंचायतों ने प्रतिबन्ध लगाया है तो महिलाओं ने कहना आरम्भ कर दिया कि पुरुष अपनी सोच बदलें अर्थात् महिलाएँ इन सामूहिक बलात्कार की घटनाओं के बाद भी बदलने को तैयार नहीं हैं। यही कारण है कि दिल्ली के एक सामूहिक बलात्कार के बाद आज प्रतिदिन बलात्कारों की पुनरावृत्ति हो रही है। कोई दिन ऐसा नहीं जाता जब समाचार पत्र में बलात्कार की तीन या चार खबरे ना छपी हों। केवल पुलिस को दोष देना, केवल शासन को कोसना उचित नहीं है। हमें स्वयं को भी बदलना होगा और शासन का भी कर्त्तव्य है कि वह टी0वी0 पर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्लील दृश्य दिखाने बन्द करें और जिस चैनल पर अश्लील दृश्य दिखाये जाते हों उसे प्रतिबन्धित कर देना चाहिए सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय का यह कहना कि प्राइवेट चैनल पर हमारा कोई अधिकार नहीं है। अनर्गल बात है, जो बात देशहित में नहीं है, जो बात जनहित में नहीं है, उसको रोकना शासन का कर्त्तव्य है इसी प्रकार पत्र–पत्रिकाओं पर भी प्रतिबन्ध होना चाहिए कि वह अश्लील विज्ञापनों को अपने समाचार पत्रों में स्थान न दें तभी युवकों की कामुकता को कम किया जा सकता है और जब तक कामुकता की भावना हावी रहेगी (जो अर्द्धनग्न अभिनेत्रियों के विज्ञापनों के माध्यम से जाग्रत होती रहती है।) तब तक सामूहिक बलात्कार और दुष्कर्म के बाद हत्या की घटनाएँ नहीं रूकेंगी। हमें वह अखबार लेने बन्द कर देने चाहिए, जिनमें अश्लील विज्ञापनों का प्रकाशन होता है, हमें टी0वी0 के वह चैनल और उन पर प्रदर्शित होने वाले वह विज्ञापन नहीं देखने चाहिए, जिन पर अर्द्धनग्न अभिनेत्रियाँ प्रकट होती है। ऐसी वस्तुएँ भी नहीं खरीदनी चाहिए, जिनका विज्ञापन नग्नता पर आधारित हो तभी मानसिकता बदल सकती है। केवल कानून बनाने मात्र से सामूहिक बलात्कार नहीं रूकेंगे इसके लिए मानसिकता में बदलाव आवश्यक है।

□□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–13

कर्नाटक में काँग्रेस को स्पष्ट बहुमत मिला है, पूरे देश की जनता को इससे सीख लेनी चाहिए। लोकसभा का चुनाव हो अथवा विधानसभा का चुनाव हो सम्बन्धित क्षेत्र के व्यक्तियों की एक सभा आहूत की जाए और उसमें किसी भी एक पार्टी को स्पष्ट बहुमत से जिताने का निर्णय लिया जाए क्योंकि स्पष्ट बहुमत से ही एक अच्छी सरकार बन सकती है। जहाँ अन्य दलों के सहयोग से यूपीए अथवा एनडीए जैसी सरकारें बनती है, वह सभी दबाव में काम करती हैं और किसी भी दृष्टिकोण से सफल नहीं हो पाती। इसलिए आवश्यक है कि स्पष्ट बहुमत ही सरकार बनाने के लिए उपलब्ध रहे। भले ही सरकार किसी भी पार्टी की बने। जनता घोटालों से भ्रष्टाचार से तंग आ चुकी है और वह इनसे छुटकारा पाना चाहती है और तदनुरूप ऐसी सरकार चाहती है, जो भ्रष्टाचार में लिप्त न रहे और जनता को भ्रष्टाचार के स्थान पर सुरक्षित सुव्यवस्थित, न्यायिक शासन प्रदान कर सके। कर्नाटक में भाजपा के शासन काल में एक मुख्यमंत्री द्वारा जो भ्रष्टाचार के रिकार्ड तोड़े गये, उसी के कारण भाजपा की कमर टूट गई और सत्ता पुनः काँग्रेस के हाथ में चली गई। कर्नाटक में काँग्रेस की जीत इस कारण से नहीं हुई कि काँग्रेस से जनता खुश है बल्कि इस कारण से हुई है कि वहाँ पर भाजपानीत शासन में खुलकर परिवारवाद और भ्रष्टाचारवाद का खेल हुआ था। जनता ने सब देखा और भाजपा ने भी देखा इसी कारण मुख्यमंत्री को हटाया गया और नया मुख्यमंत्री नियुक्त किया गया किन्तु एक बार जो दाग लग जाता है, उसका निशान

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत दिन तक रहता है यही कारण है कि जनता भ्रष्टाचार को नहीं भूली भाजपा को भूल गई। काँग्रेस की एकता और भाजपा का अन्र्तकलह और प्रत्येक नेता का स्वयंभू बनना भी हार का कारण है। जनता से यह भी छिपा हुआ नहीं है कि काँग्रेस में जो एकता है, वह भाजपा में नहीं है। काँग्रेस में एक भी व्यक्ति सोनिया गाँधी, मनमोहन सिंह अथवा भ्रष्टाचार में लिप्त किसी भी मंत्री के विरुद्ध जबान नहीं खोलता। बल्कि एकजुट होकर उसके पक्ष में खड़े हो जाते हैं। इसके विपरीत भाजपा में अपने नेता के विरुद्ध ही बोलने में तथाकथित आदर्शवादी नेता गौरव समझते हैं। जनता को यह बात नहीं पचती। जनता इस बात से प्रसन्न नहीं है कि भाजपा के अनेक नेतागण नरेन्द्र मोदी के विरुद्ध क्यों बोल रहे हैं और वह इससे भी प्रसन्न नहीं है कि नरेन्द्र मोदी विनम्र होने के स्थान पर अहंकारी और आक्रामक क्यों हो रहे हैं। भाजपा समर्थक लोगों को इन सभी बिन्दुओ पर विचार करना चाहिए तभी लोकसभा अथवा विधानसभा चुनाव में भाजपा अपना झण्डा लहरा सकती है, अन्यथा कर्नाटक के परिणामों ने भविष्य की ओर अपना इशारा तों दे ही दिया है। भाजपा के स्वयंभू बड़बोले नेताओं पर लगाम लगाई जानी मुश्किल है। क्योंकि यह नरेन्द्र मोदी से भी अधिक बड़े अहंकारी हैं। वस्तुस्थिति भी कुछ ऐसी है सांसद और विधायक निधियों ने प्रत्येक नेता को शक्तिशाली बना दिया है। यही कारण है कि प्रत्येक नेता अपने–आपको देश का बहुत बड़ा शुभचिन्तक समझ रहा है और केन्द्रीय नेतृत्व के विरुद्ध भी बोल रहा है। यदि भाजपा में सुधार नहीं हुआ, नेताओं ने आत्मसंयम नहीं रखा तो दिल्ली के परिणाम भी कर्नाटक जैसे ही हो सकते हैं। भ्रष्टाचारी व्यक्तियों को और बड़बोले स्वयंभू नेताओं को भाजपा को अपने से दूर कर देना ही

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उचित होगा। जनता जानती है कि भाजपा में ऐसे नेता है जो एक दूसरे की जड़ काटने में गौरव अनुभव करते हैं तथा अयोध्या राम मन्दिर में जाकर मन्दिर यही बनेगा कहते है तथा बाहर निकलकर फैजाबाद में आकर धर्म निरपेक्षता की बात करते हुए, अल्पसंख्यकों के तुष्टिकरण की बात करते हैं।

काँग्रेसी सरकार में घोटालों की यह रेल कहाँ रूकेगी इस रेल में ब्रेक हैं भी या नहीं, इस रेल का कोई ड्राइवर भी है या नहीं इस पर संशय होता है। अनगिनत घोटाले हो चुके हैं और नये-नये घोटाले रोज सामने आ रहे हैं। राष्ट्रमण्डलीय खेलों में घोटाला, टू जी स्पैक्ट्रम में घोटाला, हाऊसिंग सोसायटी में घोटाला, बैंकों में घोटाला, एन.जी.ओ. में घोटाला, कोयला आवंटन में घोटाला, रेल घोटाला, रक्षा सौदों में घोटाला, हैलीकाप्टर खरीद में घोटाला और आगे आने वाले काफी घोटाले इस बात का सबूत हैं कि लगभग 80 प्रतिशत सत्ता के शीर्ष पर बैठे हुए व्यक्ति घोटालों में लिप्त है। आलाकमान के दामाद पर घोटाले का आरोप एक गम्भीर बात है लेकिन काँग्रेस की एकता और हठधर्मिता के फलस्वरूप सभी घोटाले ठण्डे बस्ते में बँध जाते हैं। सरकार ने सी.बी.आई. तक को अपनी मुट्ठी में कर लिया है और वह चाहती है कि सी.बी.आई. सरकारी घोटालों में जाँच करे तो उसका परिणाम सत्ता पक्ष में हो इसलिए उसका प्रयास रहता है कि सी. बी.आई. की प्रत्येक जाँच में टाँग अड़ाई जाए और इसी प्रकार वह टाँग अड़ाने के खेल में व्यस्त रहती है, यह उसकी एकता है, कि राबर्ट बढेरा का नाम जब आया तब उसके पक्ष में देश के सारे नेता और मंत्री प्रवचन करने लगे। राबर्ट बढेरा ने कुछ नहीं कहा वह तो एक प्रकार से चुप रहे, उन्होंने कोई स्पष्टीकरण तथाकथित घोटालों के विरुद्ध नहीं दिया। लेकिन आलाकमान के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी चहेते मंत्री राबर्ट वढेरा के पक्ष में खड़े हो गये और उनके स्पष्टीकरण की बजाय मंत्रियों ने उनकी तरफ से स्पष्टीकरण देने आरम्भ कर दिये। प्रत्येक घोटाला, जो केन्द्रीय सरकार से सम्बन्धित है, उस पर कोई सी.बी.आई. जाँच नहीं होगी और अगर होगी भी तो परिणाम कोयला आवंटन घोटाले जैसा होगा। देश में सर्वोच्च न्यायालय ने न्यायिक प्रक्रिया को जीवित रखने का और घोटालों को समाप्त करने का जो प्रयास किया है वह प्रशंसनीय है। ईश्वर सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्तिगण को और अधिक शक्ति प्रदान करें वह और अधिक मुखर होकर बोल सके तभी देश का उद्धार हो सकता है वर्ना वर्तमान केन्द्रीय सरकार ने तो घोटालों को ही सत्य शिव और सुन्दर मान लिया है।

मैं बहुत समय से लिख रहा हूँ कि क्रिकेट पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाना चाहिए। क्रिकेट से न जनहित होता है, न देशहित, न समाजहित। केवल मोटे–मोटे पैसे कुछ लोगों की जेबों में चले जाते हैं। क्रिकेटर हारे या जीते, उसे कई करोड़ प्रत्येक खेल में मिल जाते हैं। पहले आयोजित आई0पी0एल0 खेलों में मोदी जी सुर्खियों में आये थे और उनके नाम पर बहुत बड़ा क्रिकेट घोटाला चस्पा किया गया था लेकिन वह चुपचाप जाकर लन्दन में बैठ गये और ललित मोदी के नाम का घोटाला ठण्डे बस्ते में बाँध दिया गया। अब पुनः क्रिकेट में मैच फिक्सिंग की खबर आई है। तीन क्रिकेट के खिलाड़ियों ने बड़ा–बड़ा फिक्सिंग किया और तीनो पकड़े गये। क्रिकेटरों का मुँह काला नहीं हुआ। क्योंकि उन्होंने तो इतना पैसा फिक्सिंग में कमा लिया है कि धो–पोछकर ठीक हो जाएंगे लेकिन देश का मुँह काला हो गया और यह बात पूरे विश्व में फैल गई। जिस खेल में खुलेआम बेईमानी हो रही है, जिस खेल को अमेरिका, जापान, चीन,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मनी, पसन्द नहीं करते। जिसमें खुलेआम बेईमानी होती है, उसको सरकार प्रतिबन्धित क्यों नहीं कर रही, स्पष्ट है कि या तो सरकार के हित निहित हैं अथवा उन लोगों को भी करोड़ों की आय होती है जो क्रिकेटरों का चयन करते हैं अथवा आई0पी0एल0 जैसे मैचों का आयोजन करते हैं तथा अपनी क्रिकेट टीम को लेकर विदेश जाते हैं। यदि सरकार से सम्बद्ध लोगों का हित नहीं है, और उन्हें क्रिकेट से काले धन की प्राप्ति नहीं है, तो ऐसे खेल पर प्रतिबन्ध क्यों नहीं लगा दिया जाता, जिससे कोई जनहित नहीं हो रहा। कोई समाजहित नहीं हो रहा। कोई देशहित नहीं हो रहा। आज तक किसी भी क्रिकेटर ने सूखाग्रस्त इलाकों में किसी तालाब का निर्माण नहीं कराया, कोई टयूबवैल नहीं लगवाया, कोई कुआँ नहीं खुदवाया। सब पैसा अपने ऊपर खर्च कर दिया। जो मैच फिक्सिंग में पकड़ा जाता है, उसे जेल जाना पड़ता है, जो पकड़ा नहीं जाता वो ऊँचा खिलाड़ी बन जाता है, उसे पदम् सम्मान मिलता है। क्रिकेट के भगवान अवतरित हो गये हैं यानि बड़े–बड़े आश्रमों के सन्त महन्त जिस प्रकार अपने–आपको भगवान कहलाने लगे हैं उसी प्रकार क्रिकेट के भगवान भी स्वयंभू अवतरित हुए हैं। यदि निष्पक्ष जाँच सी0बी0आई0 से कराई जाए तो क्रिकेट के कई बड़े घोटाले सामने आ सकते हैं। पिछले दिनों जब भारत पाकिस्तान का मैच हुआ था। तब फिक्सिंग की स्थिति यह थी कि यह खबर तक प्राप्त हो गई थी कि कौन सी टीम जीतेगी और कितने रन अथवा विकेट से जीतेगी ये फिकिंसग नहीं तो क्या है। आजकल बच्चे पढ़ने की बजाय क्रिकेट खेल रहे हैं। क्रिकेट का मैच देखने के लिए लोग दफ्तरों में काम करना बन्द कर देते हैं, बच्चे पढ़ाई की उपेक्षा करने लगते हैं। आई0पी0एल0 मैच के दौरान यह तथ्य भी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामने आया था कि महाराष्ट्र जहाँ सूखा पड़ा हुआ है, वहाँ क्रिकेट का पिच साफ सुथरा रखने के लिए लाखों टन पानी बहाया जा रहा है। देश में जिस स्थान पर पीने के पानी की दिक्कत है, पीने का पानी दुर्लभ है वहाँ पर क्रिकेट के पिच पर लाखो टन पानी बहाना, प्यासे लोगों की मृत्यु पर जश्न मनाने के समान है। ऐसा नहीं है कि ईश्वर ने आँख बन्द कर रखी हैं। ऐसा नहीं है कि भगवान इन सब बातों से बेखबर है। सभी को परिणाम भुगतने पड़ेंगे, जो क्रिकेट के नाम पर लाखों का घोटाला कर रहे हैं, मैच फिक्सिंग कर रहे हैं और महाराष्ट्र के प्यासे लोगों का मजाक उड़ा रहे हैं। भगवान के न्याय में देर हो सकती है, अँधेर नहीं हो सकता अतः पापिष्ट तैयार रहे, भूकम्प फिर आ सकता है, सुनामी भी आ सकती है और चक्रवात भी आ सकते हैं। यदि क्रिकेट पर प्रतिबन्ध नहीं लगा तो वह सबकुछ हो सकता है, जो ईश्वर चाहता है, लेकिन घोटालेबाज नहीं चाहते।

□□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–14

आखिर केन्द्र की काँग्रेस सरकार को श्री नारायण दत्त तिवारी की याद आई। श्री नारायण दत्त तिवारी, जो काँग्रेस के सशक्त और सबसे पुराने सदस्यं हैं। उनको केवल मुख्यमंत्री और राज्यपाल बनाकर संतुष्ट करने का प्रयास किया गया और काँग्रेस का सच्चा सिपाही होने के नाते श्री तिवारी जी ने भी जो भी मिला उसे स्वीकार कर लिया। श्री नारायण दत्त तिवारी अपने अनुभव, सक्रियता और आयु के हिसाब से राष्ट्रपति पद पर विराजमान होने चाहिए थे अथवा देश का प्रधानमंत्री अथवा उसके समकक्ष बनाया जाना चाहिए था किन्तु उन्हें स्व0 इन्दिरा गाँधी जी के बाद से लगभग उपेक्षित ही रखा गया। इस समय श्री नारायण दत्त तिवारी की याद आना काँग्रेस के लिए हितकर है। देर आयद दुरुस्त आयद के सिद्धान्त पर कार्य किया गया है। मेरा मानना है कि श्री तिवारी जी की राजनीति में सक्रिय वापसी के पश्चात अवश्य ही काँग्रेस को लाभ होगा। काँग्रेस जिसका सवर्ण जनाधार कम हो रहा है, वह बढ़ सकता है। श्री नारायण दत्त तिवारी की मान्यता बहुसंख्यक तथा अल्पसंख्यक दोनों में समान रूप से है। वह जब–जब भी उत्तर प्रदेश अथवा उत्तराखंड के मुख्यमंत्री रहे हैं, समाज के दोनों के वर्गो ने उन्हें स्नेह, सम्मान और आदर दिया है। यदि काँग्रेस सरकार श्री नारायण दत्त तिवारी को सम्मानजनक पद प्रदान करती है, तो यह श्री नारायण दत्त तिवारी का सम्मान नहीं होगा बल्कि स्वयं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काँग्रेस का सम्मान होगा। देशभक्ति की भावना का सम्मान होगा। देश के एक सच्चे सिपाही का सम्मान होगा। मैंने प्रधानमंत्री जी को इस सम्बन्ध में एक पत्र लिखा था और पुनः एक पत्र आज लिखा है कि श्री नारायण दत्त तिवारी जी को यथोचित सम्मान सहित ऐसे पद/स्थान पर स्थापित किया जाना चाहिए, जिससे काँग्रेस की डूबती हुई साख को सहारा मिल सके। आज भी देश में राष्ट्रीय स्तर की केवल दो ही पार्टियां हैं– एक काँग्रेस और दूसरी भाजपा, भाजपा अपने अर्न्तकलह से त्रस्त है और अन्य पार्टियाँ केवल दबाव की राजनीति करती हैं। वह केन्द्र में सरकार को समर्थन तो देती है, लेकिन उसके बदले में जो उनकी महत्वकांक्षाएँ हैं, वह देशहित में नहीं है। वैसे भी त्रिशंकु सरकार कोई लाभ समाज का नहीं कर सकती। वर्तमान में हम देख रहे हैं कि जो दल सरकार को समर्थन दे रहे हैं, वही सरकार की आलोचना भी कर रहे हैं, ऐसे दोहरे मुखौटों वाले दलों से बचकर यदि काँग्रेस बहुमत में आ जाती है तो इसका श्रेय श्री नारायण दत्त तिवारी को जायेगा क्योंकि उनके अलावा ऐसा कोई नेता काँग्रेस में नहीं है, जो काँग्रेस की डूबती हुई नाव को किनारे तक ला सके। काँग्रेस के अहंकारी नेताओं को श्री नारायण दत्त तिवारी की विद्वता, क्षमता तथा देशभक्ति की भावना का सम्मान करना चाहिए।

वर्तमान में ज्वलंत मुद्दा मैच फिक्सिंग का है। मैं बहुत समय से कहता आया हूँ कि क्रिकेटर का शतक बनता है तो देश हारता है। मैंने कई बार यह कहा कि इस सम्बन्ध में जाँच होनी चाहिए लेकिन क्रिकेटर, क्रिकेट के खिलाड़ियों तथा क्रिकेट के आयोजकों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की पहुँच हाईकमान और प्रधानमंत्री तक है इसलिए क्रिकेट समाज के, देश के हित में न होते हुए भी प्रतिबन्धित नहीं हुई है। मैच फिक्सिंग में किस–किसका हिस्सा होता है, यह तो जाँच से ही पता चल सकता है लेकिन अगर सबका हिस्सा नहीं होता तो क्रिकेट अब तक प्रतिबन्धित हो गई होती। क्योंकि कोई भी महत्वपूर्ण देश जैसे, चीन, अमेरिका, जापान, जर्मनी व रूस क्रिकेट नहीं खेलते हैं, यह केवल अँग्रेजों की गुलामी में रहे देश ही क्रिकेट को सर पर उठाये फिर रहे हैं। पहले आई0पी0एल0 कमिश्नर पर भी दाग लगे थे और वह देश छोड़कर चले गये थे लेकिन इस बार ऐसा नहीं होगा। इस बार आई0पी0एल0 कमिश्नर प्रधानमंत्री जी के खास है अतः काँग्रेस उनका बचाव वैसे ही करेगी जैसे राबर्ट बढेरा, सलमान खुर्शीद आदि का किया गया है। बी0सी0सी0आई0 चीफ के दामाद पकड़े जा चुके हैं, पूछताछ चल रही है। यदि आई0पी0एल0 कमिश्नर को कोई लालच नहीं है तो किस कारण खेलों का आयोजन हो रहा है, जिसमें समाज कोई लाभ नहीं पहुँचता, देश का कोई हित सिद्ध नहीं होता, केवल आई0पी0एल0 चैम्पियन को 10 करोड़ का भुगतान किया जाएगा। एक महीने के खेल में यदि 10 करोड़ का ईनाम मिल जाए तथा प्रतिदिन खेलने की फीस अलग से मिले, सैर, तफरीह, खाना–पीना फ्री में रहे तो क्रिकेटर को क्या हानि हो सकती है। साथ में जब भण्डारा चलता है, तो उसमें सभी को खाना मिलता है बड़े–बड़े मन्दिरों में भण्डारा होता है उसमें साधु–महात्माओं के साथ–साथ भण्डारे के आयोजक भी भोजन करते हैं। फिक्सिंग सिद्ध हो जाने के बाद भी बी0सी0सी0आई0 चीफ त्याग पत्र देने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को तैयार नहीं है, बल्कि शेर की तरह दहाड़ रहे हैं, और आई0पी0एल0 कमिश्नर के तो त्याग पत्र देने का प्रश्न ही नहीं उठता, स्पष्ट है कि भले ही 25 मई को नक्सलियों द्वारा किया गया नर–संहार कितना ही लोमहर्षक क्यों ना हो, कितने ही भले मानुषों की हत्या क्यों ना कर दी गई हो, क्रिकेट का जश्न ऐसे ही चलता रहेगा। कहना नहीं चाहता लेकिन आप समझ गये होंगे कि जश्न का मंतव्य क्या है। कितना दुखद लगता है कि अखबार के एक कालम में मुखपृष्ठ पर नक्सलियों द्वारा किये गये नरसंहार की खबर छपती है और दूसरी ओर क्रिकेट के अंतिम निर्णायक मैच की खबर छपती है। यानि हम इतने बड़े नरसंहार के बाद एक दिन के लिए भी क्रिकेट को स्थगित नहीं कर सकते। जबकि अगर किसी और देश में ऐसा नरसंहार हुआ होता तो कम से कम पूरा देश शोभग्रस्त हो गया होता और मनोरंजन के सब कार्य स्थगित हो गये होते लेकिन जय हो हिन्दुस्तान की यहाँ भले ही कुछ भी हो जाए लेकिन क्रिकेट खेलना बन्द नहीं होगा क्योंकि इसमें उन लोगों के हित जुड़े हुए हैं, जिनको काँग्रेस सरकार छू नहीं सकती।

नक्सली नरसंहार अपने–आपमें एक्र विचित्र घटना है देश के लोग ही देश के लोगों को मार रहे हैं। बाहर के आतंकवाद से तो हम लड़ सकते हैं, लेकिन घर के गद्दार नक्सलियों से लड़ना बहुत मुश्किल है क्योंकि सरकारी विभागों में ऐसे बहुत से लोग होंगे, जिनके नक्सलियों से निकट सम्बन्ध होंगे। इस परिवर्तन यात्रा में भी अवश्य ही किसी ने मुखबिरी की होगी अवश्य ही काफिले के पहुँचने का समय नक्सलियों को पता होगा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तभी इतना सटीक हमला सम्भव हो सका। यह समस्या कितने वर्षो से चल रही है और अब तक हल क्यों नहीं हुई। क्योंकि सरकार के तार भी नक्सलियों से जुड़े हुए हैं बल्कि यह कहिये सरकार ही नक्सलियों के समर्थन पर चल रही है। नक्सलियों को मुख्यधारा में लाने की बात करना समस्या से मुँह मोड़ने के समान है। यदि नक्सलियों को मुंख्यधारा में लाने की बात थी तो अब तक प्रयास क्यों नहीं किये गये। उनके लिये सेना में भर्ती क्यों नहीं खोली गई। उनकी एंक अलग से बल बनाकर सीमाओं पर क्यों तैनात नहीं किया गया। उनको वहाँ से क्यों नहीं निकाला गया। जहाँ पर वह छिपे रहते हैं। नक्सलवादी समस्या का एक मात्र हल फौज का अभियान चलाकर उनको नष्ट कर देना है अब नक्सलवाद को नष्ट करने की बात करना बेकार है, अब नक्सलवादियों को नष्ट करना आवश्यक है क्योंकि इस अभियान में स्त्री–पुरुष दोनों जुड़े हुए हैं, स्पष्ट है कि उनके बच्चे भी होंगे और जब नक्सली माता–पिता के बच्चे जन्म लेंगे तो वह भी नक्सली ही होंगे अतः नक्सलवादियों का सफाया आवश्यक हैं, नक्सवाली देशद्रोही है, गद्दार है, इनके साथ मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाना, इनके साथ कोई रियायत करना केवल समस्या को टालना हो सकता है अन्यथा कुछ भी नहीं। एक बार अँग्रेजों के शासनकाल में ठगो ने बड़ा आतंक मचाया हुआ था। उस समय अँग्रेजों ने एक अभियान चलाकर सभी ठगो को नष्ट कर दिया था। तब से अब तक उस प्रकार की ठगी की समस्या उत्पन्न नहीं हुई इसी तरह से यदि फौजी अभियान चलाकर एक बार सब नक्सलियों को मार गिराया जाए तो यह देशहित में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा। भले ही गेहूँ के साथ घुन क्यों ना पिस जाए। नक्सलियों को सफाया उन मृतात्माओं को सच्ची श्रद्धांजलि होगी, जिनके प्राण नक्सलियों ने कीड़े–मकोड़ों की तरह नष्ट कर दिए। यह तथ्य भी विचारणीय है कि जब नक्सली इस प्रकार के हमले करते रहते हैं तो परिवर्तन यात्रा को समुचित सुरक्षा क्यों नहीं प्रदान की गई। यदि परिवर्तन यात्रा के साथ डेढ–दो हजार पुलिसकर्मी होते तो शायद यह घटना ना होती। यह तथ्य भी समाचार पत्रों में उजागर होना चाहिए कि इस अभियान में कितने सुरक्षाकर्मी अथवा सरकारी सशस्त्र बल के सैनिक मारे गये। व्यापक जाँच और कठोर अभियान ही इस समस्या का हल है। अन्यथा होनहार नेता, देशभक्त इसी प्रकार मारे जाते रहेंगे और हम क्रिकेट खेलते रहेंगे।

□□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–15

नक्सलियों ने घात लगाकर हमला किया। बहुत अधिक संख्या में लोग मारे गए, जिन्हें वह मारना चाहते थे वह भी मारे गए और काफी संख्या में निर्दोष भी मारे गए। यह हमला काँग्रेस की रैली पर किया गया था। हमले की योजना भी सुनिश्चित थी। रैली का रास्ता भी निश्चित था, लेकिन कोई रैली में सम्मिलित व्यक्ति ही नक्सलियों को रैली की पल–पल की सूचना दे रहा था। रास्ता भी उसी के कहने पर बदला गया। वस्तुतः नक्सलवादियों को स्थानीय लोग ही संरक्षण दे रहे हैं। उनकी सहायता कर रहे हैं। उनको धन दे रहे हैं और उनको हमले के लिए उकसा रहे हैं। केवल मात्र नक्सली ही दोषी नहीं है। वे सब दोषी है, जो नक्सलियों की सहायता करते हैं। उन्हें मुख्यधारा में आने से रोकते हैं। एक बार जब व्यक्ति नक्सली बन जाता है तो उसकी सोच बदल जाती है। उसे बिना कुछ करे मौज मारने की आदत पड़ जाती है। लूटना–खसोटना, धन व स्त्रियों की उपलब्धता। फिर उसे कुछ और करने से रोकती है और यही कारण है वह मुख्यधारा में नहीं आना चाहता। सरकारी कर्मचारी को, मजदूर को पूरे एक महीने काम करने के बाद वेतन मिलता है और तब वह अपने लिए कुछ संसाधन जुटा पाता है। लेकिन नक्सली की बंदूक की एक गोली का डर उसे रोज पैसा उपलब्ध करा देता है और वह अपनी मर्जी का जीवन मरने तक जीता रहता है। कोई ठोस प्रयास आज तक नक्सलवाद को समाप्त करने का नहीं किया गया। किस कारण से नक्सलवाद पनप रहा है इस पर कोई विचार नहीं हुआ। समाचार पत्रों के अनुसार आदिवासियों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर अत्याचार किये गए। उनकी जमीनें छीन ली गई, उनकी स्त्रियों का अपहरण कर लिया गया, उनके बच्चों को बन्धुआ मजदूर बनाया गया और वनों की वह उपज जिससे उनका जीवन यापन होता था। वह उनसे छीन ली गई। क्योंकि वन काट दिये गए, जंगल काट दिये गए और उन पर सरकारी तथा गैर सरकारी व्यक्तियों का कब्जा हो गया। अगर ठोस कार्य किये जाते नक्सलियों में विश्वसनीयत उत्पन्न की जाती तब नक्सलवादियों को मुख्यधारा में लाया जा सकता था, लेकिन ऐसा कुछ नहीं किया गया। कोई उद्योगधन्धे नक्सलियों के क्षेत्र में स्थापित नहीं किये गए। नक्सली युवकों को रोजगार नहीं दिये गए। उन्हें खेती के लिए जमीनें नहीं दी गई। ऐसा कोई कार्य नहीं किया गया, जिससे वह मुख्यधारा में आ सके। यदि नक्सलियों को सेना में भर्ती करने का कदम उठाया गया होता, उन्हें पुलिस में भर्ती किया गया होता एक–एक व्यक्ति को चुनकर रोजगार दिया गया होता। उनके बच्चों को बन्धुआ होने से बचाया गया होता। उनकी स्त्रियों का अपहरण रोका गया होता। उन्हें रहने के लिए घर दिया गया होता तो नक्सलवाद समाप्त हो सकता था। क्योंकि प्रत्येक आदमी घर चाहता है। अपनी सुरक्षा चाहता है। नक्सलवादियों पर अत्याचार होते रहे और सरकार देखती रही। एक ओर तो अत्याचारियों को बढ़ावा देती रही और दूसरी ओर नक्सलवादियों की भी सहायता करती रही। शासन में ही ऐसे बहुत से लोग विद्यमान रहते हैं, जो वासना के भूखे होते है, जो अपने घरों में बन्धुआ मजदूर रखते हैं। ऐसे लोगों पर कड़ी नजर रखी जाती और कड़ी कार्यवाही की जाती तो नक्सलवाद समाप्त हो सकता था। लेकिन असुरक्षा की भावना ही बढ़ती गई और इसी कारण नक्सलवाद फैलता गया। अब भी समय है यदि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नक्सलवादियों में उनकी सुरक्षा के प्रति विश्वसनीयता उत्पन्न की जाये, उनको रोजगार दिया जाये, उनके बच्चों व औरतों का अपहरण न हो। उन्हें खेती की जमीनें दी जाये उन्हें घर दिए जाये तो नक्सलवाद रूक सकता है। अन्यथा यह कैंसर की तरह फैल रहा है और एक दिन दिल्ली को भी अपनी चपेट में ले लेगा।

नक्सलवाद की तरह से ही एक और कैंसर भारतवर्ष को लपेट रहा है। देश को खोखला कर रहा है। देश की छवि को खराब कर रहा है और वह एक पाप की तरह सर पर चढ़कर बोल रहा है और वह है क्रिकेट। अब जबकि यह साबित हो चुका है कि चयन प्रक्रिया में भी कुछ लोगों का दखल होता है और इसमें भी फिक्सिंग चलती है तथा स्पॉट फिक्सिग में लिप्त लोग पकड़े गए हैं तब क्रिकेट कोई गौरव का खेल नहीं रह गया। वैसे भी क्रिकेट ऐसे देशों का खेल है जहाँ काम कम और पैसा अधिक है तथा जो देश पूर्ण विकसित हो चुके हैं। उन देशों के लिए जिनमें भारतवर्ष भी सम्मिलित है। जहाँ सड़के ठीक नहीं है, जहाँ वांछित पुल नहीं बने है, जहाँ फ्लाई ओवर बनने हैं। नई रेल लाईन बिछनी है। उद्योग धन्धे बन्द पड़े हुए हैं। वहाँ पर क्रिकेट का खेल पाप के अतिरिक्त कुछ नहीं है। अभी 185000 डॉलर जीतने वाली टीम को दिए गए है। जो कुछ लोगों की जेबों में जाकर दफन हो जायेंगे। यदि इतना पैसा देश के विकास में लगाया जाये तो नई सड़कें बन सकती हैं। नये अस्पताल खुल सकते हैं। शिक्षा के नये स्रोत स्थापित हो सकते हैं। क्रिकेट में केवल जुआ है और जब हम सड़क पर जुआ खेलने वालों को पकड़ते हैं तो क्रिकेट में सट्टा करने वालों को फिक्सिग करने वालों को वही सजा क्यों नहीं दी जाती। श्रीमान धोनी जी प्रत्येक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न के उत्तर में खामोश रहे। स्पष्ट है कि कहीं न कहीं उन पर भी दाग लग सकता है। आईपीएल कमिश्नर जिन्होंने त्याग पत्र दे दिया वह प्रधानमंत्री के करीब हैं। श्रीनिवासन को क्या लालच है कि वह इतनी बदनामी के बाद भी त्याग पत्र नहीं दे रहे हैं। क्या क्रिकेट के अतिरिक्त और कोई काम हमारे देश में सफलतापूर्वक नहीं हो सकता। जो धन व समय क्रिकेट में बरबाद होता है उसका सद्उपयोग अन्यत्र भी तो किया जा सकता है। यदि देश में क्रिकेट में प्रतिबंध लगा दिया जाये तो देश के विकास में गति आ सकती है। देश की प्रगति हो सकती है। देश बदनामी से बच सकता है।

लगता है कि भारतवर्ष के भाग्य में केवल काँग्रेस ही लिखी है। क्योंकि और कोई विकल्प नजर नहीं आता। भाजपा में अर्न्तकलह और भीतरघात जारी है। सपा, बसपा, तृणमूल काँग्रेस राष्ट्रीय काँग्रेस, शिव सेना आदि केवल स्थानीय दल हैं जो त्रिशंकु सरकार बनाने में तो सहायक हो सकते हैं लेकिन अपने दम पर सरकार नहीं बना सकते। जनता की दृष्टि इस बार भाजपा की ओर थी, लेकिन लगता है कि यह दृष्टिभ्रम सिद्ध हो जायेगा। श्री अभिमानी जी नेतृत्व के मुद्दे पर भाजपा के विरुद्ध बोल रहे हैं। रोज नई–नई बात उत्पन्न करते हैं। सम्भवतः वह चाहते है कि हम तो डूबे हैं सनम तुमको भी ले डूबेंगे। श्री अभिमानी जी उन व्यक्तियों में से हैं जो यदि स्वयं कुछ न बन सके तो दूसरे को भी कुछ नहीं बनने देना चाहते। भले देश का बंटाधार हो जाये, भले ही भाजपा नेपथ्य में चली जाये, लेकिन उनका अनर्गल प्रलाप और अहंकार भरे स्वर बंद नहीं होने चाहिए। अपने–आपको सबसे बड़ा देशहित चिन्तक और भाजपा का कर्णधार समझने वाले श्री अभिमानी जी भाजपा की लुटिया डुबोने के लिए प्रत्येक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्भव प्रयास कर रहे हैं। व्यक्तिगत स्वार्थ के अलावा वह न हिन्दू के हैं और न ही मुसलमान के हैं। भाजपा के अन्दर भी वह फूट डालों और राज करों की नीति पर चल रहे हैं। इसलिए राष्ट्रीय अध्यक्ष के विरुद्ध भी प्रवचन करते रहते हैं। भाजपा अहंकार में डूब रही है और किसी से भी सबक लेना नहीं चाहती। काँग्रेस में एक नेता, एक निर्णय का सिद्धांत सर्वविदित है। सपा में मुखिया जी के अलावा अन्य कोई नेता नहीं है। बसपा में केवल मात्र बहनजी ही प्रधानमंत्री की उम्मीदवार हैं तथा द्रमुक, अन्ना द्रमुक, तृणमूल काँग्रेस और राकांपा सबमें क्रमशः करुणानिधि, समादरणीय जयललिता जी, समादरणीय ममता जी तथा शरद पंवार जैसे एकमात्र नेता है। ऐसे किसी भी दल में नेता पर कोई मतभेद नहीं है। यह केवल भाजपा ही है, जिसमें हर व्यक्ति नेता बना हुआ है। हर व्यक्ति एक दूसरे की बात काटने को तत्पर है। नाव को कोई भी किनारे पर नहीं लगाना चाहता। सब एक दूसरे की आलोचना में लगे हुए हैं। मैं श्री शिवराज चौहान की प्रशंसा करता हूँ। जिन्होंने श्री अभिमानी जी के नरेन्द्र मोदी विरोधी वक्तव्य का समर्थन नहीं किया। भाजपा को यदि राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनानी है तो भीतरघात को रोकना होगा। रामजेठमलानी और श्री अभिमानी जैसे व्यक्तियों को बाहर का रास्ता दिखाना होगा। अन्यथा केन्द्र में भी हाल वही होगा जो कर्नाटक में हुआ है और जनता को यह सोचने को विवश होना पड़ेगा कि जिस पार्टी में मतैक्य नहीं है। वह देश का क्या भला करेगी।

□□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–16

सत्य किसी को रुचिकर नहीं होता। क्योंकि कड़वा होता है। अतः सत्य के विरोध में केवल बुद्धिजीवियों को छोड़कर निस्वार्थ व्यक्तियों के अलावा सभी एकजुट होकर खड़े हो जाते हैं। बिजली का निजीकरण एक ऐसा सत्य है, जो कई सत्यों को जन्म देगा। भारतवर्ष के प्रत्येक ग्राम, प्रत्येक नगर में बिजली का निजीकरण होते ही हर समय बिजली मिलने लगेगी। बिजली और खम्भे सुरक्षित रहेंगे। वोल्टेज ऊँचा–नीचा नहीं होगा। ग्राहकों को सुविधा हो जाएगी। कम या अधिक राशि के बिल नहीं आयेंगे। बीच–बीच में बिजली गायब नहीं होगी। कार्यालयों में काम होगा। दोष होने पर उसका निवारण तुरन्त होगा, लेकिन सरकारी कर्मचारी निजीकरण के पक्ष में नहीं है। क्योंकि यह उनके हित में नहीं है। उन्हें मुफ्त में 24 घण्टे बिजली मिलती है। कार्यालय में काम करने या न करने में पूरी छूट होती है। हर काम में सुविधा शुल्क चलता है। ग्राहक को परेशान करने के लिए कम अधिक बिल जारी होते रहते हैं। महत्वपूर्ण उद्योगधंधों को अनुग्रह के विरुद्ध जनसाधारण की बिजली काटकर आपूर्ति कर दी जाती है। पहले मीटर के साथ भी छेड़छाड़ होती थी। अब होती है या नहीं ज्ञात नहीं है। बिजली दफ्तर के कर्मचारी अपने वेतन में से चौथाई पर एक सहायक को गैर सरकारी तौर पर रख लेते हैं और वह काम करता रहता है। मुख्य कर्मचारी आराम करते हैं। बिजली का कनेक्शन काटने के लिए समस्त कार्यवाही कर देने के बाद भी स्थाई विच्छेदन नहीं होता और बिल आता रहता है। ग्राहक दौड़ता रहता है। लाईन में दोष आ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने पर वह तुरन्त ठीक नहीं होता। कर्मचारी कभी–कभी काम टाल देते हैं। कामचोर कर्मचारियों का सरकारी नौकरियों में मजा है। काम करने वाले कर्मचारी थोड़े होते हैं। इसलिए निजीकरण का विरोध हो रहा है, कि काम चोर कर्मचारी पर पाबंदी लग जायेगी। लाभदायक उद्योग धंधों को जनता की बिजली काटकर आपूर्ति करना बंद हो जायेगा। गैर सरकारी सहायक कर्मचारी नहीं रखे जा सकेंगे। लाईन में दोष होने पर तुरन्त ठीक करना होगा। बिजली कर्मचारियों का महत्व घट जायेगा। निजीकरण में कामचोर कर्मचारियों को कोई स्थान नहीं होता। सुविधा शुल्क के लिए अनुमति नहीं होती। कार्य मेहनत से निर्धारित समय में कुशलतापूर्वक करना पड़ता है। सरकारीकरण में यह सब सुविधाएँ हैं। कर्मचारी यदि कामचोर है तब भी निभ जाता है। समय से आने–जाने पर भी सरकारीकरण में इतनी सख्ती नहीं होती, जितनी निजीकरण में होती है। निजीकरण में कोई भी काम अगले दिन पर नहीं टाल सकते। ग्राहकों के साथ भेदभाव नहीं कर सकते। गलती करने पर कर्मचारी को सजा निजीकरण में जल्दी और सख्त मिलने की सम्भावना होती है। जबकि सरकारीकरण में केवल क्षमा याचना करने से ही काम चल जाता है। सरकारीकरण में ग्राहकों का विशेष महत्व नहीं है। जबकि निजीकरण में प्रत्येक ग्राहक का महत्व होता है। गलत बिल जारी करने पर सजा का प्राविधान है। जहाँ बिजली उत्पादन होता है वहाँ पर भी निजीकरण करने से लाभ होगा। सरकारीकरण में बिजली का पूरा उत्पादन बाधित रहता है। ऐसा क्यों होता है इसका कोई पता नहीं चलता। क्योंकि सभी सरकारी कर्मचारी होते हैं और सभी का साम–दाम–काम में बराबर का हिस्सा होता है। यह उचित रूप से समझ में नहीं आता कि कर्मचारियों को निजीकरण में क्यों आपत्ति है। केवल कामचोरी करने, सुविधा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुल्क की सुविधा होना, मुफ्त क्वार्टर व बिजली मिलता ही यदि कारण है तो इनका निराकरण हो सकता है। किन्तु निजीकरण होना चाहिए। मेरा कहना है कि निजीकरण बिजली में ही नहीं रोजवेज तथा रेल दोनों में होना चाहिए। दोनों की कार्यशैली पर प्रभाव पड़ेगा यात्रियों की सुविधाएँ बढ़ जायेगी और विभागीय सामान की चोरियाँ घट जाएँगी। रेल में बिना टिकट सवारी कोई नहीं कर सकेगा। अतः निजीकरण वस्तुतः आवश्यक है यदि हम पूरी सुविधा जनता को देना चाहते हैं तो।

कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। प्रत्येक केन्द्र सरकार कहती है। सुनने में अच्छा लगता है किन्तु क्या वास्तव में ऐसा है। क्या वस्तुतः काश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। मेरे विचार से जब तक यह प्रश्न हल नहीं हो जाते तब तक कश्मीर को भारत का अभिन्न मानना सत्य के साथ धोखा करना है। कश्मीर में धारा 370 लगी हुई है। मुख्य प्रश्न यह है कि यदि भारत के अन्य प्रान्तों में धारा 370 नहीं है तो कश्मीर में क्यों है। जब–तक कश्मीर में धारा 370 प्रभावी है। तब–तक हम कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग कैसे मान सकते हैं। केन्द्र में काँग्रेस से लेकर भाजपा तथा अन्य मिली–जुली सरकारें आयी। किसी ने भी धारा 370 नहीं हटायी। क्यों? धारा 370 क्यों लगाई गई थी? क्या कारण था कि धारा 370 लगाकर भारत के नागरिकों को प्रतिबन्धित कर दिया गया? कश्मीर से कश्मीरी पंडितों को बाहर कर दिया गया और वह आज तक दिल्ली में कैम्पों में रह रहे है। अगर कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है तो कश्मीरी पंडितों को पुनः कश्मीर में क्यों नहीं बसाया गया? क्यों उनकी सुरक्षा के पूरे इन्तेजाम नहीं किये गए? कश्मीर में आज भी वहाँ के नागरिकों को अनाज, चीनी, तेल रियायती दर पर मिलता है। यह रियायत अन्य प्रान्तों को क्यों नहीं है? भाजपा ने लाल चौक पर तिरंगा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झण्डा फहराना चाहा। किन्तु उसको ऐसा करने की अनुमति नहीं दी गई। आज भी आतंकवाद कश्मीर पर हावी है। दिन–दहाड़े आतंकी हमले होते रहते हैं। और आतंकवादियों को फांसी देने पर विरोध आरम्भ हो जाता है। कश्मीर में एक साथ कई सरदार परिवारों की हत्या कर दी गई। सरकार कुछ नहीं कर सकी। भारतवर्ष जैसा देश जिसके पास इतनी बड़ी फौज है कि वह किसी भी देश के साथ मुकाबला करने में सक्षम है। कश्मीर में आतंकवादियों को नियंत्रित क्यों नहीं कर पा रही? क्यों वहाँ के नागरिकों को विशेष दर्जा दिया हुआ है? यह सब प्रश्न ऐसे हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि केन्द्र सरकार का यह कथन की कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। सत्य से समर्थित नहीं है कश्मीर एक प्रकार से अब्दुल्ला परिवार की जायदाद बना हुआ है। वहाँ केन्द्र सरकार अन्य प्रान्तों की तरह से हस्तक्षेप करने से डरती है। हिन्दू कश्मीर में सुरक्षित नहीं है तो कश्मीर हिन्दुस्तान का अभिन्न अंग कैसे कहलाया जा सकता है। इसका चिन्तन–मनन आवश्यक है। कश्मीरी पंडितों को कश्मीर में पुर्नस्थापित किया जाना चाहिए। उनकी पूरी सुरक्षा करनी चाहिए और धारा 370 वहाँ से हटायी जानी चाहिए तभी हम कह सकते हैं कि कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है।

2014 करीब आ रही है 2014 में चुनाव होने हैं। लोकसभा चुनाव में 2014 एक निर्णायक रूप में उभरेगी। किन्तु प्रश्न यह है कि जनता वोट किसे दे। जनता भाजपा की अर्न्तकलह से परेशान है। भाजपा में घमासान मचा हुआ है। वहाँ अध्यक्ष की बात को सर्वोपरि नहीं माना जा रहा। कतिपय नेता अध्यक्ष के साथ है और कतिपय अध्यक्ष के निर्णय का विरोध कर रहे हैं। इस अर्न्तकलह को देखते हुए जनता दिग्भ्रमित है। हाँलाकि केन्द्र में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब भाजपा सरकार थी तब कोई ऐसा कार्य नहीं हुआ जिसे सफलता के रूप में देखा जा सके। कारगिल युद्ध भाजपा की सफलता नहीं थी बल्कि सेना की सफलता थी। भाजपा को अपने अर्न्तकलह को समाप्त करते हुए यह सिद्ध करना होगा कि यह हिन्दुत्व और हिन्दुस्तान की सुरक्षा कर सकती है। हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित कर सकती है। कश्मीर को अन्य प्रान्तों की श्रेणी में रख सकती है। वहाँ से धारा 370 हटा सकती है तथा कश्मीरी पंडितों को पूरे मान–सम्मान और सुरक्षा के साथ कश्मीर में पुर्नस्थापित कर सकती है। अन्यथा भाजपा के सम्बन्ध में जनता की जो भ्रामक स्थिति है वह आसानी से दूर नहीं हो सकेगी। जहाँ तक कांग्रेस का प्रश्न है आरम्भ से अन्त तक बीच के एक दो सत्र छोड़कर काँग्रेस का ही राज केन्द्र में रहा है। काँग्रेस में एक विशेषता है कि इसमें हाईकमान की बात कोई नहीं काटता यहाँ अर्न्तकलह और मतभेद कम है। काँग्रेस अल्पसंख्यकों को विशेष दर्जा देती है। आतंकवादियों के साथ सख्ती से पेश आने से बचती है। कश्मीर के सम्बन्ध में उसकी स्थिति स्पष्ट है। वह धारा 370 कभी नहीं हटायेगी। कश्मीरी पंडितों को पुर्नस्थापित नहीं करेगी। आतंकवाद से निपटने में कांग्रेस ने कोई अच्छा परिचय नहीं दिया है। वर्तमान में स्थापित केन्द्र सरकार में इतने घोटाले हुए है कि जिने पहले पूरे 50 वर्ष में नहीं हुए होंगे। जनता का काँग्रेस की ओर से मन खट्टा हो रहा है। काँग्रेस हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित नहीं कर सकी। संविधान में प्राविधान होते हुए भी आरक्षण समाप्त नहीं हो सका। तुष्टिकरण आज भी जारी है। काँग्रेस को यह सिद्ध करना पड़ेगा कि यह राजधर्म का पालन करेंगी और अल्पसंख्यक और बहुसंख्यकों में कोई भेद नहीं करेगी। हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित करेगी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कश्मीर को विशेष दर्जा नहीं देगी तथा घोटालों में लगाम लगाएगी। कश्मीरी पंडितों की पुर्नस्थापना भी एक गम्भीर मुद्दा है। काँग्रेस को इस पर भी अपनी नीति स्पष्ट करनी पड़ेगी। जहाँ तक प्रश्न अन्य दलों का है। अगर जनता चाहती है कि केन्द्र में त्रिशंकु सरकार न बने तो क्षेत्रिय दलों को लोकसभा में समर्थन न दें। क्योंकि केन्द्र में बहुमत वाली सरकार ही देशहित व जनहित में है और स्पष्ट बहुमत वाली सरकार या तो भाजपा बना सकती है या काँग्रेस बना सकती है। अन्य सभी दल क्षेत्रिय होने के साथ–साथ एक विशेष वर्ग से सम्बन्धित होते हैं। जैसे एक दल दलितों से समर्थित है तो एक अल्पसंख्यकों से समर्थित है तथा कतिपय लोगों ने काँग्रेस व भाजपा से टूटकर अपने–अपने दल बना लिये हैं और वह दो–दो, चार–चार सांसद लोकसभा में भेजकर अपना महत्व प्रकट करते रहते है। चुनाव आयोग को चाहिए कि जो क्षेत्रीय दल लोकसभा में अपना वांछित प्रतिनिधित्व अपने प्रान्त के अतिरिक्त अन्य प्रान्तों में सुनिश्चित नहीं कर सकते उनका लोकसभा में सांसद खड़ा करने का अधिकार समाप्त कर दिया जाये। लोकसभा में केवल वहीं दल सांसद खड़ा करने का अधिकारी बनाया जाये, जो अपने प्रान्त के अतिरिक्त अन्य प्रान्तों में भी अपनी पहचान बना सका हो अथवा सांसद के रूप में अपने प्रत्याशी को चयनित करा सका हो। केवल खड़ा करना ही काफी नहीं है। क्षेत्रिय दलों को केवल विधानसभा तक ही सीमित रखा जाना चाहिए। अन्यथा सौदेबाजी खत्म नहीं होगी और त्रिशंकु सरकार में मतभेदों का दबाव जारी रहेगा। राष्ट्रीय स्तर के केवल दो ही दल हैं और इन्हीं में किसी एक को सरकार में चुनना है। निजी स्वार्थो को भूलकर क्षेत्रीय दलों को लोकसभा चुनाव में मतदान करना देशहित में नहीं है।

□□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–17

सत्य की ओर से आँख बन्द कर लेने से सत्य का अस्तित्व समाप्त नहीं होता। हाँ, जो सत्य को समझने का प्रयास नहीं करते, उनका अस्तित्व अवश्य ही बौना हो जाता है। पंजाब केसरी पृष्ठ 3 पर आज पिछले वर्ष 16 दिसम्बर को सामूहिक बलात्कार की शिकार 23 वर्षीय युवती की याद में बनाये जा रहे निर्भया भवन की आधारशिला रखते हुए राष्ट्रपति ने कहा महिलाओं को सुरक्षा न देने वाला समाज सभ्य नहीं है। प्रश्न यह है कि समाज की असभ्यता के विरुद्ध हम क्या कर रहे हैं। क्यों हम असभ्य लोगों को सभ्यता सिखाने का प्रयास नहीं करते और जो सभ्यता सीखने को तैयार नहीं है। उनसे सम्बन्ध तोड़कर उन्हें पुलिस के हवाले क्यों नहीं करते। एक ओर तो इसी समाचार पत्र में निर्भया भवन की आधारशिला रखी जा रही है और इसी समाचार पत्र के मुख पृष्ठ पर एक अभिनेत्री का नग्न चित्र भी प्रकाशित है। पृष्ठ 5 पर 'कार में रंगरेलियाँ मनाते 3 रईसाजादे गिरफ्तार' का समाचार प्रकाशित है। पृष्ठ 8 पर अधेड़ युवती को लेकर झोलाछाप डाक्टर फरार का समाचार छपा है। इसी समाचार पत्र में बिजनौर केसरी पृष्ठ 4 पर महिला से दुष्कर्म का प्रयास का समाचार भी छपा है, पत्नी को मौत के घाट उतारने का समाचार भी छपा है, महिला का शव मिलने का समाचार भी छपा है। पृष्ठ 2 बदायूं बरेली केसरी में किशोरी को लेकर युवक फरार का समाचार भी प्रकाशित हुआ है और एक दलित युवती को पीटकर उसके मुँह पर थूकने का समाचार भी प्रकाशित हुआ है, यह केवल एक समाचार पत्र की खबरें हैं। समाज में यह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकृति क्यों फैलती जा रही है इस ओर किसी का ध्यान नहीं है और कोई भी सत्य को समझने का प्रयास नहीं कर रहा। सामूहिक बलात्कार और दुष्कर्म के मामले पहले इतने नहीं थे। क्योंकि पहले युवतियाँ और लड़कियाँ मर्यादा में रहती थी उनका पहनावा शालीन था, जिसमें पूरा अंग ढक जाता था अब जीन्स और टॉप में सारा बदन बाहर झाँकता है। टी0वी0 पर और अखबारों में अर्द्धनग्न अभिनेत्रियों के चित्र प्रमुखता से प्रकाशित होते हैं। युवतियाँ पैसे कमाने के चक्कर में काल सेन्टरों पर काम करती है और रात के अँधेरे में बॉयफ्रेंड के साथ वापस आती है, पहले बायफ्रेंड का प्रचलन नहीं था। लिव इन रिलेशनशिप भी नहीं था। पढ़ाई भी इतनी ऊँचाई तक नहीं थी कि लड़की अपने कपड़ों से ही बाहर निकल जाए। स्वयं सामाजिक परिस्थितियाँ ही इस सबके लिए जिम्मेदार हैं। जब तक समाज नहीं सुधरेगा, जब तक युवतियाँ और लड़कियाँ जीन्स और टॉप बिना दुपट्टे के पहनना नहीं छोड़ेगी और अंग प्रदर्शन को अपना अधिकार समझेंगी तब सामूहिक बलात्कार नहीं रूकेंगे। आधे–अधूरे कपड़ों में खुला वक्ष लिये घूमती युवतियाँ स्वयं ही पुरुषों को निमंत्रण देती लगती हैं। सरकार ने निर्भया भवन बनाकर एक निर्भया की याद को जीवित रखने का संकल्प लिया लेकिन अगर प्रत्येक अखबार को पढ़ा जाए तो लगभग 100 सामूहिक बलात्कार के मामले प्रतिदिन सामने आ सकते हैं। निर्भया के मामले में तो वहशियों ने बलात्कार के बाद राक्षसी कृत्य करके उसको मरणासन्न कर दिया था किन्तु ऐसी युवतियाँ और लड़कियाँ बहुत हैं, जो दुष्कर्म के पश्चात आत्महत्या कर लेती है अथवा मार दी जाती हैं। क्या सरकार सभी के लिए निर्भया भवन जैसी यादगार बनाने को तत्पर है अथवा सरकार की नजर में एक निर्भया ही ऐसी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़की थी, जो दुराचार और व्यभिचार की शिकार हुई। जिसकी यादगार बनाई जानी चाहिए थी अन्य पीड़ित लड़कियाँ सरकार की नजर में कोई महत्व नहीं रखती उनका जीवन, जीवन नहीं है। क्या यह सामाजिक पक्षपात नहीं। सख्त कानून बनने से क्या होता है जब तक उसका पालन न किया जाए। बलात्कारी को खुलेआम फाँसी दी जानी चाहिए। आयु के आधार पर उसे कोई छूट नहीं दी जानी चाहिए, जो बलात्कार कर सकता है, उसमें आयु मुख्य नहीं है। जब तक बलात्कारियों को खुलेआम चौराहे पर फाँसी नहीं दी जाएगी तथा जब तक महिलाएँ अर्द्धनग्न वस्त्र पहनना बन्द नहीं करेंगी तब तक बलात्कार नहीं रूकेंगे। यह एक सत्य है जो स्वीकार किया जाना चाहिए।

आड़वाणी जी ने क्षुब्ध होकर त्याग पत्र दिया और बाद में त्याग पत्र वापस ले लिया। सत्य यह है कि त्याग पत्र दिया ही वापस लेने के लिए जाता है। आड़वाणी जी को यह सत्य स्वीकार कर लेना चाहिए था कि अब उनका युग बीत चुका है। प्रत्येक व्यक्ति का एक निश्चित समय होता है, जिसमें वह सूरज की तरह दैदीप्यमान रहता है। किन्तु समय के साथ–साथ दिन ढलने की तरह प्रत्येक व्यक्ति का ढलान आवश्यक है। जिस प्रकार परिवार में सबसे बड़े व्यक्ति को बच्चों के कार्य में दखल देने के बजाय केवल सलाहकार की भूमिका निभानी चाहिए उसी प्रकार आडवाणी जी को भी भाजपा में सलाहकार की भूमिका निभानी चाहिए। भाजपा को काँग्रेस से सीख लेनी आवश्यक है। काँग्रेस ने काँग्रेस अध्यक्ष अथवा हाईकमान का कहना अन्तिम होता है, उसके विरुद्ध न कोई बोलता है, न त्याग पत्र जैसे नाटक होते हैं। सब व्यक्ति एकजुट होकर समस्या का समाधान ढूँढते हैं। गजब का मतैक्य है काँग्रेस में जबकि इसके विपरीत भाजपा में फूट ही फूट

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नजर आती है। अध्यक्ष के विरुद्ध बोलने में स्वयंभू बड़े नेता गर्व का अनुभव करते हैं, मोदी जी के मामले में कभी सिन्हा बन्धु, कभी स्वयं आडवाणी जी विपरीत बोलते रहे हैं। इससे भाजपा की साख ही गिरी है। भाजपा की विश्वसनीयता ही कम हुई है। बड़बोले नेताओं के प्रति जनता के मन में सम्मान कम हुआ है। अगर हमने किसी को अध्यक्ष बनाया है तो उसकी बात को मानना चाहिए यदि देश की जनता किसी एक व्यक्ति को पसन्द करती है तो सभी को उसे पसन्द करना चाहिए यदि किसी एक दल के अधिकांश लोग एक व्यक्ति को अपना नेता चुनना चाहते हैं तो सभी को उसका आदर करना चाहिए। वस्तुतः आडवाणी जी को काफी समय मिला और उन्होंने परिश्रम भी बहुत किया रथयात्राएँ भी निकाली, जनसभाएँ भी की किन्तु जो वह चाहते थे वह नहीं मिल सका। इसमें किसी का दोष नहीं है आडवाणी जी की भी कमी नहीं है किन्तु भाग्य सर्वोपरि है। कहा गया है भाग्यम् फलति सर्वत्रः। न च विद्या न च पौरुषम्। स्पष्ट है कि विद्या और पौरुष के मामले में आडवाणी जी बहुत आगे है, लेकिन भाग्य इस समय मोदी के साथ है, जनता इस समय मोदी के साथ है। अतः आडवाणी जी को भी मोदी के साथ हो जाना चाहिए था। विरोध करके उन्होंने अपना कद स्वयं ही घटाया है। इसके लिए कोई और जिम्मेदार नहीं है। यदि अब भी आडवाणी जी और उनके समर्थक विरोध करना बन्द नहीं करेंगे और भीतरघात करना बन्द नहीं करेंगे तो भाजपा का भविष्य भी खतरे में पड़ सकता है। क्योंकि जनता ऐसे किसी भी दल का समर्थन नहीं करना चाहेगी, जिसमें आपस में फूट हो और मतैक्य न हो। अतः आवश्यक है कि श्री आडवणी जी और उनके समर्थक इस तथ्य को समझे कि यदि केन्द्र में भाजपा की सरकार बनाना चाहते है तो विरोध

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूलकर मोदी का समर्थन करें।

सत्य एक दर्पण की भाँति होता है और दर्पण में जो आप देखते हैं, वह सत्य ही दिखाई देता है किन्तु यदि आपके चेहरे पर विकृति है, माथे पर सलवटें हैं तो दर्पण में वैसा ही दिखाई देगा इसमें दर्पण का कोई दोष नहीं होता। आज भाजपा गठबन्धन के साथ जो अन्य क्षेत्रीय दल थे वह सभी आँख दिखा रहे हैं, अपना महत्व बताने का प्रयास कर रहे हैं। जिन क्षेत्रीय दलो के 10–10 सांसद भी लोकसभा में नहीं होते, वह भी मियाँ मौहल्लेदार, संसद और देश के ठेकेदार बनने का प्रयास कर रहे हैं। जिनकी सरकार भाजपा के गठबन्धन से चल रही थी वह अपने व्यक्तिगत वैमनस्य के आधार पर सरकार को भी तोड़ने को तत्पर हैं लेकिन मोदी को नेता मानने को तैयार नहीं हैं। जो लोग समय की आवाज नहीं समझते हैं, वो पिछड़ जाते हैं। भारतवर्ष की जनता को भी समय की आवाज समझनी चाहिए और उन सभी क्षेत्रीय दलों को नकार देना चाहिए, जिनका अस्तित्व नगण्य है। वस्तुतः राष्ट्रीय दल को ही समर्थन देना चाहिए। जो भी राष्ट्रीय दल होगा उसको समर्थन देने से बहुमत की सरकार बनेगी और जो क्षेत्रीय दल होंगे उनको समर्थन देने से त्रिशंकु सरकार बनेगी। देशहित में बहुमत वाली सरकार और सशक्त विपक्ष आवश्यक है। त्रिशंकु सरकार वांछित नहीं है। क्षेत्रीय दलों को केवल विधानसभा तक ही सीमित रखना चाहिए, जिन क्षेत्रीय दलों के 10 से कम सांसद निर्वाचित होते हैं। ऐसे सभी क्षेत्रीय दलों की मान्यता लोकसभा के चुनाव के लिए रदद कर देनी चाहिए। क्षेत्रीय दलों का महत्व लोकसभा में कुछ नहीं होता। केवल त्रिशंकु सरकार के गठन में बहुमत प्रदान करने के लिए इनका महत्व बढ़ जाता है और फिर होती है क्रिकेट की मैच फिक्सिंग। जो किसी भी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूरत से देशहित में नहीं है। अतः जनता को एकमत होकर किसी भी एक राष्ट्रीय दल को अपना समर्थन देकर उसे बहुमत से जिताने का प्रयास करना चाहिए। यही समय का सच है और इस सच को स्वीकार करने में ही देशहित है।

□□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–18

सच/सत्य से हम सदा भागते हैं क्योंकि केवल सिद्ध पुरुष ही सत्य को पचा सकते हैं, सत्य को सुन सकते हैं और सत्य को झेल सकते हैं। साधारण मानव जीवन भर सत्य के सहारे आसानी से नहीं ठहरता, सत्य के रास्ते में बड़ी बाधाएँ आती हैं। श्री केदारनाथ त्रासदी एक ऐसा सत्य है, जिसने पूरे भारतवर्ष को झकझोर कर रख दिया। देश के कोने–कोने से आए यात्रियों पर जो आपदा आई, वो अवर्णनीय है, अतुलनीय है। ऐसी भीषणतम त्रासदी अभी तक इस युग में नहीं आई है, लेकिन इसका जिम्मेदार कौन है, वह सच क्या है, जिसके कारण यह त्रासदी आई। ईश्वर तो कदापि नहीं क्योंकि ईश्वर जीवन देता है, त्रासदी या आपदा नहीं देता। सत्य यह है कि यह आपदा मानव निर्मित है, इसके लिए मानव का स्वार्थ जिम्मेदार है, इसके लिए शासन–प्रशासन जिम्मेदार है, जिसकी खरीद–बिक्री मानव सदा करता है और यह खरीद बिक्री का कार्य अब एक नियम बन गया है। एक आदत बन गया है। पहाड़ों पर से वृक्ष काट दिए गए कितना बड़ा स्वार्थ हमारा सिद्ध हुआ लेकिन इन वृक्षों के कटने से जमीन की पकड़ कम हो गई और वह वृक्ष जो जमीन को बाँधे रहते थे, जो पानी को नियंत्रित करते थे, बादलों को नियंत्रित करते थे, जो पानी को सोख लेते थे, वह पहाड़ों पर से गायब हो गए। अवैध खनन पहाड़ों की जड़ों से पत्थर, बजरी, रेत उठाना धीरे–धीरे पहाड़ों की जड़े खोखली होती गई और पहाड़ धँसने के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कगार पर आ गए। नदियों के किनारे अतिक्रमण करके होटल, धर्मशालाएँ और सन्त महन्तों के आश्रम बन गए। नदी जब क्रुद्ध होती है तो मिट्टी काटती है और यही हुआ। तीव्र गति से बहने वाली गंगा ने धर्मशालाओं, होटलो और आश्रमों की मिटटी काट दी और वह सभी जलधारा में प्रवाहित हो गए और साथ में बह गए वह यात्री जो इन होटलों और धर्मशालाओं में ठहरे हुए थे। अनियंत्रित भीड़, जिसमें 25 प्रतिशत श्रद्धावनत तीर्थ यात्री तथा 75 प्रतिशत पिकनिक मनाने वाले सम्मिलित होते हैं। श्री केदारनाथ पर एकत्रित हुए। त्रासदी तो होनी ही थी क्योंकि जब–जब धर्म की हानि होती है, जब–जब धर्मस्थलों पर अश्रद्धा का पदार्पण होता है तब–तब प्रकृति नियंत्रण खो देती है। भगवान हर स्थान पर हैं, अपने घर में भी है, अपने मन में भी हैं, यदि हमारे अन्दर श्रद्धा है, यदि हमारे अन्दर विश्वास है, तो हम नियमित पूजा–पाठ करके भी वह सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं, जो तीर्थ स्थान पर जाने से मिलता है। आवश्यकता है अपने अन्दर झाँकने की। हम तीर्थ स्थान पर जाते है, तो उसी भावना से जाना चाहिए जो तीर्थ स्थान पर वांछित है। तीर्थ स्थान को मनोरंजन का स्थल नहीं बनाया जाना चाहिए। गंगा किनारे आश्रम होटल और धर्मशालाएँ बनाने की अनुमति नहीं होनी चाहिए। क्योंकि इन आश्रमों में जो यात्री ठहरते हैं, उनकी गन्दगी भी बहकर गंगाजी में जाती है, परिणामस्वरूप गंगा का निर्मल जल अशुद्ध हो जाता है। और जब हम उस अशुद्ध जल को काँवड़ में भरकर लाते हैं और भगवान पर चढ़ाते हैं, तो वह पाप है पुण्य नहीं। अपने नल का पानी श्रद्धा से यदि भगवान शिव पर चढ़ाया जाए तो वह उस

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गंगा जल से अच्छा होगा, जिसमें आश्रमों, होटलों और धर्मशालाओं की गन्दगी मिल रही है, हमें सच का सामना करना चाहिए और यह सच पूर्णतया सूर्य के प्रकाश की तरह है कि त्रासदी को हमी निमंत्रित कर रहे हैं, गंगा को हम ही अशुद्ध कर रहे है, पर्वतों को वृक्ष काट कर और अवैध खनन करके निष्क्रिय बना रहे हैं, यही कारण है कि मौसम पर से, बादलों पर से नियंत्रण हट रहा है। बिजली गिर रही है, बादल फट रहे हैं और नदियाँ किनारों से बाहर आ रही हैं।

दूसरा सत्य श्री केदारनाथ त्रासदी का यह है कि केन्द्र सरकार ने एक हजार करोड़ की सहायता उत्तराखण्ड को प्रदान की है, यदि इसका निष्ठा से प्रयोग किया गया तो वह जख्म जल्दी भर सकते हैं, जो इस त्रासदी में मिले हैं। श्री केदारनाथ जी मंदिर का नवीनीकरण हो सकता है। जो धर्मशाला, होटल, आश्रम गिर गए हैं, वह नदी तट से कम से कम एक किलोमीटर दूर बनाने की अनुमति देकर उनकी सहायता की जा सकती है, जिनका सबकुछ खो गया है, उनको पुर्नस्थापित किया जा सकता हैं। व्यक्तिगत और व्यवसायिक क्षतिपूर्ति हो सकती है। किन्तु यदि निष्ठा से इस सहयोग राशि का उपयोग न किया गया और बन्दरबाट हुआ तो निश्चित है कि त्रासदी के जख्म नासूर बन जाएगे। दुकानदारों ने जो लूट-खसोट की है, वह अखबारों में छप गई है। यह इतिहास बन जाएगी, जिन संस्थाओं ने सहायता की है, उनका भी वर्णन इतिहास करेगा, जिन साधु वेशधारी लुटेरों ने मृतक स्त्रियों के शरीर से गहने उतारे हैं, अबलाओं के साथ दुराचार किया है, शवों के जेब से पैसे निकाल लिए हैं,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतिहास उनको भी क्षमा नहीं करेगा और शासन–प्रशासन को भी उन पर नजर रखनी आवश्यक है। ऐसे लोग लाशों को लूट रहे हैं, जो मृतक स्त्रियों के साथ दुराचार कर रहे हैं। अथवा उनके गहने उतार रहे हैं, वह क्षम्य नहीं है। ऐसे लोगों को पकड़ कर सजा देनी चाहिए। इतिहास में यह सच स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा कि भारतीय सेना ने अपनी जान हथेली पर रखकर किस प्रकार तीर्थ यात्रियों की जान बचायी किस प्रकार मलबे में फँसे हुए लोगों को बाहर निकाला, किस प्रकार व्यक्तियों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया। सरकारी आँकड़ों के अनुसार लगभग 80 हजार लोग निकाल लिए गए हैं, और लगभग 25 हजार अभी भी फँसे हुए हैं। यह भी बताया जा रहा है कि कितने लोग कहाँ–कहाँ फँसे हुए हैं। लेकिन यह आँकड़ें कितने सत्य हैं इसको श्री केदारनाथ जी के अलावा कोई नहीं जानता। कितने लोग मिट्‌टी में दबे हुए हैं, कितने मलबों में फँसे हुए हैं, गौरीकुण्ड के अन्दर कितने दब गए कुछ पता नहीं। खच्चर जो यात्रियों की सवारी में काम आते थे वह भी कई हजार की संख्या में थे और उनके साथ चलने वाले व्यक्ति भी प्रत्येक खच्चर के साथ दो होते थे, वह सब भी गायब है, जिनका पता चल गया कि मर गए हैं, उनके परिजन तो धैर्य रख सकते हैं, लेकिन जो लापता बताये जा रहे हैं, उनके परिजनों का क्या होगा। लाशें गंगा जी में बहकर आ रही हैं। ऋषिकेश, हरिद्वार, बिजनौर होते हुए आगे जा रही हैं, कहाँ पर पकड़ी जाएगी और कौन पहचान पाएगा सब गर्भ में है। गाँव के गाँव बह गए हैं, समाचार पत्रों के अनुसार एक गाँव के सभी व्यक्ति बह गए और वहाँ केवल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिलाएँ ही रह गई हैं और सभी विधवा हो गईं हैं। एक 5 साल के बच्चे के माँ–बाप का पता नहीं। समाचार के अनुसार एक यात्री के सारे पैसे छीन लिये गए और उसके बच्चे को भी जंगल में फेंक दिया गया। कई बच्चे भूख और प्यास से तड़फ कर मर चुके हैं। कुछ भूख से लड़ रहे हैं। मौसम खराब है सरकार चाहकर भी उतनी सहायता नहीं कर पा रही जितनी वांछित है। खराब मौसम में बचाने का काम भी मुश्किल है। फिर भी हमारी सेना बड़े हौसले के साथ बचाव कार्य में लगी हुई है। प्रत्येक यात्री जो बच गया है, वह मुग्ध कण्ठ से, अपने हृदय से सेना के जवानों की प्रशंसा कर रहा है, उन्हें आशीर्वाद दे रहा है।

एक सत्य यह है कि इस त्रासदी में भी राजनीति आरम्भ हो गई है। दलों की आपसी शत्रुता इस अवसर पर अर्न्तध्यान हो जानी चाहिए थी लेकिन वैमनस्य की पराकाष्ठा है कि मोदी को और उसकी सहायता को नकार दिया गया। मोदी को आपदाग्रस्त इलाकों में जाने की अनुमति नहीं दी गई जबकि राहुल गाँधी को पूरी सुरक्षा के साथ आपदाग्रस्त क्षेत्रों में जाने दिया गया। यह भेदभाव क्यों? जनता पूछेगी। अन्य सभी राज्यों की सहायता स्वीकार की जा रही है। क्या मोदी का कोई अधिकार, कोई कर्त्तव्य केदारनाथ जी के प्रति नहीं है। क्या केदारनाथ जी मोदी के अलावा अन्य दलों की बपौती हैं। क्या वहाँ काँग्रेस के अतिरिक्त अन्य किसी को सेवा सहायता करने का अधिकार नहीं है, ऐसे अवसर पर ऐसी त्रासदी में राजनीति को भूलकर एक–दूसरे का सहयोग करने की भावना होनी चाहिए थी काँग्रेस का यह आचरण और मोदी के प्रति ऐसी दुर्भावना शायद जनता पचा नहीं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकेगी। मोदी ने समस्त क्षतिपूर्ति करने का बयान दिया था। उसका स्वागत करना चाहिए था। सरकार के अतिरिक्त अन्य गैरसरकारी संस्थाएँ भी सहायता कोष स्थापित किये हुए हैं और जनता मुक्त कण्ठ से इनमें सहयोग प्रदान कर रही है। यदि वास्तव में सभी सहयोग राशि का निष्ठा से उपयोग किया गया तो इस त्रासदी से काफी कुछ राहत मिलेगी और उजड़े हुए लोग बस सकेंगे। भविष्य के लिए भी हमें सचेत रहना होगा। नदियों के किनारे माननीय सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व निर्णय के अनुसार 200 मीटर तक निर्माण होना ही नहीं चाहिए था। अब कम से कम एक किलोमीटर तक कोई निर्माण नहीं होना चाहिए। वृक्षारोपण पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। जिनके रोजगार समाप्त हो गए हैं उनको रोजगार की सुविधा प्रदान की जानी चाहिए। पहाड़ों पर जो बाँध बनाये जा रहे हैं, वह रोक दिए जाने चाहिए और ऊर्जा के अन्य विकल्प तलाशने चाहिए। बाँध बनाने से जो पानी एकत्रित होता है उस पानी के अचानक बह निकलने से भयानक बाढ़ आती है। जहाँ पहाड़ कच्चे हैं, वहाँ पर बाँध नहीं बनाये जाने चाहिए यदि ऊर्जा के चक्कर में सारे हिमालय क्षेत्र में बाँध बना दिए गए तो यह भविष्य के लिए एक बहुत बड़ा खतरा होगा क्योंकि यदि बाँध के अन्दर कोई बड़ा पहाड़ आ गिरेगा तो भी बाँध का पानी बह निकलेगा और यदि बाँध के ऊपर बादल फट गया तो भी बाँध का पानी भीषण बाढ़ में तब्दील हो जाएगा। अवैध खनन तथा वृक्षों का कटान तत्कालीन प्रभाव से बन्द हो जाना चाहिए। नदियों के साथ ज्यादा छेड़छाड़ उचित नहीं है। पराकाष्ठा तब होती है जब बाँध बनाने के लिए पुरातन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालीन मंदिर उजाड़ने का प्रयास होता है। यदि धारी देवी के मंदिर से छेड़छाड़ ना की गई होती तो सम्भवतः इतनी भयंकर त्रासदी न होती, भीड़ पर नियंत्रण होना चाहिए तीर्थ यात्रा पर जाने वालों की आयु भी निर्धारित होनी चाहिए। जो लोग तीर्थ की दृष्टि से जाते हैं, उनको ही जाने दिया जाना चाहिए और जो लोग केवल पिकनिक की दृष्टि से जाते हैं उन पर रोक होनी चाहिए। छोटे–छोटे बच्चों को लेकर जाने वाले व्यक्तियों को भी अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। अतिक्रमण पर पैनी नजर होनी चाहिए। होटलों, धर्मशालाओं की गन्दगी गहरे कुएँ खोदकर उसमें डाली जानी चाहिए, नदियों में नहीं डाली जानी चाहिए। यदि हम नदियों का सम्मान करेंगे, यदि हम प्रकृति का सम्मान करेंगे, यदि हम पहाड़ों से छेड़छाड़ नहीं करेंगे, बाँध बनाने के लिए, सड़क बनाने के लिए डायनामाइट का प्रयोग नहीं करेंगे तो ऐसी भीषण त्रासदी से भविष्य में बच सकते हैं।

❑❑

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–19

एक और सत्य। जो कड़ुवा भी है और विष से भी भयंकर है सामने आया। श्री उमर अब्दुल्ला ने कहा– कि अगर कश्मीर से धारा 370 हटायी गई तो यह कार्य उनके शवों पर से गुजर कर ही हो सकता है। अर्थात् स्पष्ट रूप से मरने–मारने की धमकी प्रधानमंत्री के समक्ष दी गई और प्रधानमंत्री ने कुछ भी कहना उचित नहीं समझा। श्री उमर अब्दुल्ला ने कहा– "कि यह स्व॰ जवाहर लाल नेहरू और स्व॰ शेख अबदुल्ला के बीच समझौता हुआ था। कि कश्मीर में धारा 370 लगी रहेगी।" किन–किन बातों पर समझौते हुए हैं, और देश के शीर्ष नेताओं को घुटने टेकने पड़े हैं। अगर परत–दर–परत उघाड़ कर देखा जाए तो शर्मिन्दगी नजर आएगी। समझ में नहीं आता कि जब हमारी सेनाओं ने आधा कश्मीर फतह कर लिया था और शेष फतह करने को बढ़ रही थी तो उनको रोक क्यों दिया गया था, यदि उस समय उनको न रोका गया होता तो आज स्थिति इतनी विकट न होती। केन्द्र सरकार एक ओर तो कहती है कि कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है और दूसरी ओर धारा 370 के सम्बन्ध में उमर अबदुल्ला के भाषण को चुपचाप सह लेती है। आश्चर्य होता है कि अटल बिहारी वाजपेयी ने भी धारा 370 हटाने की पहल नहीं की। अरे कोशिश तो करनी चाहिए थी यदि ना हट पाती तो बात दूसरी थी लेकिन प्रयास ही नहीं किया गया। कश्मीर जहाँ रात–दिन आतंकी हमले होते हैं। जहाँ से आतंकी घुसपैठ करते हैं। जहाँ पर निर्दोष सरदारों की घर से बाहर निकालकर एक साथ हत्या कर दी गई। जहाँ से निष्कासित

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कश्मीरी पंडित अभी तक देहली में कैम्पों में रह रहे हैं और उनका भविष्य अनिश्चित है। वहाँ पर यदि धारा 370 हटाने में कुछ शवों की गिनती भी करनी पड़े, गेहूँ के साथ घुन भी पिस जाए तब भी धारा 370 हटनी चाहिए। कश्मीरी पंडितों का क्या कसूर है? कि वह अपना घर–बार छोड़कर देहली कैम्पों में रह रहे हैं, क्या कसूर था उन सरदारों का जिनको निहत्थे मार दिया गया। क्या अच्छाई है वहाँ पर जिसकी वजह से वहाँ की जनता विशेष सुविधाएँ प्राप्त हैं और वहाँ पर खाद्यान्न तथा अन्य जरूरी चीजें रियायती दर पर उपलब्ध कराई जाती है। जब हम स्वतंत्रतापूर्वक कश्मीर की जमीन का उपयोग नहीं कर सकते तो बार–बार यह कहने से क्या लाभ कि कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। जब तक वहाँ पर धारा 370 प्रभावी है, जब तक कश्मीरी पंडित वापस जाकर अपने घरों में पुर्नस्थापित नहीं हो जाते। जहाँ हिन्दुओं की सुरक्षा नहीं उस कश्मीर को हम कैसे भारत का अभिन्न अंग कह सकते हैं। इस बारे में चिन्तन आवश्यक है और आने वाली सरकार को इस सन्दर्भ में कठोर निर्णय लेना ही होगा।

सत्य तो सत्य है कहाँ तक छिपेगा। बारह वर्ष बाद अभिनेता सलमान खान के हिट एंड रन केस में सुनवाई आरम्भ हुई और प्रथम दृष्टवा गैर इरादतन हत्या का दोषी पाया गया। यह दोष बहुत गम्भीर है। सड़क पर सोए हुए निर्दोष लोगों को अपनी कार से कुचल देना और भाग जाना मानवता के प्रति अपराध है और ऐसे मामले में तो बहुत पहले निर्णय हो जाना चाहिए था। आश्चर्यजनक है कि मामले को लम्बित क्यों रखा गया। किसी प्रकार सलमान खान पर एक मामला काले हिरण के शिकार का चल रहा है उसमें भी निर्णय लम्बित है आखिर क्यों? क्या

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सलमान खान कोई विशेष व्यक्ति हैं, क्या उन्होंने कोई कार्य ऐसा किया है, जो देशहित में हो। इसके विपरीत पुलिस की वर्दी पहनकर ठुमके लगाना और अपनी कमीज उतारकर सिनेमा स्क्रीन पर दर्शन देना यदि विशेष कार्य माना जा सकता है तो समस्त देशवासियों को इसका अनुकरण करना चाहिए। और यदि यह कोई विशेष कार्य नहीं है तो सलमान खान को विशेष दर्जा नहीं दिया जाना चाहिए और जिस प्रकार संजय दत्त को अपराधी मानकर सजा दी गई उसी प्रकार इस गैर इरादतन हत्या के मामले में भी सजा दी जानी चाहिए। डर केवल एक है कि 12 साल में साक्षी और साक्ष्य कितने जिन्दा है, कितने साक्षी नहीं बिके हैं और कितने साक्ष्य नष्ट नहीं हुए हैं। उस पर ही सारी कार्यवाही निर्भर करेगी। वाद को लम्बा इसीलिए खीचा जाता है कि समय के साथ–साथ साक्षी और साक्ष्य नष्ट हो जाए। न्यायकर्ताओं को इस बिन्दु पर भी विचार करना होगा और एक साधारण भारतीय नागरिक की तरह ही इस मामले को निपटाना होगा। अन्य बहुत से मामले हैं, जैसे चारा घोटाला, जैसे एक सांसद द्वारा गैर इरादतन हत्या का मामला भी लम्बित हैं। उन सबमें भी त्वरित निर्णय होना चाहिए। सांसद के मामले में, हत्या गैर इरादतन मानना सम्भवतः किसी विशेष परिस्थितियों में हुआ होगा, वैसे हत्या कभी गैर इरादतन नहीं होती। आदमी जब भी हत्या करता है तो इरादे से करता है। भले ही क्षणमात्र के लिए वह उसके परिणाम को भूल जाए। अतः माननीय सर्वोच्च न्यायालय को ऐसे सभी मामलों में त्वरित निर्णय का संज्ञान लेना चाहिए, जो देश के नेताओं और अभिनेताओं के विरुद्ध लम्बित है।

चारधाम यात्रा में कई सच सामने आए। यह त्रासदी पूर्णरूप से

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानव निर्मित सिद्ध हुई। पहाड़ों पर से वृक्ष काट दिए गए, नदियों के किनारे मकान बना लिए गए। तीर्थ स्थान को मनोरंजन स्थल बना दिया गया, छोटे–छोटे बच्चों को लेकर तीर्थ यात्रा पर जाने लगे, अनियंत्रित भीड़ चारों स्थान पर एकत्रित हुई और भयंकर त्रासदी का जन्म हुआ। कहते हैं कि एक लाख से अधिक बचा लिए गए और कई हजार मर गए अथवा लापता हुए। आँकड़ें सदैव आँकड़ें होते हैं जो सत्य के कुछ–कुछ करीब होते हैं, किन्तु सम्पूर्ण सत्य नहीं होते। त्रासदी से निपटने के लिए केन्द्र सरकार ने एक हजार करोड़ की त्वरित सहायता प्रदान की है। गैर सरकारी संगठन भी धन और सामग्री एकत्रित करके भेज रहे हैं, इसका कितना सद्उपयोग होगा। यह उन लोगों पर निर्भर करता है, जो सामग्री और पीड़ित व्यक्तियों के बीच में होते हैं। फिर भी हमें मुक्त हस्त से दान देना चाहिए। यह संज्ञान लिया जाना भी आवश्यक है। कि माता धारी देवी का मंदिर विकास के नाम पर विस्थापित कर दिया गया है। और जिस दिन माता धारी की मूर्ति मंदिर से हटाई गई उसके दो दिन बाद ही यह आपदा चारो धाम पर आई। धारी का अर्थ है, धारण करने वाली और जब आपने धारण करने वाली को ही हटा दिया तो प्रकृति की शक्ति को कौन धारण करता। जिस तरह भगवान शिव ने जटाओ में गंगाजी को धारण किया था, उसी प्रकार समस्त क्षेत्र की आपदाओं को माता धारी देवी निर्मूल करती रहती थी। विकास के नाम पर जब सरकार ने अन्धा धन बटोरने के लिए आपदाओं को निर्मूल करने वाली धारी देवी के मंदिर को निर्मूल करने का प्रयास किया तो आपदा तो आनी ही थी और आपदा आई। मेरा अनुरोध है केन्द्रीय/प्रान्तीय सरकारों से कि माँ धारी के मंदिर को तथा माँ धारी देवी की मूर्ति को पुर्नस्थापित

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया जाए। इस संकट की घड़ी में भी आपसी द्वेष और वैमनस्य इस पराकाष्ठा तक देखने को मिला कि नरेन्द्र मोदी मुख्यमंत्री गुजरात को आपदा स्थल पर जाने से रोक दिया गया और शेष सभी की पूरी आवभगत की गई। जो लोग इस वैमनस्य के दोषी है, वह भी भगवान शंकर के नेत्रों से ओझल नहीं हैं। सचेत रहे वह सभी और यह न समझे कि वह अजर–अमर हैं। यदि द्वेष भाव से किसी के साथ व्यवहार किया जाता है तो उसकी प्रतिक्रिया अवश्य होती है। और इस वैमनस्य की प्रतिक्रिया भी होगी। एक सच और सामने आया कि जब इस आपद के क्षणों में प्रत्येक व्यक्ति दुखी था। राष्ट्र के कोने–कोने से लोग भगवान से आपदाग्रस्त लोगों को बचाने की प्रार्थना कर रहे थे मृतकों की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना कर रहे थे तब हमारे क्रिकेटर जीत का जश्न मना रहे थे। एक दिन भी क्रिकेट के खेल को निलम्बित नहीं किया गया। एक दिन के लिए भी क्रिकेटरों ने शोक नहीं मनाया। कितने पत्थर हो गए हैं हम और कितने पत्थर हो गए हैं क्रिकेटर तथा इससे सम्बन्धित लोग जो केवल धन कमाने के चक्कर में मानवता को बिलकुल भूल गए और सहस्रों आसुँओं के प्रति जो आपदाग्रस्त लोगों की आँखों से बह रहे थे। सम्वेदना प्रकट करने हेतु एक क्षण का मौन भी नहीं रख सके। यह सच कब तक हमें कचोटता रहेगा, कब तक हम क्रिकेट को झेलते रहेंगे। यह खेल जो देश और समाज के विकास में बिलकुल सहायक नहीं है बल्कि अमीरों को और अमीर कर रहा है तथा गरीबों का मजाक उड़ा रहा है। आने वाले चुनाव में मेरा अनुरोध है कि केवल उस व्यक्ति को ही मतदान किया जाए, जो क्रिकेट को प्रतिबन्धित कर सके। तभी देश का विकास होगा, तभी समाज का उत्थान होगा।

□□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–20

यह एक शास्वत सत्य है कि भारतवर्ष कभी दूध–दही का देश कहलाता था। कहा जाता है कि दूध–दही की नदियाँ बहती थी और अब यह भी सत्य है कि दूध का उत्पादन आवश्यकता के अनुरूप नहीं हो रहा है। जहाँ पहले हर घर में एक गाय पालना पुण्य का कार्य समझा जाता था। वहाँ अब गाय भैंस का पालन बोझ समझकर त्याग दिया गया है। फलस्वरूप नकली दूध/सिन्थेटिक दूध का निर्माण और बिक्री खूब हो रही है। इस जहरीले दूध को पीकर, जिसमें सफेदा, तारपीन, डिटर्जेन्ट जैसी वस्तुएँ मिलाई जाती है तथा यूरिया खाद की मिलावट भी सुनने में आई है, मृत्यु अवश्यम्भावी है। दूधिया का दूध पकड़ा जाता है किन्तु किसी को कोई सजा नहीं होती। साक्ष्य के अभाव में मिलावटखोर छूट जाते है। इसी नकली दूध से मावा और मिठाईयाँ बनायी जा रही हैं, जो त्यौहारों में खूब बिकती है। मिठाई बनाने वाले पकड़ जाते है किन्तु वही साक्ष्य का अभाव और वह बरी हो जाते है। अभी राज्य सरकार ने एक जिले के लिए पशु पालन हेतु 172.65 लाख दुग्ध विकास हेतु 240.35 लाख रुपया आवंटित किये है। पूरे प्रान्त में कितने अरब रूपया आवंटित किया गया होगा और इससे कितना पशुपालन होगा और कितना दुग्ध विकास होगा यह जनता जानती है। सरकार शायद यह समझती है कि जनता को कुछ नहीं मालूम। लेकिन ऐसा नहीं है। जनता समझती है। लेकिन मुद्दा यह नहीं है। मुद्दा यह है कि जिस देश में हजारों दुधारू पशु भैंस तथा भैंस की आड़ में गाय रोज कटते हैं और मांस डिब्बों में बंद होकर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्यात होता है। वहाँ दुग्ध विकास अथवा पशुपालन की कल्पना सार्थक नहीं हो सकती। पशुओं का पालन करने के लिए चारा समाप्त हो रहा है। गेहूँ की गहाई करने वाली विशालकाय मशीनों से भूसा उत्पन्न नहीं होता। चरागाह नहीं बचे हैं। किसाने हरे चारे की फसल बिक्री के लिए नहीं बल्कि निजी प्रयोग के लिए बोता है। जो लोग पशुपालन करेंगे वे चारा कहाँ से लायेगे और जब चारा नहीं होगा तो दुग्ध विकास कैसे होगा। सब कल्पनाएँ हैं, सब कागजी कार्यवाही हैं कोई ठोस कदम नहीं है। होना चह चाहिए कि हर गाँव में हर शहर में 100–50 बीघे जमीन चरागाह के लिए आवंटित होनी चाहिए जिसमें आदमी एक निश्चित धनराशि देकर अपने पशुओं को चरने के लिए छोड़ सके। विशालकाय गेहूँ गहाने की मशीनें प्रतिबन्धित होनी चाहिए। गेहूँ गहाई का काम थ्रेशर के माध्यम से किया जाना चाहिए, जिससे भुस उपलब्ध रहे। मांस का निर्यात करने वाली फैक्ट्रियाँ बंद कर देनी चाहिए। ऐसे धन का क्या लाभ जो पशु धन को खा रहा हो। पशुओं के कटान पर भी प्रतिबन्ध होना चाहिए। भैंस की आड़ में गाय नहीं कटनी चाहिए। यह ठोस कदम अगर उठाये जायेगे तभी पशु पालन होगा और तभी दुग्ध विकास होगा वरना असली दूग्ध लुप्त होता जायेगा और मिलावटी दूध पीकर जनता मरती रहेगी। अतः सरकार का कर्त्तव्य है कि पशुपालन और दुग्ध विकास के कार्यक्रम से पहले मांस का निर्यात बंद किया जाये। पशुओं के चरागाह स्थापित किये जाये। मिलावटी दूध बेचने वालों को फांसी दी जाये। गेहूँ गहाने की विशालकाय मशीनें प्रतिबन्धित होनी चाहिए, जिससे पशुओं के लिए भुस उपलब्ध रहे।

केन्द्र सरकार का एक ओर सच सामने आया है। खाद्य सुरक्षा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिनियम जिसके अन्तर्गत लगभग 80 प्रतिशत लोगों को दो रुपये किलो चावल, दो रुपये किलो गेहूँ तथा दो रुपये किलो दाल मिलेगी। कितना सच है अधिनियम/अध्यादेश में यह तो जब पता चलेगा जब यह प्रभावी होगा। किन्तु वर्तमान में तो यह लगता है कि यह राजनैतिक चुनावी स्टंट है। जनता का ध्यान बँटाने के लिए केन्द्र सरकार कुछ न कुछ ऐसा करती रहती है। जिससे सरकार के घोटालों की ओर से जनता का ध्यान हटा रहे। केन्द्र सरकार की जानकारी में है कि किन प्रांतों में किन स्थानों पर भुखमरी का बोलबाला है और कहाँ पर भूख के कारण आत्महत्याएँ हो रही है। वहाँ के लिए सरकार के पास कोई योजना नहीं है। अभी पढ़ने को मिला कि कई सौ कुन्तल गेहूँ सड़ गया किन्तु सरकारी कामकाज के अनुरूप इसको गरीबों में नहीं बँटवाया गया। इस गेहूँ का प्रयोग उन राज्यों के उन क्षेत्रों में किया जा सकता था, जहाँ लोग भूख से मर रहे हैं। खाद्य सुरक्षा अध्यादेश/अधिनियम तभी सार्थक हो सकता है जब यह भूख से हो रही आत्महत्याओं को रोकने में सफल हो सके। बहुत से क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ दो रुपये के भाव से अन्न खरीदने लायक पैसा भी नहीं है। ऐसे क्षेत्रों में केन्द्र सरकार का कर्त्तव्य है कि अनाज का मुफ्त वितरण कराया जाये बजाये गोदाम में सड़ाने के। जिन राज्यों में भूखमरी के कारण आत्महत्याएँ हो रही है वहाँ अन्न उपलब्ध कराया जाये और यदि इसके बाद भी भूख के कारण आत्महत्याएँ होती हैं। तो दोषी व्यक्ति को फांसी दी जानी चाहिए तथा ऐसी प्रांतीय सरकारों को बर्खास्त कर दिया जाना चाहिए जहाँ भूख से आत्महत्याएँ हो रही हैं। ऐसे राज्यों के मंत्रियों को मक्खन मलाई और घी में तर पूरियाँ खाने का अधिकार नहीं है, जहाँ जनता भूख से आत्महत्या कर रही हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे कई प्रान्त हैं जहाँ जनता ही नहीं पशु भी भूख से मर रहे हैं। जहाँ पीने के पानी की कमी है। ऐसे अध्यादेशों के बजाए सरकार को इन बुनियादी जरूरतों के पूरा करने पर ध्यान देना चाहिए। जहाँ पीने के पानी की कमी है। वहाँ पानी उपलब्ध कराने के लिए नहरों, तालाबों और कुओं का निर्माण युद्ध स्तर पर होना चाहिए। जहाँ अन्न की कमी है वहाँ अन्न बाहुल्य क्षेत्रों से अनाज भेजा जाना चाहिए, जो लोग दो रुपये किलो खरीद सकते है उनको इस भाव देना चाहिए और जो इतने सक्षम नहीं है उनको मुफ्त अनाज वितरित करना चाहिए। कितने शर्म की बात है कि वह देश जो खेती प्रमुख है, जो अधिकांश गांव में बसता है। वहाँ जनता भूख से आत्महत्या करने को विवश है। कहीं–कहीं परिवार को भूख से बचाने के लिए बच्चे बेचने के समाचार मिलते रहते हैं। इस शर्मनाक स्थिति को दूर करना केन्द्र सरकार को परम आवश्यक मानकर त्वरित कार्यवाही करनी चाहिए। अन्यथा खाद्य सुरक्षा अधिनियम/अध्यादेश देश के लिए लाभकारी नहीं होगा। नेताओं के लिए हो सकता है। यह भी आवश्यक है कि किसान के उत्पादों की खरीद सरकार निश्चित मूल्य पर स्वयं करे और सरकारी दुकानों पर खुले आम अनाज की बिक्री हो तथा भूखे और असहाय व्यक्तियों को कम से कम मूल्य पर अथवा मुफ्त अनाज उपलब्ध कराया जाये ताकि भूख से होने वाली आत्महत्याएँ, पशु हत्याएँ तथा बच्चों की बिक्री पर रोक लग सके।

वर्तमान में इससे बड़ा सच कोई नहीं हो सकता कि प्रत्येक राजनीतिक दल मोदी फोबिया से ग्रस्त है। प्रत्येक राजनीतिक दल का सर तोड़ प्रयास है कि मोदी केन्द्र में प्रधानमंत्री न बन सके, जो सरकार घोटालों में लिप्त है। उसके मंत्रियों को तो नींद

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी नहीं आ रही है। अतः अनर्गल प्रलाप जारी है। जनता प्रसन्न है कि कम से कम बहुप्रतिक्षित नेता भारतवर्ष में अवतरित हुआ है। जो लाल बहादुर शास्त्री, सरदार पटेल और सुभाषचंद बोस की तरह जनता की सुरक्षा और देशहित की बात करता है। आश्चर्य की बात है कि समस्त नेतागण अकबर की इस कहानी को भूल गये हैं। कहानी इस प्रकार है कि– एक बार अकबर बादशाह ने अपने दरबार के फर्श पर एक लाईन खीचकर दरबारियों से कहा कि इस लाइन को बगैर मिटाये छोटा कर दो। प्रत्येक दरबारी बगले झांकने लगा क्योंकि किसी के समझ में नहीं आया कि बगैर मिटाये यह लाइन छोटी कैसे हो सकती है। तभी बीरबल आये और अकबर बादशाह ने बीरबल से भी यही प्रश्न किया कि इस लाइन को बिना मिटाये छोटा कर दो। बीरबल ने उस लाइन के बराबर में एक बड़ी लाइन खींच दी और वह लाइन छोटी हो गई। इसी प्रकार मोदी की लाइन को वही नेता छोटा कर सकता है, जिसकी अपनी छवि साफ हो, घोटाला रहित हो, दुष्कर्म से वंचित हो अन्यथा मोदी की लकीर अभी तक सबसे बड़ी है। घोटालेबाज नेताओं के पास केवल भयभीत होने के अलावा और अनर्गल प्रलाप करने के अलावा और कुछ नहीं है। जनता मोदी की अच्छाइयों से परिचित है और वर्तमान सरकार के घोटालों से भी अनभिज्ञ नहीं है। एक समय था जब सारी पार्टियाँ इंदिरा जी को दोष दिया करती थी और हर बात के लिए इंदिरा जी को जिम्मेदार मानती थी और जब जनता की समझ में आ गया कि पूरे देश में केवल एक ही जिम्मेदार व्यक्ति है तो पूरे देश ने एकजुट होकर उसी व्यक्ति को जिम्मेदारी सौंप दी और संसद में इंदिरा जी बहुमत से जीतकर आई। वहीं स्थिति मोदी की भी है। मोदी के साथ जनता है। कुछ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिरफिरे नेताओं के विरुद्ध होने से कुछ नहीं होने वाला। मोदी की आँधी रूकने वाली नहीं है। देश को मोदी जैसे नेता की आवश्यकता है। उसको कुछ अहंकारी नेता नहीं रोक सकते। जनता जाग्रत हो चुकी है और जनता को जागते ही रहना है। किसी भी स्तर से चूकना नहीं है। मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद देश में दूध–दही की नदियाँ बहेगी। बेरोजगारी समाप्त होगी। शराब पीकर जो दुष्कर्म होते हैं उन पर रोक लगेगी। जनता के धन का सदुपयोग होगा और घोटाले नहीं होंगे। मेरा मानना है कि मेरी यह कल्पना अवश्य सत्य होगी।

□□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–21

वर्तमान समय में नरेन्द्र मोदी एक सत्य की तरह से राजनीति के मंच पर उभर कर आ रहा है और जैसा कि सर्वविदित है सत्य के सभी दुश्मन होते हैं। अपने भी सत्य के प्रति कभी–कभी अव्यवहारित हो जाते हैं। और वही हो रहा है। ऐसा एक भी राजनीतिक दल नहीं है, जो इस सत्य से अपरिचित हो कि यदि नरेन्द्र मोदी केन्द्र की सत्ता में आ गए तो घोटाले नहीं हो सकेंगे। दबंगई नहीं चलेगी। दुष्कर्मों पर रोक लग जाएगी। और राजनीति में एक साफ–सुथरी छवि नजर आएगी। इसलिए सभी राजनीतिक दल मोदी फोबिया से ग्रस्त है। और कोई भी ऐसा मौका नहीं छोड़ रहे, जिसमें वो मोदी की आलोचना न करें। कटाक्ष करने का कोई अवसर कोई भी राजनीतिक दल हाथ से नहीं जाने दे रहा। सबसे अधिक डर परोक्ष या प्रत्यक्ष रूप से वर्तमान केन्द्रीय सरकार को लग रहा है क्योंकि जितने घोटाले इस सत्र में केन्द्र सरकार के मंत्रियों द्वारा किये गए हैं, उतने कभी नहीं हुए। अतः सभी खौफ़जदा हैं। मोदी अगर उत्तराखंड में सहायता की बात करते है तो उसका विरोध करना केन्द्रीय नेता अपना धर्म समझते हैं। मोदी अगर स्वयं को राष्ट्रवादी हिन्दू बताते हैं तो अन्य दलों के तथाकथित हिन्दू नेता ही उन्हें साम्प्रदायिक होने का प्रमाण पत्र जारी कर देते हैं। अगर मोदी टोपी स्वीकार नहीं करते तो उन्हें साम्प्रदायिक बता दिया जाता है। इशरत जहां का एनकाउण्टर हो तो मोदी व उनके मंत्रियों की जिम्मेदारी बता दी जाती है। अब मोदी जगन्नाथपुरी गए हैं तो भी प्रश्न उठाए जा रहे हैं। मोदी ने अपनी सभा में 5 रुपये

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का टिकट रख दिया तो उस पर भी कटाक्ष किए जा रहे हैं। वस्तुस्थिति यह है कि सभी मोदी के नाम से डर तो रहे ही है और नफरत फैलाने की कोशिश भी कर रहे हैं। इसमें सबसे बड़ी जिम्मेदारी उनकी पार्टी के श्रीजी की है। यदि श्रीजी ने आरम्भ में मोदी फोबिया से ग्रस्त होकर समस्त पदों से त्याग पत्र न दिए होते तो विरोधियों को बोलने का मौका नहीं मिलता। विरोधी जब ही बोलते हैं जब घर का कोई व्यक्ति ही विरोध में खड़ा हो जाता है। भाजपा अध्यक्ष को चाहिए कि मोदी का विरोध करने वाले अपने ही दल के लोगों को समझाएँ, जनता हृदय से मोदी को चाहती है और उन व्यक्तियों से जनता का मोह भंग हो रहा है, जो छोटी–छोटी बात को तूल देकर नरेन्द्र मोदी के विरुद्ध अनर्गल प्रलाप कर रहे हैं। केन्द्र की सरकार तो मोदी विरोध करके जनता का ध्यान घोटालों की ओर से हटाना चाहती है और वह इसमें सफल भी हो रही है। जनता मोदी के पक्ष में एकजुट हो रही है। लेकिन घोटालों की तरफ से उसका ध्यान हट रहा है। अन्य क्षेत्रीय दल भी घबड़ा रहे हैं जबकि घबड़ाने जैसी कोई बात नहीं है। मोदी अगर हिन्दू हैं तो अल्पसंख्यकों को डरने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि गुजरात में जितने अल्पसंख्यक सुरक्षित हैं। उतने अन्य स्थानों पर नहीं हैं हाँ, अल्पसंख्यकों की मनमानी और दंबगई पर अवश्य ही रोक लग जाएगी और इसमें कोई बुराई नहीं है दंबगई सिर्फ अल्पसंख्यक ही नहीं करते अन्य व्यक्ति भी करते हैं। अन्य दलों के लोग भी करते हैं। हास्यास्पद है उन दलों का मोदी विरोध करना जिनके अपने सांसदों की संख्या लोकसभा या राज्यसभा में 5 प्रतिशत भी नहीं है। लेकिन फिर भी विरोध का कोई मौका नहीं चूक रहे। जिनका अपने ही प्रान्त में कोई वर्चस्व नहीं है, जो जनता को

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वस्वीकार्य नहीं हैं। वह भी मोदी की आलोचना का अवसर तलाशते हैं। सत्य एक सूर्य की मानिन्द होता है। गर्मी कितनी भी क्यों ना हो, जनता सूर्य के दर्शन करना पसन्द करती है। क्षण मात्र को यदि बादल आ भी जाएं तो पुनः सूर्य चमकता है और यही स्थिति नरेन्द्र मोदी की है। विरोधी कितने भी मुखर क्यों ना हो जाएँ। सत्य को अधिक देर तक नहीं छुपा सकते। नरेन्द्र मोदी का मार्ग साफ और स्पष्ट है और यह यात्रा जो नरेन्द्र मोदी ने आरम्भ की है दिल्ली से पहले रूकने वाली नहीं है। अतः विरोधियों को संयम से काम लेना चाहिए।

नरेन्द्र मोदी का जिक्र हुआ है तो इशरत जहां के सन्दर्भ में सत्य जानना आवश्यक है। आक्षेप लगाया जा रहा है कि इशरत जहां का फर्जी एनकाउण्टर किया गया। हो सकता है। लेकिन इससे पहले हमें कुछ बिन्दुओं पर विचार करना चाहिए–

1. एनकाउण्टर से पहले इशरत जहां क्या कार्य करती थी और उससे उसे क्या आय थी, जिससे वह अपने घर का खर्चा चला रही थी क्योंकि अखबारों और टी.वी. के जरिये यह पता चलता है कि घर की जिम्मेदारी इशरत जहां पर थी।

2. इस प्रश्न का उत्तर भी वांछित है कि इशरत जहां आतंकवादियों के साथ क्यों थी तथा वह एनकाउण्टर के स्थान पर कैसे पहुँची।

3. जनता यह भी जानना चाहती है कि अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवादी हेडली ने इशरत जहां का नाम क्यों लिया, क्या वह उसे जानता था।

4. इशरत जहां का दोस्ताना, मिलना–जुलना किन लोगों से था तथा वह देश की मुख्यधारा में निष्ठापूर्वक थी या अनिष्ठापूर्वक।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

5. जिन लोगों पर फर्जी एनकाउण्टर का दोष लगाया जा रहा है क्या उनकी कोई व्यक्तिगत दुश्मनी इशरत जहां से थी। बिना कारण ही कोई भी किसी को नहीं मारना चाहता और हिन्दू तो वैसे भी धर्मभीरु होता है, जो चींटी को मारने से बचता है, वह हिन्दू अकारण ही किसी महिला की हत्या कैसे कर सकता है। ऐसा तभी सम्भव है, जब पानी सर से ऊपर उतर जाए। क्या इशरत जहां के मामले में पानी सर से ऊपर उतर चुका था।

6. ऐसे क्या कारण थे जिनके कारण इशरत जहां का एनकाउण्टर हुआ।

इस मामले को इतना तूल देना और इतना लम्बा खीचना कोई अर्थ नहीं रखता। कभी किसी पर, कभी किसी पर इशरत के एनकाउण्टर का आरोप लगाना अनर्गल प्रतीत होता है। एनकाण्टर कब हुआ था और आज कितने साल हो गए बीच में कितने लोग मर गए कितने बहका लिए गए और कितनों को विरोधियों ने अपनी साजिश में येन-केन-प्रकारेण सम्मिलित कर लिया यह भी एक ज्वलंत प्रश्न है। अगर इशरत जहां आतंकवादियों के साथ थी और यह सन्देह करने का उचित कारण है कि उसके सम्पर्क आतंकवादियों से थे तो उसके एनकाउण्टर पर सवाल जवाब, जाँच-पड़ताल बन्द होनी चाहिए। क्या इशरत जहां इतनी बड़ी हस्ती थी कि उससे देश को खतरा हो गया था और उसका एनकाउण्टर आवश्यक हो गया था अथवा वह केवल सन्देह में मारी गई। सन्देह का आधार क्या था। इन सभी बातों पर चर्चा होनी आवश्यक है और इलैक्ट्रॉनिक मीडिया को इसकी पहल करनी चाहिए हो सकता है उपरोक्त प्रश्नों में अपरिपक्वता रह गई हो या सम्पूर्णता नहीं हो। अतः विद्वत्तजनों को इसी प्रकार के प्रश्न तैयार करके इशरत जहां के परिवार से पूछने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए और सत्य ज्ञात होने पर इस मामले को बन्द करना चाहिए। भारतवर्ष की केवल विरोधात्मक राजनीति को देखते हुए इस प्रकार के मुद्दे उठाना जनता का ध्यान असली विषय से हटाने का प्रयास हो सकता है। अन्यथा कुछ नहीं है। एक आतंकवादी का एनकाउण्टर अगर हो गया है तो उस पर प्रश्न करना उचित नहीं।

सन 1984 के दंगों की चर्चा राजनीतिक उथल–पुथल और न्यायिक कार्यवाही अब तक चल रही है। इसी प्रकार गुजरात के दंगो की भी हवा कभी–कभी बड़ी तेजी से बहने लगती है। राजनीतिक और न्यायिक दोनों क्षेत्रों को इस सन्दर्भ में इस बिन्दु पर विचार करना चाहिए कि दंगा क्रिया की प्रतिक्रियास्वरूप होता है। बाबरी विध्वंस के अवसर पर देश के कई क्षेत्रों में दंगे हुए वह बाबरी मस्जिद विध्वंस की क्रिया की प्रतिक्रिया थी। इसी प्रकार सन 1984 के दंगे इन्दिरा गाँधी की हत्या की क्रिया की प्रतिक्रिया थी। आप किसी के मित्र को, परिजन को, अथवा पुरजन को मार देंगे तो उसके परिजन, पुरजन और मित्र क्या आपके खिलाफ शोर नहीं मचाएँगे। जिस पर आप हमला कर रहे हैं, उसके अपनों से यह कैसे अपेक्षा की जा सकती है कि वह आप पर हमला न करें और दंगे के दौरान यदि कोई व्यक्ति भूल से, कार्यवशात अथवा अन्य किसी कारंण से दंगास्थल पर उपस्थित है तो केवल उसकी उपस्थिति से ही यह अर्थ निकालना कि उसने दंगाइयों को उकसाया, उचित नहीं है। हो सकता है वह व्यक्ति दंगाइयों को समझाने गया हो और व्यक्तिगत द्वेष के कारण कुछ लोगों ने यह अफवाह उड़ा दी हो कि वह दंगाइयों को उकसा रहा था। जगदीश टाइटलर और सज्जनकुमार के नाम अक्सर सन 1984 के दंगों में आते रहते हैं, यह प्रकरण बन्द

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने चाहिए। न्याय व्यवस्था में भी यह प्राविधान होना चाहिए कि निरर्थक ही केवल सन्देहों और बीसियों साल पश्चात न्यायिक प्रक्रिया से मुकदमें का हल तलाशने के स्थान पर ऐसे प्रकरण बन्द कर दिए जाए। दंगा कोई नहीं चाहता। यही स्थिति गुजरात के सम्बन्ध में है जब गोधरा में दो रेल के कोच मय जीवित यात्रियों सहित जला दिए गए तो यह कैसे अपेक्षा की जा सकती है कि प्रतिक्रिया स्वरूप कोई दंगा नहीं होना चाहिए था। कोई व्यक्ति कितना ही अहिंसावादी क्यों ना हो लेकिन जब उसके परिजनों, पुरजनों अथवा जाति बन्धुओं पर कोई बात आती है तो उसकी प्रतिक्रिया आवश्यक है। गुजरात दंगों में कोई दोषी नहीं है, दोषी हैं वह व्यक्ति जिन्होंने गोधरा में दो रेल कोच जीवित यात्रियों सहित जला दिए थे। सन 1984 के दंगों में दोषी हैं वह लोग जिन्होंने इन्दिरा गाँधी की हत्या की थी। अकारण ही कुछ लोगों को दंगों के नाम पर प्रताड़ित करना, मामलों को लम्बा खीचना, न्यायिक प्रक्रिया का उचित प्रयोग नहीं है। पन्द्रह–बीस साल बाद चेहरे भी याद नहीं रहते अतः किसी व्यक्ति की इस बात पर कैसे विश्वास किया जा सकता है कि उसने किसी व्यक्ति विशेष को दंगाइयों को उकसाते हुए देखा था। ऐसे व्यक्ति के सन्दर्भ में यह प्रश्न भी उत्पन्न होता है। कि वह दंगे वाली जगह पर क्या कर रहा था, जहां दंगा हो रहा था और जब दंगाई लोगों को मार रहे थे वहां वह क्यों खड़ा था और वह कैसे बच गया। दंगाइयों का कोई धर्म नहीं होता, कोई जाति नहीं होती, केवल एक जुनून होता है, जिसके आधीन दंगा भड़कता है और दंगाई भड़कते हैं। कोई भी व्यक्ति दंगा नहीं भड़काता न दंगाइयों को उकसाता है। मेरा व्यक्तिगत अनुभव है कि जब मेरे शहर में पहली बार साम्प्रदायिक दंगा हुआ। तब मैं स्वयं अपने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर के सामने दुकान जलाने वालों को रोकने के लिए गया था और दुकाने सभी अल्पसंख्यक समुदाय की थी। लेकिन शहर के सभी लोग अपने होते हैं। इसी नाते मैं दंगाइयों से यह अनुरोध करने गया था कि भाई आगजनी बन्द करो लेकिन उनमें से एक व्यक्ति ने मुझसे यह कहा कि अंकल आप यहाँ से चले जाइये वर्ना आप भी आग की लपेट में आ जाएंगे। यदि उस समय मेरा कोई विरोधी वहाँ होता तो वह यह कह सकता था कि मैं दंगाइयों को भड़काने गया था जबकि वास्तव में ऐसा नहीं था। यही स्थिति सन 1984 के दंगों और गुजरात के दंगों के सन्दर्भ में भी हो सकती है, जिन लोगों पर दंगाइयों को भड़काने के आरोप लगाए जा रहे हैं, वह वहाँ पर हो हीं नहीं अथवा यदि हों भी तो दंगाइयों को समझाने गए हो, रोकने गए हो। व्यर्थ ही केवल कुछ तथाकथित गवाहों के बयान पर विश्वास करके कुछ व्यक्तियों को दंगा भड़काने और दंगाइयों को उकसाने के आरोप में प्रताड़ित करना उचित नहीं है। सरकार तथा न्यायपालिका दोनों को इस सन्दर्भ में दंगे के मामले में इस दृष्टिकोण पर भी विचार करना चाहिए।

□□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–22

कितना भयानक सत्य है कि मिड डे मील खाने के बाद उन 22 बच्चों की मौत हो गई, जो भारत का भविष्य बन सकते थे। क्या कसूर था उन बच्चों का जिनको मिड डे मील के नाम पर जहर परोसा गया। क्या हमारी सम्वेदनाएँ, हमारे अन्दर की मानवता पूर्णतया मर चुकी है। हम जानते हैं, हम देख रहे हैं, कि जो भोजन बच्चों को मिड डे मील के नाम पर परोसा जा रहा है, वह सड़े–गले अनाज व सब्जियों से बना है। जो तेल उसके अन्दर प्रयोग किया जा रहा है वह घटिया गुणवत्ता का है। किन्तु फिर भी उन गरीब बच्चों को खाने के लिए दे रहे हैं, जिनका एकमात्र पाप गरीबी है। सरकार की यह मिड डे मील की योजना गरीब बच्चों की मौत का कारण बन गई और ऐसा पहली बार नहीं हुआ है। यह बहुत समय से चल रहा है और इस प्रकार के कई हादसे हो चुके हैं। एक स्थान पर 22 बच्चों की मौत हुई और उसी समाचार के बराबर में मधुबनी में 50 बच्चे मिड डे मील खाने के बाद बीमार लिखे गए हैं। अरसे से यह मिड डे मील का धन्धा चल रहा है। दोषी वह भी कम नहीं हैं, जिन्होंने मिड डे मील की योजना बनाई है। वह राष्ट्र चरित्र से वाकिफ हैं। उनको मालूम है कि घोटालों के सिरमौर देश में मिड डे मील में भी घोटाला होगा। और परिणाम होगा विषाक्त भोजन खाकर बच्चों की मौत। जानकारी के अनुसार सम्भवतः रुपये 4 प्रति बच्चा भोजन के लिए दिए जाते हैं। कौन से सरकारी आँकड़ों से यह 4 रुपये दिए जाने काफी बताये गए हैं। 4 रुपये में बच्चों को क्या भोजन दिया जा सकता है सिवाय सड़े–गले अनाज और सब्जियों के।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और घोटाला करने के बाद तो 4 रुपये भी 4 नहीं रहेंगे। चार हाथों में गुजरने के बाद स्व. राजीव गाँधी के अनुसार 4 रुपये में से कितना अंश लक्ष्य तक पहुँचेगा। यह भी चिन्तनीय है। इससे पूर्व भी कई बार यह लिखा जा चुका है कि मिड डे मील की प्रथा समाप्त कर दी जानी चाहिए इसके स्थान पर गरीब बच्चों को कपड़े, पुस्तकें तथा अन्य सुविधाएँ प्रदान की जानी चाहिए और साथ ही बच्चों के माँ–बाप को आर्थिक सहायता प्रदान की जानी चाहिए ताकि बच्चे अपने घर का बना खाना विद्यालय के अन्दर आकर खा सके। और वह विद्यालय द्वारा दिया जाना ही माना जाए लेकिन उसमें घोटाले के अवसर कम है अतः इस स्कीम को किसी ने नहीं माना। मैं पुनः प्रधानमंत्री को लिख रहा हूँ कि मिड डे मील के सन्दर्भ में उपरोक्तानुसार उचित निर्णय लेने की कृपा करें। लेकिन जिनके पैरो बिवाई नहीं होती। वह पराई पीर नहीं समझ पाते। यही कारण है कि हमारे नेतागण, हमारे अफसर मिड डे मील की योजना को बन्द नहीं होने देना चाहते। क्योंकि उनके बच्चे इस योजना के अन्तर्गत नहीं आते। अतः उनकी जान को कोई खतरा नहीं है। गरीब बच्चे मर रहे हैं तो मरते रहे। सरकार वैसे भी जनसंख्या के प्रश्न पर चिन्तित है इसीलिए ऐसी घटनाओं पर आँख मूँद लेती है। वैसे भी केन्द्र सरकार इस बारे में चुप्पी साधे हुए है, क्योंकि बिहार के मुख्यमंत्री के साथ नई–नई दोस्ती हुई है, वह किसी सम्भाषण के कारण, किसी आलोचना के कारण खतरे में न पड़ जाए। हाँ, अगर यह घटना गुजरात की हुई होती तो काँग्रेस के 90 प्रतिशत मंत्री अलग–अलग बयान देकर पूरी जिम्मेदारी मोदी पर थोप दिए होते। वाह रे! हमारा देश और वाह री! हमारी राजनीति। बिहार के शिक्षामंत्री ने जो बयान दिए हैं। उनके सन्दर्भ में भी जाँच होनी चाहिए। लेकिन जाँच से

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई परिणाम नहीं निकलता सारे मामले ठण्डे बस्ते में बाँध दिए जाते हैं। लगता है हमारी राजनीति इतनी निर्मम हो चुकी है कि बच्चों की लाशों पर राजनीति की रोटियाँ सेक रही है। सोचिए इस पर गम्भीरता से सोचिए।

चीन में रिश्वत लेने के आरोपी एक उच्च पदस्थ व्यक्ति को मृत्युदण्ड दिया गया। रिश्वत लेना इतना भयंकर अपराध नहीं है, जितनी भयंकर सजा दी गई। किन्तु भयंकर सजा का ही परिणाम, लाभदायक होता है भविष्य में उस अपराध की पुनरावृत्ति नहीं होती, जिस पर भयंकर सजा दी जाती है। भारतवर्ष के अधिकारियों और नेताओं को इससे सबक लेना चाहिए और वोट की राजनीति की दलदल से निकलकर देशहित में भी सोचना चाहिए। जहाँ घोटालों की भरमार है वहाँ इस प्रकार की सजा यदि आरम्भ कर दी जाए तो हो सकता है आने वाली पीढ़ी घोटालों से नफरत करने लगे और घोटाला ना करें। लगता नहीं कि ऐसा कुछ होगा। या हमारा देश इस बात से कुछ सबक लेगा। चीन हमारे ऊपर हावी है। क्योंकि चीन में राष्ट्रीय चरित्र जिन्दा है। वहाँ देशहित सर्वोपरि है। चीन में कानून का पालन हँसी–मजाक नहीं है, बल्कि कठोरता से होता है। चीन में समान आचार संहिता है। वहाँ यह नहीं है कि परिवार नियोजन का कानून एक सम्प्रदाय पर लागू नहीं होता और दूसरे पर लागू होता है, वहाँ जो कानून बनता है वह पूरे देश के लिए बनता है, वहाँ ऐसा कोई कानून नहीं बनता जिसमें यह लिखा जाए कि यह सम्पूर्ण चीन में केवल कतिपय प्रान्तों को छोड़कर लागू होगा। हँसी आती है, अपने देश के कानून पर जिसमें वोट की राजनीति के कारण, तुष्टिकरण/आरक्षण के कारण भिन्न–भिन्न सम्प्रदाय के लिए भिन्न–भिन्न कानून बनाये गए हैं। जहाँ प्रति व्यक्ति

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा भी अलग–अलग बोली जाती है और इस भाषा के मतलब भी अलग–अलग निकाले जाते हैं, एक व्यक्ति यदि श्रीमान कहता है तो सामने वाला उसे सम्मान की दृष्टि से देखता है और दूसरा व्यक्ति यदि श्रीमान कहता है तो सामने वाला उसे अपने ऊपर व्यंग्य समझता है। चीन में क्रिकेट नहीं खेली जाती, चीन में घोटाले नहीं होते। और यदि 100–50 साल में कोई घोटाला हो जाता है तो सम्भवतः उसकी सजा भी मृत्यु दण्ड ही होती होगी। चीन छेड़छाड़ करने को तत्पर है और हम छेड़छाड़ से बचना चाह रहे हैं। क्योंकि हमारा आत्मबल, हमारा मनोबल, कमजोर हो चुका है। रिश्वत लेने वाला व्यक्ति, घोटाला करने वाला व्यक्ति सुख की नीदं नहीं सो सकता। उसे सोने के लिए भी नींद की गोलियाँ या शराब के सेवन की आवश्यकता होती है। और यही कारण है कि उसका हृदय कमजोर हो जाता है, उसका आत्मविश्वास समाप्त हो जाता है। चीन का आत्मबल बढ़ा हुआ है, उसका सैन्य बल बढ़ा हुआ है, उसकी महत्वकांक्षाएँ बढ़ी हुई है। चीन की महत्वाकांक्षाएँ केवल कुर्सी तक सीमित नहीं है, हमारी महत्वकांक्षाएँ केवल कुर्सी तक सीमित होकर रह गई है। हमारे नेता और अफसर केवल कुर्सी के बारे में ही सोचते हैं, देश में कुछ भी होता रहे उनकी कुर्सी पर आँच नहीं आनी चाहिए और यही कारण है कि आज मिड डे मील में विषाक्त भोजन दिया जा रहा है। हर पल आतंकी हमले की सम्भावना रहती है। अपने देशवासियों पर विश्वास न करके हम घुसपैठियों पर विचार करते हैं। जिस कारण प्रान्त में अस्थिरता है। और अस्थिरता की आड़ में सरकार के घोटाले सुरक्षित रहते हैं। सरकार चाहती है कि जनता को देश के बारे में सोचने का अवसर ही नहीं मिलना चाहिए। ऐसे प्रकरण रोज उत्पन्न होने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए, जिसमें जनता का ध्यान बँटा रहे और वह बड़े–बड़े घोटालों की ओर न सोच सके इसीलिए हमारे यहाँ घोटालों की छूट है और परोक्ष रूप से यह नारा विद्यमान है घोटालों की छूट है, लूट सके तो लूट। अन्तकाल पछताएगा जब प्राण जाएँगे छूट।

हमारे देश के क्रिकेटर कितने निर्विकार और कितने निर्लिप्त हैं कि केदारनाथ त्रासदी हुई। पूरे भारतवर्ष से गए हुए तीर्थ यात्री वहाँ पर फँस गए, जिसमें से कुछ लापता हो गए और कुछ की मृत्यु हो गई। जो बचकर आए वह भूखे–प्यासे बड़े कष्टों को सहते हुए सेना द्वारा बचाकर लाए गए किन्तु तीर्थ यात्रियों के मरने अथवा लापता होने का कोई शोक क्रिकेटरों द्वारा नहीं बनाया गया, शोक में क्रिकेट का खेल बन्द नहीं किया गया। क्रिकेटरों की तरफ से इस त्रासदी में कोई सहयोग देने की जानकारी भी मुझे नहीं है। अभी हाल ही में बिहार में 22 बच्चे मिड डे मील खाने से मर गए। और काफी बच्चे अस्पतालों में जिन्दगी और मौत के बीच लटके हुए हैं। मधुबनी में 50 बच्चे विषाक्त भोजन खाने से बीमार हो गए किन्तु क्रिकेटर निर्विकार भाव से क्रिकेट खेलते रहे। देश में खेलने के बाद विदेशी दौरे की तैयारी हो रही है। असल में, क्रिकेटर हो या नेता अफसर हो या जनता, ऐसा अवसर कोई नहीं जाने देना चाहता। जिसमें फिक्सिग हाथ से फिसल जाए। क्रिकेटरों को खेल–खेल में तो करोड़ों मिलते ही हैं। विज्ञापन से अलग लाभ होता है भारतवर्ष की भोली जनता क्रिकेटर के नाम पर उस वस्तु को खरीदने को तैयार हो जाती है (ऐसा उस वस्तु के उत्पादक मानते हैं।) जिसकी गुणवत्ता की गारण्टी क्रिकेटर की नहीं होती। आये दिन आतंकी हमले होते हैं। आसाम में घुसपैठियों के कारण साम्प्रदायिक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दंगे भी हुए लेकिन क्रिकेटर इससे अप्रभावित रहे। क्रिकेटरों को भी केवल एक ही सोच रहती है। चिड़िया की आँख की तरह केवल वह व्यक्तिगत लाभ के बारे में ही सोचते हैं। क्रिकेट, जिसमें फिक्सिंग आम हो चुकी है, जो खेल षडयंत्र के आधीन लन्दनवासियों ने हम पर थोपा है उसे हम प्रतिबन्धित नहीं कर सकते। क्योंकि सरकार के ही बहुत से नेताओं का वरदहस्त क्रिकेट के खेल को प्राप्त है। वह सभी देश जिनमें क्रिकेट नहीं खेली जाती प्रगति कर रहे हैं। वहाँ पर भूख से आत्महत्याएँ नहीं हो रही हैं। वहाँ जनजीवन इतना असुरक्षित नहीं है। जितना भारत में है। यहाँ पर पूरा ध्यान कुर्सी और क्रिकेट पर है। चीन में क्रिकेट नहीं खेली जाती। वहाँ पर ओलम्पिक पर होने वाले खेलों पर विशेष ध्यान दिया जाता है, जिसमें खिलाड़ी सर्वाधिक स्वर्ण पदक जीतकर लाते हैं। इसी प्रकार अमेरिका, जर्मनी, जापान, रूस में क्रिकेट नहीं खेली जाती। वहाँ पर भी ओलम्पिक में खिलाड़ी झोली भरकर स्वर्ण पदक व कांस्य पदक जीतकर लाते हैं। जबकि भारतवर्ष जिसमें 12 महीने तीसों दिन तथा 12 घण्टे क्रिकेट खेली जाती है, वहाँ पर स्वर्ण पदक स्वप्न बनकर रह जाता है तथा कांस्य और रजत पदक भी 10 की संख्या के अन्दर–अन्दर सीमित रहते हैं। क्रिकेट खेलने वाले और देखने वालों की सोच इतनी बदल जाती है कि वह केवल क्रिकेट की ही सोचते हैं। शत्रु सीमाओं का अतिक्रमण करें, देश के अन्दर साम्प्रदायिक झगड़े हों, आतंकवादी सैनिक मुख्यालयों पर हमला करें। मिड डे मील खाने से बच्चों की मौत हो। अथवा बच्चे बीमार हों, बड़े–बड़े घोटाले होते रहे। गैंगरेप हो तथा अपहरण और अन्य अपराध कदम–दर–कदम होते रहे। क्रिकेटर की निर्लिप्तता अथवा निर्विकारिता अप्रभावित रहती है। और अप्रभावित

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहते हैं वह सभी व्यक्ति जो क्रिकेट से सम्बन्धित होते हैं। क्रिकेट देश को दीमक की तरह चाट रही है लेकिन हम 12 महीने तीसो दिन तथा 12 घण्टे क्रिकेट खेल रहे हैं, जिस दिन क्रिकेट खिलना बन्द हो जाएगी उस दिन भारत प्रगति के सर्वोच्च शिखर खड़ा दिखाई देगा ऐसा मेरा विश्वास है।

□□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–23

अर्द्धरात्रि में बाइकर्स स्टंट कर रहे थे। स्टंट करने में अपनी जान जोखिम में डालनी पड़ती है तथा आसपास रहने वालों को भी दहशत होती है। कोई भी व्यक्ति बाइकर्स के स्टंट को पसन्द नहीं करता सभी इसे गलत समझते हैं। यही कारण है कि आसपास के लोगों ने पुलिस को फोन किया और पुलिस घटनास्थल पर पहुँची और बाइकर्स को रोकना चाहा। सम्भवतः बाइकर्स नशे में थे इसलिए उन्होंने पुलिस पर पथराव कर दिया। और जब पुलिस हावी होती नजर आई तो भागने लगे। पुलिस ने उन्हें रोकना चाहा तो वह पुलिस को भी धता बताने लगे और कहने पर भी नहीं रूके। पुलिस द्वारा तथाकथित रूप से एक बाइकर्स की मोटरसाइकिल के टायर पर गोली चलाई गई। निशाना चूक गया अथवा बाइकर्स ने स्टंट दिखाया तो गोली टायर में न लगकर बाइकर्स को लगी। जिससे एक बाइकर्स की मृत्यु हो गई और दूसरा घायल हो गया। राजधानी में बवाल मच गया। और सही भी है जब मृत्यु होती है तो आक्रोश जन्म लेता है। और यही हुआ जो आसपास के लोग बाइकर्स के विरुद्ध पुलिस को सूचना दे रहे थे वही मरने वाले के परिवार के समर्थन में खड़े हो गए और प्रदर्शन होने लगे। पुलिस ने स्पष्टीकरण दिया कि बाइकर्स पथराव कर रहे थे, जिससे पुलिस की गाड़ियों के शीशे टूट गए। सम्भवतः एक–दो पुलिस कर्मचारी को चोट भी लगी होगी। पुलिस ने बाइकर्स को रोकना चाहा लेकिन वह नहीं रूके। मुझे मरने वाले से सहानुभूति है, उसके परिवार से भी सहानुभूति है किन्तु जो बच्चा अपने माता–पिता से झूठ बोलकर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्द्धरात्रि में मोटर साइकिल पर स्टंट करने जाता है और स्टंट करने से पहले सम्भवतः नशा भी करता है और पुलिस के रोकने पर उस पर पथराव भी करता है। उस पर उसके जीते–जी तो सहानुभूति हो नहीं सकती, हाँ मरने पर परिस्थिति बदल जाती है। कुछ लोगों ने कहा कि पुलिस को गोली नहीं चलानी चाहिए थी। तो क्या करना चाहिए था बाइकर्स को टॉफी बाँटनी चाहिए थी या भईया, भाई साहब, बेटा कहकर उनके पत्थर खाते हुए उनके घर तक पीछा करना चाहिए था। जितनी गलती बाइकर्स की है अगर उतनी ही गलती पुलिस की भी मान ली जाए तब भी गलती ने गलती को जन्म दिया है अतः दोनों गलतियाँ शून्य हो जाती हैं। हमें पुलिस का मनोबल नहीं गिराना चाहिए और भविष्य में बाइकर्स स्टंट न करें यह प्रयास करना चाहिए। लेकिन माँ–बाप क्या करें। बूढ़े माँ–बाप का एकमात्र पुत्र जो घर का खर्चा चलाता है, क्या उनके कहने में चलता है। क्या वह माँ–बाप को बताकर जाता है कि आज वह स्टंट करने जा रहा है। नहीं। क्योंकि यदि वह बता देगा तो माँ–बाप रोकेगे और वह दोस्तों से कहकर आया है अतः वह जाएगा अवश्य भले ही माँ–बाप को नाराज करके जाए। मैं समझता हूँ कि पुलिस की कोई गलती नहीं है। गलती है बाइकर्स की। उन्हें पुलिस के आने पर रूक जाना चाहिए था और यह कहना चाहिए था कि वह कोई गैरकानूनी काम नहीं कर रहे किन्तु पुलिस पर पथराव करके पुलिस के आने पर भागकर अपराध अवश्य हुआ। अगर वह पुलिस के कहने पर रूक जाते तो गोली नहीं चलती, अधिक से अधिक पुलिस कुछ बाइकर्स को पकड़कर थाने ले आती अथवा डाँट–डपटकर छोड़ देती, लेकिन किसी बाइकर की मृत्यु नहीं होती। गोली पथराव के बाद चली जिसका बच्चा मरा है, वह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो पुलिस को ही दोष देगा लेकिन निष्पक्ष व्यक्ति यह सोचने के लिए अवश्य विवश है कि वास्तव में दोष किसका है केवल मात्र पुलिस को दोष देना और पुलिस का मनोबल गिराना और मृत्यु पर प्रदर्शन करना राजनीति हो सकती है। सहानुभूति नहीं।

बम्बई में अभिनेता महोदय पर हिट एंड रन का केस चल रहा है। एक नीति के तहत इस केस को 12 वर्ष तक दबाए रखा गया ताकि साक्षी और साक्ष्य दोनों नष्ट हो जाएँ। और अब जब केस शुरू हुआ है तो यह प्रश्न किया जा रहा है कि क्या यह वास्तव में हिट एंड रन का केस है। मारने वाले कितना बड़ा मजाक कभी–कभी करते हैं, जिस घटना में मौका–ए–वारदात पर कुछ लोग एक गाड़ी से कुचल कर मर गए और वह गाड़ी अभिनेता महोदय चला रहे थे तो अब इसमें या तो हिट एंड रन का केस बनता है अथवा जान बूझकर हत्या का केस बनता है। बहुत हलका करें तो मोटर दुर्घटना का केस बनता है लेकिन अपराध हुआ है कुछ लोगों की मौत हुई है, भले ही गैर इरादतन हत्या हुई हो, लेकिन हत्या हुई है और जब हत्या हुई है तो हत्यारा गैर इरादतन हो अथवा नशे में हो अथवा मोटर दुर्घटना हो अथवा हिट एंड रन हो, उसे अपराध की सजा मिलनी ही चाहिए। अपराध अपराध ही होता है, जैसे संजय दत्त ने गैर कानूनी तरीके से अपने पास हथियार रखे जो एक अपराध था, उसका विगत अभिलेख अपराधिक नहीं था फिर भी अदालत से उसे सजा मिली। अभिनेता महोदय का विगत अभिलेख भी देखा जाना चाहिए उनका अपने सहयोगियों से बरताव भी देखा जाना चाहिए। और यह भी देखा जाना चाहिए कि काले हिरण की हत्या का मामला भी इसी प्रकार का है। वह केस भी साथ–साथ ही चलना चाहिए। कानून से ऊपर कोई नहीं है भले ही वह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिनेता हो या नेता। कानून में पक्षपात भी नहीं होना चाहिए निर्णय निष्पक्ष होना चाहिए। यदि जान बूझकर गलत निर्णय दिया जाता है तो उसका प्रभाव देने वाले को भी झेलना पड़ेगा और जिसके पक्ष में दिया गया है उसे भी ईश्वर माफ नहीं करेगा। क्या कारण है कि मुकदमे 10–10 या 20–20 वर्ष तक लम्बित रहते है। क्यों नहीं त्वरित निर्णय किया जाता। अदालतों में न्यायाधीश कम है उनकी नियुक्ति क्यों नहीं की जाती। यदि नियुक्ति के लिए किसी प्रकार का अनुग्रह वांछनीय है तो वह कानूनी कर दिया जाना चाहिए। परदे के पीछे से अनुग्रह प्राप्त करके नियुक्तियाँ करना कुछ दिन तक तो लाभप्रद महसूस होगा किन्तु अन्त अच्छा नहीं होगा। उत्तर प्रदेश में ही लगभग 80 न्यायामूर्तिगण के पद रिक्त हैं क्यों नियुक्ति नहीं हो रही जबकि न्याय मंत्री भी उपलब्ध हैं, मुख्य न्यायाधीश भी उपलब्ध है और वह सभी विभाग जो नियुक्ति में किसी न किसी प्रकार से सहयोगी होते हैं वह भी कार्यरत हैं। किसका स्वार्थ अटक रहा है। क्या प्रतिभाओं की कमी हो गई हैं उच्च न्यायालय में अधिवक्ता तथा न्यायिक अधिकारियों दोनों में से चयन होता है। दोनों में प्रतिभाएँ भरी पड़ी है किन्तु सम्भवतः चयनकर्ता अपने किसी निजी स्वार्थ के कारण नियुक्तियाँ नहीं कर रहे हैं। प्रधानमंत्री को इस ओर देखना चाहिए। उस मंत्री की आवश्यकता नहीं है, उस मुख्य न्यायाधीश को भी पदमुक्त कर दिया जाना चाहिए जो नियुक्तियों को विलम्बित कर रहा है अथवा अनदेखा कर रहा है। न्याय का सिद्धान्त है शीघ्र, सस्ता व सुलभ किन्तु नियुक्तियाँ न होने से उच्च न्यायालयों में और अधीनस्थ न्यायालयों में मुकदमें लम्बित पड़े रहते हैं और उनका निस्तारण नहीं होता, जिससे जनता को विशेष कर हानि होती है और सम्भवतः

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपराधियों को लाभ होता है। जो समाजहित में नहीं है।

देश की जनता के साथ सरकार का एक और मजाक कितना घिनौना है कि प्रति व्यक्ति एक केन्द्रीय मंत्री कहते हैं, एक रुपये में पेट भर सकता है। एक राज्य मंत्री कहते हैं पांच रुपये में पेट भर सकता है। एक सज्जन कहते हैं, 12 रुपये में भरपेट भोजन हो सकता है। इन लोगों को तो शर्म नहीं आती क्योंकि यह तो काँग्रेस के प्रति वचनबद्ध है कि वह जो भी निश्चित करेगी उसका वह समर्थन करेंगे, योजना आयोग ने 32 रुपये प्रतिदिन कमाने वाले व्यक्ति को गरीबी रेखा से बाहर कर दिया। और समर्थन में खड़े हो गए देशभक्त काँग्रेसी नेता, जिन्होंने 1 रुपया, 5 रुपया और 12 रुपया को पेट भरने के लिए काफी मान लिया और काँग्रेस हाईकमान जिनका रसोई खर्च हजारों रुपये प्रतिदिन है और वह अधिकतर अकेली ही रहती हैं वह चुप रहीं। हमारे प्रधानमंत्री भी कुछ नहीं बोले अन्य सभी पार्टियों को मैं यह सीख देना चाहूँगा कि अनुशासन हो तो काँग्रेस दल जैसा। एक नेता जो कुछ कहता है, सभी उसके समर्थन में खड़े हो जाते हैं, भले ही वह राबर्ट बढ़ेरा से सम्बन्धित हो अथवा कोयला घोटाले से सम्बन्धित हो। काँग्रेस का कोई सांसद, मंत्री अथवा विधायक अपनी पार्टी के नेता द्वारा कहीं गई किसी बात के विरोध में नहीं बोलता। जब टी.वी. वालो ने जगह–जगह जाकर भोजन के सम्बन्ध में जानकारी ली तब यह स्थिति स्पष्ट हुई कि 12 रुपये क्या 52 रुपये में भी भरपेट भोजन नहीं मिल सकता। साधारण होटल में भी 80 रुपये की थाली मिलती है। गरीबों के साथ ऐसा मजाक एक प्रजातांत्रिक देश में करना सर्वथा अनुचित है। और यह सब मंत्री जिन्होंने 1 रुपया, 5 रुपया और 12 रुपया को पेट भरने के लिए उचित ठहराया है उन सभी को आचार संहिता का

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उल्लंघन और अमर्यादित भाषण का दोषी मानकर कार्यवाही की जानी चाहिए। इनका रसोईघर घटाकर तदनुसार कर दिया जाना चाहिए और जिस व्यक्ति ने 32 रुपये प्रतिदिन कमाने वाले व्यक्ति को गरीबी रेखा से ऊपर मान लिया है उसको तो पदमुक्त कर देना चाहिए। यदि किसी स्त्री की ओर देखना अथवा उस पर कोई टिप्पणी करना अपराध की श्रेणी में आता है तो गरीब लोगों के साथ इस प्रकार का मजाक भी अपराध की श्रेणी में आना चाहिए। जनता को इस बात का संज्ञान लेना चाहिए और उन सभी मंत्रियों, सांसदों, विधायकों की सभाओं का बहिष्कार करना चाहिए जो इस प्रकार की अनर्गल बातें करते हैं और भारत की जनता का मजाक उड़ाते हैं।

□□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–24

बहुत समय से एक सत्य मन में छुपा हुआ है, जो उजागर होना चाहता है लेकिन कुछ संकोच भी है। परन्तु सोचता हूँ कि आज उसे कागज पर उतार ही दूँ। समय के साथ शायद मैं न रहूँ लेकिन यह सत्य जिन्दा रहना चाहिये। अगर हिटलशाही कहीं देखनी है तो आप उत्तर प्रदेश में आइये। यहाँ पूर्णरूप से हिटलरशाही विराजमान है। मुख्यमंत्री जी ने एक महिला आईएएस अधिकारी को बिना किसी गलती के केवल अपने पारिवारिक मित्र को प्रसन्न करने के लिए निलम्बित कर दिया और उस पर अनकिया आरोप लगाया कि उसने एक ऐसी दीवार गिराई, जिससे साम्प्रदायिक दंगा हो सकता था। जनता ने इस पर आवाज उठाई और यह साबित करने का प्रयास किया कि आईएएस अधिकारी की कोई गलती नहीं थी और उसने वह दीवार नहीं गिराई। लेकिन अपने पारिवारिक मित्र को प्रसन्न करने के लिए केवल 41 मिनट की कार्रवाई में निलम्बित आईएएस अधिकारी को दोषमुक्त नहीं किया गया और निलम्बन बरकरार रखा। यही नहीं जिस जिलाधिकारी ने विवादित अधिकारी के पक्ष में क्लीन चिट दी थी। उसे भी स्थानान्तरित कर दिया गया। बात यहीं नहीं रूकी विवादित महिला आईएएस अधिकारी के पति का भी स्थानान्तरण कर दिया गया। ऐसी हिटलरशाही आपको कहीं और देखने को नहीं मिलेगी और भी सुनिये एक मंत्री जी को प्रसन्न करने लिए 84 कोसी यात्रा पर रोक लगा दी गई। साधु संतों द्वारा की जा रही इस यात्रा में कोई उपद्रव नहीं होना था कोई हिंसा की आशंका नहीं थी और डॉ. कटारिया के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुसार यात्रा का पता भी नहीं चलता। लेकिन बहुसंख्यकों की इच्छाओं का अनादर करते हुए साधु संतों का असम्मान करते हुए यात्रा पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। पुलिस की पूरी फौज अयोध्या जी में तैनात कर दी गई और यात्रा करने वाले भक्तों को गिरफ्तार कर लिया गया। मंत्री जी प्रसन्न तथा उनके अनुगामी प्रसन्न भले ही किसी पर अत्याचार हो अथवा किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचे इससे कोई सरोकार नहीं है। ऐसी सुन्दर हिटलरशाही आपको पूरे विश्व में कहीं भी देखने को नहीं मिलेगी। धार्मिक कार्यक्रमों में कोई भी व्यक्ति हस्तक्षेप नहीं करता। कोई भी सरकार रोक नहीं लगाती लेकिन उत्तर प्रदेश की सरकार की हिटलरशाही प्रवृत्ति केवल एक व्यक्ति को प्रसन्न करने के लिए महिला आईएएस अधिकारी को निलम्बित भी कर सकती है तथा एक चचा मंत्री को खुश करने के लिए पूरे समाज को प्रतिबन्धित कर सकती है। मैं सैल्यूट करता हूँ ऐसे हिटलर मुख्यमंत्री को और उनके चहेते चचाओं को।

अनेक सत्य हैं जिनकी ओर आपका ध्यान नहीं जाता। इसलिए मेरा कर्त्तव्य बनता है कि मैं आपका ध्यान आकर्षित करता रहूँ। कुछ मुख्यमंत्री प्रान्तों को अपनी जागीर समझते है और तदनुसार भाषण देते रहते है। हमारे प्रधानमंत्री जी की मौजूदगी में जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री जो पारिवारिक परम्परा के अनुसार मुख्यमंत्री बने हैं, ने घोषणा की कि कश्मीर से धारा 370 नहीं हटेगी। सुनिश्चित कर दिया कि कश्मीर मेरे बाप का है। यहाँ मेरा हुकूम चलेगा। प्रधानमंत्री जी चुप बैठे रहे। न ऐसा प्रधानमंत्री कहीं देखने को मिलेगा और न ही ऐसा जागीरदार देखने को मिलेगा, जो हिन्दुस्तान के एक प्रान्त में लगी धारा 370 को हटाने को तैयार नहीं है और इस हद तक कह सकता है कि यदि धारा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

370 हटाई गई तो हमारे शवों पर से गुजरना होगा। धारा 370 नेहरू और अब्दुल्ला का षडयंत्र था। सत्य लिखना कभी–कभी कष्टदायक होता है। अतः सत्य नहीं लिखूँगा लेकिनइस षडयंत्र के कारण कश्मीर एक प्रकार से कहने मात्र के लिए भारत का हिस्सा है, जबकि वास्तव में भारत के सारे कानून भी वहाँ पर लागू नहीं होते। जो चीनी यहाँ 30 रुपये किलो बिकती है। वहाँ कि निवासियों को 10 रुपये किलो दी जाती है। यही अनुपात अन्य वस्तुओं का भी है। हम कश्मीरियों को प्रसन्न करने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं लेकिन वह प्रसन्न नहीं होगे यह सुनिश्चित है। उमर अब्दुल्ला ही नहीं और भी मुख्यमंत्री ऐसे है, जो प्रान्तों में अपने बाप का राज मानते है। प्रान्तों को अपनी जागीर मानते है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के चाचाश्री ने फरमायां कि यूपी को नहीं बँटने देंगे। जैसे कि यूपी उनके घर का आँगन है। जिसको बाँटना कानूनी तौर से निषेध है। जबकि यूपी के बँटने से कई आंदोलन ठण्डे पड़ जायेंगे। वकीलों का पश्चिमी उत्तर प्रदेश में हाई कोर्ट की बैंच की स्थापना का आंदोलन अपने आप रद्द हो जायेगा क्योंकि जब यूपी के दो हिस्से हो जायेंगे तो हर हिस्से के लिए स्वतः पृथक–पृथक उच्च न्यायालय होगा। लेकिन हमारे नेताजी इसको अपनी जागीर समझते है और इसके बँटवारे को तैयार नहीं है जैसे उत्तर प्रदेश ऐसे का ऐसा ही उनके साथ जायेगा। इसी प्रकार का एक और उदाहरण है। महाराष्ट्र में राज ठाकरे आये दिन बिहारियों को मुम्बई से निकालने की बात करते है। वह भी महाराष्ट्र को अपने बाप का राज समझते है। बिहारी जिनके दम पर वहाँ दूध की डेयरी चलती है। जो दफ्तरों में खाने का डिब्बा पहुँचाते है। स्टेशन पर कुलीगिरि करते है। घरों में नौकर लगे हुये हैं। उनके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराष्ट्र से निकल जाने के बाद कितना खालीपन आ जायेगा इसका अंदाजा श्रीमान को नहीं है। लेकिन सुर्खियों में रहने के कारण इस प्रकार की बातें करना आवश्यक है।

आशाराम जी पकड़े गये। बड़े नाटक करने के बाद गिरफ्तारी हुई। समर्थकों ने मीडियाकर्मियों पर भी हमला किया। इस सबसे क्या लाभ हुआ। कुछ लाख समर्थकों ने जरूर हंगामा किया लेकिन एक अरब हिन्दुस्तानी आशारामजी की गिरफ्तारी के पक्ष में थे। जिस तरह की उछल कूद श्री जी मंच पर करते थे। उससे जनता ऊब गई थी। अमर्यादित कार्यप्रणाली अधिक दिन तक लोगों को बाँधे नहीं रख सकती। इसलिए जनता चाहती थी कि नाटक का पटाक्षेप शीघ्र हो। यदि छुपाछुपी का खेल न खेला जाता तो श्री आशाराम जी का सम्मान बढ़ता लेकिन छुपाछुपी के खेल ने पुलिस की भी प्रतिष्ठा गिराई और आशारामजी की भी प्रतिष्ठा धूमिल हुई। तथा यह भी सिद्ध हो गया कि श्री जी में कोई आध्यात्मिक शक्ति नहीं है। कोई मंत्र शक्ति नहीं है। अतः जो धर्मभीरू इस बात से डरते थे कि कहीं श्री जी श्राप न दे दे उनका भी डर समाप्त हो गया। एक प्रकार से धार्मिक आवरण हट गया। जनता के नेत्रों पर बँधी पट्टी खुल गई। अब सम्भवतः श्री जी को वह सम्मान शायद ही कभी मिले, जो वह भोग रहे थे। यदि किसी ने बलात्कार का आरोप लगाया है तो हमें उसका सामना करना चाहिए। उसे गलत सिद्ध करना चाहिये। छुपाछुपी करने से बचकर निकलने के प्रयास से गलत संदेश जाता है। सम्भवतः श्री आशाराम जी के समर्थकों में कोई भी ऐसा नहीं था जो उन्हें सही मशवरा देता। सभी अपना बाहुबल दिखाने को बेचैन थे और मीडियाकर्मियों पर उन्होंने बाहुबल दिखाया, जिसकी हानि भी श्री आशराम जी व उनके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्थकों को ही हुई। पीड़ित लड़की के पक्ष में लोग खड़े होते चले गये और छुपाछुपी के खेल के कारण आशाराम जी के विरुद्ध होते चले गये। पुलिस को भी आरोपों का सामना करना पड़ा। नेताओं के नाम भी आये। भले ही आशारामजी पर लगा आरोप गलत सिद्ध हो जाये, लेकिन आरोपों से भागना बुद्धिमानी नहीं है। आरोपों का सामना करना सत्यता का प्रतीक है और भागना झूठ का आवरण। जनता यह सोचने को विवश हो गयी कि कोई भी लड़की अपने ऊपर बलात्कार किये जाने का जघन्य झूठमूठ कर्म स्वीकार नहीं करेगी और ना ही कोई बाप अपनी लड़की को बलात्कार का पीड़ित बताकर समाज के सामने पेश करेगा। खैर, जो हुआ सो हुआ अब श्री आशाराम को न्याय प्रक्रिया का सम्मान करना चाहिये और न्याय के रखवालों को भी निष्पक्ष जाँच करनी चाहिये। किसके प्रति सहानुभूति प्रकट की जाये? किसको दोष दिया जाये? किसने अपराध किया है और कौन निर्दोष है? यह समय सिद्ध करेगा। हमें निर्णाक भूमिका में नहीं आना है। केवल न्यायिक प्रक्रिया की प्रतिक्षा करनी है।

❑❑

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–25

यह भी एक सत्य है कि बहुत बड़े–बड़े बदमाश कभी कभी मुठभेड़ में मारे जाते हैं। कुछ मुठभेड़ों को फर्जी बताया जाता है और कुछ वास्तविक होती हैं। ये जाँच से पता चल सकता है कि कौन सी मुठभेड़ वास्तविक है, कौन सी फर्जी है। वास्तविक मुठभेड़ पर किसी को कोई आपत्ति नहीं होती लेकिन फर्जी मुठभेड़ पर अक्सर प्रश्न उठते रहते हैं और मानवाधिकार भी चिल्लाता है तथा पुलिस पर भी सवाल उठते हैं। हो सकता है मुठभेड़ फर्जी हो और सवाल सही उठा हो लेकिन यह भी देखना आवश्यक है कि जिसको तथाकथित रूप से फर्जी मुठभेड़ में मारा गया है, वह मारने योग्य था या नहीं। यदि किसी आतंकवादी को मुठभेड़ में मार दिया गया और उस मुठभेड़ को फर्जी बताकर शोर मचने लगा तो यह गलत है। आतंकवादी को तो मरना ही था। अगर वह फर्जी मुठभेड़ में मारा गया तो कोई पाप नहीं हुआ। यदि कोई बलात्कारी, अपहरणकर्ता, हत्यारा, उग्रवादी, नक्सली तथाकथित रूप से फर्जी मुठभेड़ में मारा जाना बताया जाता है तो उस पर शोर नहीं मचना चाहिए, हाँ अगर फर्जी मुठभेड़ में मारा गया व्यक्ति निर्दोष है तब मारने वाले के विरुद्ध वांछित कार्यवाही होनी चाहिए। जाँच इस बात की आवश्यक है कि जो मारा गया वह मारने योग्य था अथवा नहीं। वह वांछित अपराधी था अथवा नहीं। क्योंकि यदि आप अपराधी को नहीं मारेंगे तो वह आपको मार देगा। यदि आप आतंकवादी को नहीं मारेंगे तो आतंकवादी आप पर, समाज पर, रेल में, बस में कहीं पर भी विस्फोट कर सकता है। ऐसे व्यक्ति का मरना ही अच्छा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, जो समाज का शत्रु है, जो देश का शत्रु है, जो व्यक्ति विशेष का शत्रु है। ऐसे व्यक्ति की मुठभेड़ पर चीखना चिल्लाना नहीं चाहिए। यदि मुठभेड़ में मरने वाला व्यक्ति वांछित था उसका मर जाना देशहित में है तो मुठभेड़ यदि फर्जी भी है तो भी उसको अधिक तूल नहीं देना चाहिए। लेकिन मेरे इस कथन की आड़ में निर्दोष व्यक्ति को मुठभेड़ में मार गिरा देना क्षम्य नहीं है। ऐसे मारने वाले व्यक्ति को मृत्युदण्ड मिलना चाहिए, जो किसी निर्दोष व्यक्ति को फर्जी मुठभेड़ में मार देता है और ऐसे मारने वाले को शाबाशी मिलनी चाहिए, जिसने तथाकथित फर्जी मुठभेड़ में किसी आतंकवादी को, हत्यारे को, तेजाब डालने वाले को, बलात्कारी को, नक्सली को या उग्रवादी को मार गिराया है। क्योंकि यह समाज के शत्रु हैं, इनका मर जाना ही समाज और देश के हित में है फर्जी मुठभेड़–फर्जी मुठभेड़ कहकर पुलिस का मनोबल गिराने का प्रयास नहीं होना चाहिए। इस सन्दर्भ में वस्तुस्थिति का अध्ययन करके उचित निर्णय लेने के बाद ही मुठभेड़ को परिभाषित किया जाना चाहिए।

डी0जी0 बंजारा कई वर्ष से जेल में बन्द थे। यह सत्य है किन्तु बिना अपराध सिद्ध हुए, बिना किसी सजा की घोषणा के सात साल तक जेल में बन्द रखना और मुकदमे को लम्बित रखना कदापि उचित नहीं है, डी0जी0 बंजारा के विरुद्ध आरोप क्या है कि उन्होंने गुजरात में हुए दंगों में फर्जी मुठभेड़ में कुछ लोगों को मार गिराया। बात वहीं आती है कि जो मारे गए क्या वह वांछित थे। यदि वह वांछित थे तो मुठभेड़ फर्जी हो या वास्तविक मारने वाले का अपराध इस दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए यदि मरने वाले की मृत्यु देशहित में है तो फर्जी मुठभेड़–फर्जी मुठभेड़ कहकर चीखना–चिल्लाना नहीं चाहिए। इस सन्दर्भ में यह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार करना भी आवश्यक है कि सात वर्ष तक एक व्यक्ति को निलम्बित करके जेल में क्यों रखा गया क्यों उसके मामले में निर्णय नहीं हुआ। यह सजा से भी बड़ी सजा होती है कि आप सात साल से अपने आरोपों की सत्यता अथवा असत्यता की प्रतिक्षा कर रहे हैं। एक तथ्य और भी है। सात वर्ष तक श्री बंजारा चुप क्यों रहे अब से पहले उन्होंने यह मुद्दा क्यों नहीं उठाया। क्या मोदी के संसद में जाने के रास्ते को बाधित करने के लिए विपक्षियों की साजिश के अन्तर्गत यह मुद्दा इस समय उठाया गया है। यदि ऐसा है तो श्री बंजारा को अपनी उस चिट्ठी के सम्बन्ध में सार्वजनिक रूप से स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए। क्योंकि ऐसा नहीं लगता कि इस मुद्दे को उठाने के लिए वह किसी खास मौसम की इन्तजार में थे बल्कि ऐसा लगता है कि जान बूझकर इस समय नरेन्द्र मोदी की प्रधानमंत्री पद की घोषणा को पलीता लगाने के लिए यह मुद्दा उठाया गया। भाजपा को इस चिट्ठी को इस दृष्टिकोण से नकार देना चाहिए तथा इस सम्बन्ध में नरेन्द्र मोदी का साथ दिया जाना चाहिए। एक हताश व्यक्ति द्वारा लिखी गई चिट्ठी किसी के भाग्य की निर्णायक नहीं हो सकती। श्री नरेन्द्र मोदी को भी इस सम्बन्ध में अपनी स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए। सम्भवतः अमित शाह पर भी फर्जी मुठभेड़ के सन्दर्भ में प्रश्न उठाया गया है, मेरा कहना है कि इस मामले में कानून में संशोधन होना चाहिए। यदि तथाकथित मुठभेड़ में ऐसा व्यक्ति मारा जाता है, जो वांछित है, जो हत्यारा है, जो तेजाब डालकर भाग रहा है, जो बलात्कारी है, नक्सली है, उग्रवादी है या आतंकी है तो उसकी मुठभेड़ में मृत्यु को फर्जी कहकर अनचाहा माहौल उत्पन्न नहीं करना चाहिए। फर्जी मुठभेड़ नहीं अवांछित व्यक्ति की, निर्दोष व्यक्ति की, मृत्यु

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर प्रश्न उठाना जायज है। डी0जी0 बंजारा के मामले में न्यायिक निर्णय तुरन्त होना चाहिए यह भी एक प्रकार से अत्याचार है कि एक व्यक्ति को निलम्बित करके सात साल तक जेल में रखा जाए जबकि उसने एक देशद्रोही को मुठभेड़ में मारा है, एक आतंकवादी को मुठभेड़ में मारा है।

भारतवर्ष साम्प्रदायिक दंगों का देश बन गया है। यह बँटवारे का दुष्परिणाम है। जिसके कारण हिन्दू–मुस्लिम के बीच में इतनी गहरी खाई हो गई है कि अक्सर साम्प्रदायिक दंगे हो जाते हैं। कुछ नेता भी इन साम्प्रदायिक दंगों के लिए जिम्मेदार हैं। जनता साम्प्रदायिक दंगे नहीं चाहती लेकिन तथाकथित कट्टरपंथी लोग हालात को बिगाड़ने में सक्रिय हो जाते हैं और देश के एक भाग में हुआ दंगा अन्य भागों में फैलने में देर नहीं लगती। लेकिन कभी सोचा है कि साम्प्रदायिक दंगे क्यों होते हैं। साम्प्रदायिक दंगे किसी घटना की प्रतिक्रिया मात्र होते हैं। किसी सरकारी अथवा सामाजिक व्यक्तियों की गलती के कारण घटित घटना की प्रतिक्रिया स्वरूप साम्प्रदायिक दंगे होते हैं, यदि हम मूलभूत घटना को रोक देते तो साम्प्रदायिक दंगे ना होते। उदाहरण के लिए सन 1984 में सिक्ख विरोधी दंगे हुए। मुकदमे अब तक चल रहे हैं। कितना हास्यास्पद है कि 30 साल तक एक मुकदमा चल रहा है और निस्तारित नहीं हो रहा। सन 1984 के सिक्ख विरोधी दंगे सरकारी नीति का दुष्परिणाम थे। सरकार ने एक व्यक्ति को इतना उठाया कि वह भिण्डरावाला बन गया और जब भिण्डरावाला सरकार का ही विरोध करने लगा और सरकार के विरोध में खड़ा हो गया तब आपरेशन ब्लू स्टार करना पड़ा। आपरेशन ब्लू स्टार में बहुत से निर्दोष लोग मारे गए उन निर्दोषों के परिवारों में आक्रोश उत्पन्न हुआ, जिसकी प्रतिक्रिया

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वरूप आपरेशन ब्लू स्टार की जिम्मेदार मानते हुए श्रीमती इन्दिरा गांधी के सिख अंगरक्षक ने उनकी हत्या कर दी। सारे देश में हा–हाकार मच गया। चूंकि हत्या सिख अंगरक्षक ने की थी इसलिए इन्दिरा गांधी के समर्थकों ने प्रतिक्रियास्वरूप सिखों पर हमला बोल दिया और सिख विरोधी दंगे की आग देश में फैल गई। यह थी क्रिया की प्रतिक्रिया इसी प्रकार गुजरात में सन 2002 में जो दंगे हुए वह भी क्रिया की प्रतिक्रिया थी, गोधरा में रेलवे के दो कोच में यात्रा कर रहे तीर्थयात्रियों को कुछ सिरफिरों ने जिन्दा जला दिया। प्रतिक्रियास्वरूप गुजरात में दंगे की आग फैल गई। मूल गलती सिखों के सन 1984 के दंगों में इन्दिरा गांधी के अंगरक्षक की थी और 2002 के गुजरात दंगों में गोधरा काण्ड में तीर्थयात्रियों को जलाने वाले व्यक्तियों की थी। किसी एक व्यक्ति को दंगे के लिए दोष देना कदापि उचित नहीं है। क्योंकि जब दंगे की आग भड़कती है तो वो शहर के शहर, गांव के गांव और कभी देश के देश अपनी चपेट में ले लेती है। किसी एक व्यक्ति का दोष नहीं होता, दंगों के सन्दर्भ में दोष निर्धारित करते समय इस बात पर ध्यान देना आवश्यक है कि दंगा क्यों हुआ, प्रारंभ किसने किया। मूलभूत गलती किसकी थी गुजरात दंगों के लिए मोदी को या अमित शाह को दोष देना उतना ही अनुचित है, जितना सिख विरोधी दंगों में जगदीश टाइटलर अथवा सज्जन सिंह को दोष देना है। क्या किसी ने इन चारों व्यक्तियों को बन्दूक हाथ में लेकर लोगों को मारते देखा है। क्या किसी ने इन लोगों को हमलावरों की भीड़ में सम्मिलित देखा है केवल मात्र उकसावे का दोष लगाकर उपरोक्त चारो तथा अन्य सम्बन्धित व्यक्तियों को दोषी मानना और दंगे का जिम्मेदार मानना अनुचित तथा अनैतिक है। साम्प्रदायिक दंगा एक जुनून

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है, एक आग होती है, जो किसी की बात सुनने को तैयार नहीं होती। किसी के समझाने से भड़कती आग नहीं रूकती। अतः दंगों के मामले में अनर्गल बयान देने की अपेक्षा यह देखा जाना चाहिए कि दंगा क्यों हुआ, दंगे के समय हथियारबन्द कौन लोग थे, केवल मात्र उकसावे की बात कहकर प्रतिष्ठित व्यक्तियों पर दोषारोपण करना और मुकदमें में फँसाना अनुचित तो है ही अमर्यादित और अनैतिक भी है।

❑❑

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–26

मुजफ्फरनगर में हुए दंगे में एक नग्न सत्य सामने आया और वह था सत्ता की अक्षमता। सत्य यह है कि अल्पसंख्यक समुदाय का एक युवक काफी समय से एक बहुसंख्यक समुदाय की छात्रा को परेशान कर रहा था, छेड़छाड़ से तंग आकर उस छात्रा ने अपने घर पर शिकायत की। छात्रा के दो भाई घटना वाले दिन उसके साथ गए और उन्होंने छेड़छाड़ करने वाले व्यक्ति को पकड़ लिया तथा मारा। मारपीट में वह युवक दम तोड़ गया। क्योंकि एक तो गलत काम करने से उसका आत्मबल कम हो गया था दूसरे छात्रा के दोनों भाइयों ने अधिक पिटाई कर दी। यह एक भयंकर गलती थी। छेड़छाड़ के विरोध में इतना नहीं पीटना चाहिए था कि आरोपी मर जाए। सत्य यह है कि जब यह घटना घटी तो इसकी पुलिस को जानकारी अवश्य हुई होगी। पहली गलती तो छात्रा के दोनों भाइयों ने की कि उन्होंने पुलिस को विश्वास में नहीं लिया और इस मामले को पुलिस के हाथों में सौंपने के स्थान पर कानून को अपने हाथ में ले लिया। दूसरी गलती जो इससे भी ज्यादा गैरजिम्मेदाराना थी वह यह थी कि पुलिस ने त्वरित कार्यवाही करके उन दोनों भाइयों को गिरफ्तार क्यों नहीं किया, जिन्होंने आरोपी के साथ मारपीट की यदि उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाता तो यह चिन्गारी आग नहीं बनती और मुजफ्फरनगर नहीं जलता। इसके बाद भी यदि दोनों भाइयों की मृत्यु के पश्चात उनको मारने वालों को भी गिरफ्तार कर लिया जाता तब भी बात सम्भल सकती थी। लेकिन ऐसा कुछ नहीं किया गया। सब खुले घूमते रहे। सबके मन में चिन्गारी सुलगती

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही। पुलिस ने कोई त्वरित कार्यवाही नहीं की। जब हत्याओं का सिलसिला बढ़ चला और यह व्यक्तिगत संघर्ष जातिगत संघर्ष में बदल गया और पुलिस के नियंत्रण से सबकुछ बाहर हो गया तब सेना बुलानी पड़ी। और फिर स्थिति नियंत्रण में आयी। किन्तु क्या यह आग बुझ गई। क्या दोनों ओर के लोग शान्त हो गए। समाचार पत्रों के अनुसार लगभग 45 लोग मरे हैं। जिनके मरे हैं उनके मन में अवश्य ही आक्रोश होगा, दुख होगा और कभी–कभी बदला लेने की भावना इतनी प्रबल हो जाती है जितनी की छात्रा को छेड़ने वाले व्यक्ति और उसको पीटने वाले दोनों भाइयों के संदर्भ में हुई। यदि सत्ता पक्ष सचेत होता तो यह व्यक्तिगत संघर्ष जातिगत संघर्ष में नहीं बदल सकता था और इतनी हत्याएँ नहीं होती जितनी हो गई। यात्रियों को बसों से उतार कर परेशान किया गया, सरकारी सम्पत्ति को आग लगाई गई। पथराव फाइरिंग की घटनाएँ हुई। यह सब टल सकता था लेकिन पता नहीं किस कारण से पुलिस ने त्वरित कार्यवाही नहीं की।

दूसरा सच यह है कि आखिर लड़कियों को छेड़ने की घटनाएँ क्यों बढ़ रही हैं, क्या एक वर्ग विशेष को सरकार की ओर से पूरी छूट है अथवा व्यक्ति इतना निरंकुश और उच्छृंखल हो चुका है कि वह सजा से नहीं डरता। ऐसा नहीं कि यह पहली घटना थी आये दिन अखबारों में छपता रहता है कि लड़की से छेड़छाड़ की और विरोध करने पर उसके भाई को पीट दिया अथवा पिता को पीट दिया, घर में घुसकर गोली मार दी, तोड़फोड़ की, और मारपीट की। ऐसा क्यों हो रहा है क्या सत्ता अक्षम है अथवा तुष्टिकरण के अन्तर्गत कोई कार्यवाही नहीं करना चाहती या उसे अपने वोटों का भय सताता है। व्यक्ति की जान माल की

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई कीमत सरकार की नजर में सम्भवतः अब नहीं है। केवल एक ही बात सरकार के सामने रहती है कि अपनी कुर्सी बची रहे और आने वाले चुनाव में हम पुनः सत्ता में आ जाए और हमारा वोट बैंक बना रहे, इसी वोट बैंक के चक्कर में यह सब घटनाएँ हो रही हैं। लड़की से छेड़छाड़ करने वाले युवक उसके मना करने पर अथवा विरोध करने पर तेजाब फेंक देते है अथवा मिट्टी का तेल डालकर आग लगा देते हैं। कभी–कभी इसी श्रृंखला में बात इतनी बढ़ जाती है गैंगरेप और दुष्कर्म तक होते हैं तथा गैंगरेप, दुष्कर्म के बाद हत्या भी हो जाती है। इस सबका कारण क्या है। युवक इतने अन्धे क्यों हो रहे हैं कि वह अपनी बहन को छेड़े जाने से तो आक्रोशित हो उठते हैं और दूसरे की बहन को छेड़ने में हर्ष अनुभव करते हैं। क्या हम अपने बच्चों को समझा नहीं सकते, क्या माँ–बाप का कर्त्तव्य केवल बच्चे पैदा करने तक ही रह गया है क्या बच्चों को समझाने वाली परिस्थिति अब नहीं रही। क्या माँ–बाप समझाना नहीं चाहते। बच्चों से डरते हैं अथवा बच्चे इतने उच्छृंखल हो चुके हैं कि माँ–बाप की सुनना पसन्द नहीं करते। ऐसा क्या हो गया है कि सभ्यता और संस्कृति लुप्त होती जा रही है। माता–पिता को अपने आचरण में झाँक कर देखना चाहिए क्या उनके आचरण के कारण बच्चे बिगड़ रहे हैं। अथवा वह अपनी कमजोरियों की वजह से बच्चों को समझाने में असमर्थ हैं। प्रत्येक दंगे अथवा जातिगत संघर्ष का केन्द्र बिन्दु छेड़छाड़ की घटनाएँ बन गई हैं हमारा सामाजिक कर्त्तव्य है कि हम अपने बच्चों को इस प्रकार की घटनाओं के करने से रोकें, उन्हें छेड़छाड़ के दुष्परिणामों से अवगत कराएँ। क्योंकि छेड़छाड़ के कारण ही मुजफ्फरनगर का यह काण्ड हुआ, जिसमें बहुत से लोग घायल हुए, बहुत से लोग मरे और यह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैमनस्य कब तक चलेगा इसका कोई आँकलन नहीं किया जा सकता यदि दोनों पक्षों के लोगों ने समझदारी से काम नहीं लिया तो आग सुलगती रहेगी। आवश्यकता है छेड़छाड़ को रोकने की। माँ–बाप का कर्त्तव्य है कि अपने बच्चों के क्रियाकलाप पर ध्यान दें, उनके उठने–बैठने पर ध्यान दें, उनके आचरण पर ध्यान दें और उनकी सौहबत पर ध्यान दें। सम्भवतः माँ–बाप इस बात से डरते हैं कि सख्ती करने से बच्चा घर से भाग सकता है अथवा कुछ और घटित कर सकता है, लेकिन ऐसा नहीं है, घर से भागने वाले बच्चे भी अपना भविष्य खराब कर लेते हैं, वैसे भी अब बच्चे घर से भागने में विश्वास नहीं रखते बल्कि घर में ही दंबगई करने में विश्वास रखते हैं। बच्चों की यह दंबगई रोकनी होगी विश्वास मानिए यदि छेड़छाड़ की घटनाएँ नहीं होंगी तो जातिगत संघर्ष भी नहीं होंगे।

मुजफ्फरनगर काण्ड में एक सत्य और स्पष्ट हुआ कि विरासत की राजनीति करते हुए नेताजी ने अपने पुत्र को मुख्यमंत्री बना दिया और स्वयं प्रधानमंत्री बनने के सपने देखने के लिए दिल्ली पहुँच गये उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री हर मंत्री का भतीजा हो गया और स्पष्ट है कि भतीजा चचा पर हावी नहीं हो सकता यही कारण है कि सब मंत्री मनमानी कर रहे हैं। अपनी–अपनी इच्छा के अनुसार वैमनस्य का बदला ले रहे हैं। उचित यह था कि नेताजी अपने पुत्र को शनैः–शनैः दायित्व सौंपते जैसे कि पहले कोई साधारण मंत्रालय देते, फिर गृह मंत्रालय देते और तदुपरांत मुख्यमंत्री तक पहुँचाते लेकिन सीधे–सीधे मुख्यमंत्री बना देना कष्ट का कारण हुआ अधिकारी भी निरंकुश हो गए और मंत्री भी कहने से बाहर रहे। सत्ता एक प्रकार से अक्षम हो गई और 27 अगस्त से लेकर 8 सितम्बर तक मुजफ्फरनगर में जो हुआ वह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि सेना ना आती तो और भी आगे चल सकता था। क्योंकि सेना तुष्टिकरण की बीमारी से ग्रस्त नहीं है। एक और सच्चा झूठ सामने आया नेताजी टी0वी0 पर प्रत्येक घण्टे बाद कह रहे हैं कि दो दिन में स्थिति पर नियंत्रण पा लिया गया। वह दो दिन कौन से थे और किस तारीख से आरम्भ हुए क्या सेना के आने के बाद दो दिन में नियंत्रण पाया गया। यदि देश में ऐसी घटनाओं में सेना ही आवश्यक हो गई है तो देश को सेना के हवाले ही कर दिया जाना चाहिए। वैसे तो सन 1947 में बोये गये यह विष वृक्ष इतने बड़े हो गए हैं कि इनमें आपसी खीचतान होती ही रहती है। लेकिन यदि नेतृत्व इन्दिरा गाँधी जैसा हो तो इस खीचतान पर अंकुश लग सकता है। वैसे भी उत्तर प्रदेश इतना बड़ा प्रान्त है कि इसका नियंत्रण एक अनुभवहीन प्रान्तीय मुखिया नहीं कर सकता। सुश्री मायावती जी का उत्तर प्रदेश के विभाजन का प्रस्ताव सर्वथा उचित था। उत्तर प्रदेश को अधिक नहीं तो दो भागों में बाँट देना चाहिए था वैसे यदि चार भाग भी कर दिए जाएँ तो भी वह पंजाब और हरियाणा की अपेक्षा पृथक–पृथक रूप से कमोबेश बराबर या बड़े ही रहेंगे और ऐसी परिस्थिति में ही सही नियंत्रण हो सकता है। लेकिन पता नहीं क्यों केन्द्र सरकार इस सन्दर्भ में निर्णय नहीं ले सकी। जनता को प्रान्तों के बँटवारे पर आपत्ति नहीं होनी चाहिए बल्कि खुश होना चाहिए। हाँ, मंत्रियों को अवश्य परेशानी हो सकती है क्योंकि जिन्हें घोटाले की आदत है, उन्हें बड़े प्रान्त में घोटाला करने का मंच अच्छा मिल जाता है। और वह मनमाफिक घोटाला कर सकते हैं, क्योंकि बड़े प्रान्त में बड़ी समस्याएँ होती हैं और बड़ी समस्याओं के लिए पैकेज भी बहुत बड़े–बड़े होते हैं, जो केन्द्र सरकार से भी मिलते हैं और प्रान्तीय कोष से भी मिलते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता को तो बँटवारे से लाभ ही होना है। इन सभी बिन्दुओं पर गहन मंत्रणा और विचारण की आवश्यकता है। मंत्रियों के समूह के अतिरिक्त प्रत्येक मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री की एक सलाहकार समिति होनी चाहिए। जिसमें निष्पक्ष और स्वंतत्र विचारों वाले ईमानदार व्यक्ति हों जो सही सलाह दे सकते हैं और सही मार्गदर्शन और दिशा निर्देशन सत्ता को प्रदान कर सकते हैं। अवसरवादी और चाटुकार देश का सर्वनाश ही कर सकते हैं भला नहीं कर सकते।

❑❑

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–27

मुजफ्फरनगर में झगड़े के सम्बन्ध में उत्तर प्रदेश सरकार का एक और सत्य सामने आया। जब बहन को छेड़ने वाले युवक की दो भाइयों ने हत्या कर दी और बदले में उन भाइयों की हत्या कर दी गई तो पुलिस का नियंत्रण और घेराबन्दी शुरू हो गई थी। घर–घर तलाशी अभियान शुरू हो गया था। लखनऊ तक इस तलाशी अभियान की खबर पहुँची और लखनऊ से जिलाधिकारी और एस0पी0 के स्थानांतरण के आदेश जारी हो गये क्योंकि लखनऊ में बैठे एक व्यक्ति को पता था कि तलाशी में उसके वर्ग के व्यक्तियों के पास सर्वाधिक अवैधानिक हथियार मिलेंगे, इसलिए उन हथियारों की बरामदगी न हो और उन व्यक्तियों पर कोई कार्यवाही न हो जिनके पास यह हथियार पाये जाए तुरन्त ही राजनीतिक हस्तक्षेप किया गया और खुलेआम एक वर्ग को बचाओ, का निर्देश जारी हो गया। झगड़ा होना ही था और झगड़ा हुआ। व्यक्तिगत झगड़ा, साम्प्रदायिक झगड़े में बदल गया। मारकाट करते हुए कई दंगाइयों को पकड़ा गया पर तुरन्त ही लखनऊ के आदेश पर छोड़ दिया गया। दूरदर्शन पर स्टिंग आपरेशन में एस0पी0 से लेकर पुलिस के सिपाही तक सभी ने राजनीतिक हस्तक्षेप की बात स्वीकार की और यहाँ तक बताया कि किस प्रकार झगड़े को बढ़ने दिया गया। पुलिस फायर करने की इजाजत माँगती रही, जो नहीं दी गई। सबकुछ नियोजित ढंग से किया गया। शांतिपूर्ण महापंचायत से लौटने वाले व्यक्तियों पर घात लगाकर हमला किया गया। और उसमें निर्दोष लोग मार दिए गए। ट्रैक्टर जला दिए गए, मोटर साइकिलें

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहर में फेंक दी गई। हत्या करके मृतकों को नहर में फेंक दिया गया। पुलिस हस्तक्षेप करने के लिए तैयार थी लेकिन उसको निर्देश नहीं दिए गए कत्लेआम चलता रहा। क्रिया की प्रतिक्रिया होती रही, बात बढ़ती रही और स्थिति तुमने हमे मारा, हम तुम्हें मारेंगे की बनती गई। आज ए0डी0जी0 लॉ एंड आर्डर उत्तर प्रदेश छोड़ना चाहते हैं। लम्बी छुट्टी पर चले गए हैं और भी कई अफसर जाएँगे, जाना चाहेंगे। सपा नेता पहले ही कह चुके हैं कि वह बगैर आई0ए0एस0 और आई0पी0एस0 अधिकारियों के सरकार चला सकते हैं चलाएँ? कौन मना करता है लेकिन अधिकारी अब उत्तर प्रदेश में सेवा नहीं करना चाहते। स्टिंग आपरेशन में जिन पुलिस अधिकारियों ने सच्ची बात कही उनके तबादले कर दिए गए, कुछ निलम्बित भी होंगे। नेताओं की गिरफ्तारियाँ शुरू हो गई हैं, इसकी प्रतिक्रिया भी होगी। उत्तर प्रदेश सरकार नहीं चाहती कि झगड़े रूके। इसलिए एक वर्ग को प्रसन्न करने के लिए सरकार वह सबकुछ करने को तैयार है, जो उसके हाथ में है और केन्द्रीय सरकार की बेबसी देखिये कि वह सब कुछ देख–सुनकर भी उत्तर प्रदेश सरकार को बर्ख़ास्त नहीं कर सकती। क्योंकि केन्द्रीय सरकार भी सपा की बैसाखी पर टिकी हुई है। उत्तर प्रदेश में सरकार बर्खास्त होगी तो उसकी प्रतिक्रिया केन्द्र में भी होगी और तदुनुसार केन्द्र सरकार भी अल्पमत में आ सकती है। भविष्य क्या होगा। वर्तमान जल रहा है। भूत से हम शिक्षा नहीं लेना चाहते। केवल सत्ता चाहते हैं और उसके लिए कोई भी तुरूप का पत्ता प्रयोग करना पड़े हम करेंगे।

भेदभाव और पक्षपात तो उत्तर प्रदेश सरकार की पुरानी नीति है। एक व्यक्ति को प्रसन्न करने के लिए दुर्गा शक्ति नागपाल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का उस दोष में निलम्बन किया गया, जो उसने किया ही नहीं था लेकिन अपने एक मित्र को प्रसन्न करना था अतः एक घण्टे से भी कम समय में एक महिला आई0ए0एस0 अधिकारी को निलम्बित कर दिया गया। इतना ही नहीं महिला आई0ए0एस0 अधिकारी के प्रशासनिक सेवारत पति का भी स्थानांतरण कर दिया गया। बात यही नहीं खत्म हुई, जिस जिलाधिकारी ने दुर्गा शक्ति नागपाल को क्लीन चिट दी थी उसका भी स्थानांतरण कर दिया गया। श्री मुलायम सिंह वि0हि0प0.के मुखिया से मिले। उत्तर प्रदेश के प्रमुख नेता नाराज हो गए और उनको प्रसन्न करने के लिए चौरासी कोसी परिक्रमा पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। इस झगड़े में भी तुष्टिकरण चरम सीमा पर रहा। लखनऊ से एक वर्ग विशेष को बचाने के निर्देश जारी होते रहे और दूसरे वर्ग पर शिकंजा कसता गया। हत्यारों को छोड़ दिया गया। एफ0आई0आर0 तक में तब्दीली की गई। सभी कुछ दूरदर्शन पर स्टिंग आपरेशन में दिखाया। जिस समय स्टिंग आपरेशन चल रहा था मुजफ्फरनगर में बिजली बन्द कर दी गई। दस लाख रुपये का मुआवजा मृतकों के परिवार को देना निश्चित किया गया है। मैंने केन्द्र सरकार से अनुरोध किया है, कि इस मामले में भेदभाव न हो इसका ध्यान रखा जाए। इसी प्रकार नुकसान की भरपाई करते समय भी ध्यान रखा जाना चाहिए। जिन नेताओं को भड़काऊ भाषण देने के आरोप में गिरफ्तार किया जा रहा है, उनसे अधिक दोष उस व्यक्ति अथवा नेताजी का है, जिसने एक प्रमुख नेताजी के नाम से पुलिस को निर्देश दिए। इसमें सी0बी0आई0 जाँच होनी चाहिए कि किस टेलीफोन नम्बर से, किस व्यक्ति के द्वारा झगड़े के दौरान पुलिस को निर्देश दिए गए और उन पुलिस वालों को भी सुरक्षा प्रदान की जाए, जिन्होंने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच बयान किया है। बयान यहाँ तक हुआ है, कि पुलिस के पास सक्षम हथियार नहीं थे। फिर भी पुलिस उनसे काम लेना चाहती थी लेकिन ऊपर से हवाई फायर करने तक की अनुमति नहीं मिली। आखिर कौन शख्स था, जो एक वर्ग को खुली छूट देकर दूसरे वर्ग को हानि पहुँचाना चाहता था। निष्पक्ष व्यक्तियों को साथ लेकर एक जाँच कमेटी सी0बी0आई0 के साथ बनाई जाए, जो सच का पता लगा सके। क्योंकि यदि सच का पता नहीं लगा और उसका वांछित उपचार नहीं किया गया तो निश्चित रूप से चिंगारी फिर भड़क सकती है। अगर मुआवजे और क्षतिपूर्ति में भेदभाव या पक्षपात किया गया तो उसके भी दुष्परिणाम हो सकते हैं। यह कोई साधारण बात नहीं है कि पुलिस का सबसे बड़ा अधिकारी उत्तर प्रदेश से छुट्टी/माफी चाहता है और यहाँ काम नहीं करना चाहता। इस सम्बन्ध में मुझे एक शेर का एक मिसरा याद आ रहा है–

चमन से रूठकर जाना हमारा, हकीकत में शिकस्ते बागवाँ हैं।

उस अफसर की उसमें कोई हार नहीं है कि वह उत्तर प्रदेश में काम नहीं करना चाहता। हार है उत्तर प्रदेश सरकार की, जहाँ से अफसर अपनी जान छुड़ाना चाहते हैं, क्योंकि कुछ लोगों को प्रसन्न करने के लिए यह सरकार किसी भी हद तक जा सकती है। जैसा कि अब तक हुआ है। अनगिनत झगड़े हो चुके हैं और सभी में एक वर्ग विशेष को संतुष्ट करने का प्रयास किया गया है। केन्द्र सरकार गाँधी जी के बन्दर बनी हुई बैठी है। क्योंकि उसको सत्ता में बने रहना है इसलिए उत्तर प्रदेश सरकार भी सत्ताच्युत नहीं हो सकती। लोग राम भरोसे जी रहे हैं। उत्तर प्रदेश में रह रहे हैं। लेकिन भविष्य अन्धकारमय है। यदि उत्तर प्रदेश में राष्ट्रपति शासन नहीं हो सकता तो कम से कम इसका

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो भाग में बँटवारा किया जाना चाहिए। ताकि नियंत्रण भली प्रकार हो सके। लेकिन सम्भवतः कुछ नहीं होगा। क्योंकि केन्द्र सरकार अपनी कुर्सी बचाने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार की कुर्सी नहीं हिलायेगी।

उत्तर प्रदेश भेदभाव और पक्षपात प्रदेश बन गया है। चाटुकारिता और अवसरवादिता चरम पर है। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने साहित्यकारों को पुरस्कृत किया। सर्वोच्च पुरस्कार एक ऐसे व्यक्ति को दिया गया, जो मुलायम सिंह यादव का निकटस्थ है, जो सर्वश्रेष्ठ मंचीय कवि तो कहला सकता है लेकिन महान साहित्यकार नहीं है। केवल दो दर्जन पुस्तकें तथा कुछ सौ कविताएँ लिखने वाला व्यक्ति चार दर्जन पुस्तकें लिखने वाले व्यक्ति पर भारी पड़ गया क्योंकि तुष्टिकरण और अनुग्रह के आधार पर एक मंचीय कवि को महान साहित्यकार मान लिया गया और उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने सर्वोच्च सम्मान उसको प्रदान किया जबकि उसकी अधिकांश रचनाएँ उर्दू से सम्बन्धित हैं, इसी प्रकार और भी कई अन्य पुरस्कृत व्यक्तियों के नाम मैंने उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य संस्थान को अवगत कराए, जो किसी न किसी रूप में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान से सम्बन्धित रहे हैं। सर्वश्रेष्ठ मंचीय कवि जिनको महान साहित्यकार के रूप में सर्वोच्च सम्मान दिया गया। वह भी किसी सरकारी हिन्दी संस्थान से सम्बन्धित हैं। यह सब पुरस्कार अनुग्रह तथा व्यक्तिगत रूप से जानकार व्यक्तियों को दिए गए निष्पक्ष रूप से कोई परीक्षण नहीं हुआ। मैंने उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के अध्यक्ष महोदय से कहा था कि मेरे प्रस्ताव को मेरे द्वारा नामांकित पुरस्कृत व्यक्तियों के प्रस्तावों से मिलान करने की कृपा करें और यदि हो सके तो मुझे उनसे शास्त्रार्थ का भी अवसर प्रदान करें। मैंने यहाँ तक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा जिन चार व्यक्तियों को आपने पुरस्कृत किया है, उन्हीं चारों व्यक्तियों की एक समिति बना दीजिए और वह अपने कृत कार्यों तथा साहित्य के क्षेत्र में मेरे कृत कार्यों से मिलान कर लें। जो ऊपर हो उसको पुरस्कृत किया जाए। ऐसे बहुत से साहित्यकार मौजूद है, जिन्होंने सौ से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, लेकिन वह खड़े रह जाते हैं और अनुग्रह के आधार पर पक्षपात करते हुए पुरस्कार प्रदान कर दिए जाते हैं। पूर्व में जब सपा सरकार सत्ता में थी तब एक अभिनेता और उसके परिवार को यश भारती का पुरस्कार दिया गया था। तथा उत्तर प्रदेश को उत्तम प्रदेश सन्दर्भित करते हुए नारा लगवाया गया था। सपा शासन अगले सत्र में धराशायी हुआ। आप पक्षपात करेंगे, भेदभाव करेंगे, अन्याय करेंगे तो कितने दिन चलेगा जब तक ईश्वर आपकी त्रुटियों को, आपकी हठधर्मियों को सहन कर सकता है तभी तक आप अस्तित्व में रहेंगे जब घड़ा भर जायेगा, तब बड़े से बड़े अपराधी को भी सजा मिलेगी, ऐसा प्राविधान है और मुझे विश्वास है कि उत्तर प्रदेश में जितने पक्षपात और जितने भेदभाव और जितने सत्ता के अहंकार में गलत कार्य हो रहे हैं इसका परिणाम सपा को झेलना पड़ेगा। हर उस संस्थान को झेलना पड़ेगा, हर उस संस्थान के मुखिया को झेलना पड़ेगा, जो इस पक्षपात/अन्याय/हठधर्मी में संलिप्त हैं। अभी सम्भवतः घड़ा नहीं भरा है अतः प्रतीक्षा करनी पड़ेगी किन्तु परिणाम अवश्य ही एक न एक दिन सामने आयेगा।

□□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–28

सत्य को आप छिपा नहीं सकते। सत्य कहने वाले को आप मिटा तो सकते हैं लेकिन दबा नहीं सकते। सत्य कभी ना कभी सामने आ ही जाता है। और अपराधी और दागी नेताओं के सम्बन्ध में माननीय सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय सत्य पर आधारित होने के साथ–साथ जन भावनाओं पर भी आधारित था। नेताओं के अतिरिक्त जनता नहीं चाहती की अपराधी व्यक्ति संसद में जाकर बैठे और जनता को फँसाने और स्वयं को बचाने के कानून बनाएँ। जो स्वयं अपराधी है वह निष्पक्ष निर्णय कैसे ले सकता है। निष्पक्ष कानून कैसे बना सकता है। संसद में बैठे जनप्रतिनिधि, जिसमें एक अच्छी संख्या दागी और अपराधी नेताओं की है, उन्होंने स्वहित में जनता की उपेक्षा करते हुए माननीय सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय पलटने के लिए नया अध्यादेश बनाकर महामहिम राष्ट्रपति महोदय के पास हस्ताक्षर हेतु भेज दिया। राष्ट्रपति महोदय अध्यादेश को देखकर आश्चर्यचकित रह गये और उन्होंने इस सन्दर्भ में बात करने हेतु न्यायमंत्री और गृहमंत्री को बुलाया। इससे पहले कि इस सन्दर्भ में राष्ट्रपति भवन से कोई कार्यवाही होने ना होने की सूचना मिलती, काँग्रेस के उपाध्यक्ष श्री राहुल गाँधी ने इस अध्यादेश को बकवास बताकर फाड़ने तक का विचार प्रकट कर दिया। आप अपनी अर्न्तात्मा को अधिक समय तक नहीं दबा सकते और यही हुआ राहुल गाँधी की दबी हुई अर्न्तात्मा सचेत हुई और उसने इस अध्यादेश के प्रति अपना आक्रोश प्रकट कर दिया तथा बात प्रधानमंत्री तक पहुँच गई। सोनिया गाँधी जी से भी विचार–विमर्श

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ। इधर जनता बार-बार इस अध्यादेश को काला अध्यादेश कहकर सम्बोधित कर रही थी। अतः जन भावनाओं तथा अर्न्तात्माओं की आवाज पर यह अध्यादेश वापस ले लिया गया। जो सर्वथा उचित हुआ। हमारी संसद में सोनिया जी हैं, सुषमा स्वराज जी हैं, तथा अन्य कई मनोनीत अभिनेत्रियाँ भी संसद में सदस्य हैं और कई अन्य प्रान्तों से जीत कर आई हुईं भी सांसद हैं। क्या इन महिलाओं के साथ हत्या, अपहरण, डकैती, अथवा अन्य जघन्य अपराधों में आरोपित व्यक्ति का सांसद के रूप में बैठना उचित है। वह संसद जिसमें वर्चस्व अपराधी व्यक्तियों का हो वह जनहित का कोई काम कर ही नहीं सकती और यही स्थिति है कि देश में घोटालों पर घोटाले हो रहे हैं। क्योंकि जो अपराधी प्रवृत्ति का व्यक्ति होता है, वह संसद में जन हितार्थ अथवा देश हितार्थ नहीं जाता। बल्कि स्वहितार्थ जाता है और उसका स्वहित सांसद रहते हुए अधिक से अधिक धन कमाने का तथा अधिक से अधिक बड़ा बाहुबली बनने का होता है। ऐसे लोगों का प्रवेश संसद में ना हो इसके लिए बहुत समय से माँग हो रही थी। लेकिन जनता विवश थी। उसके सामने चयन करने के लिए जितने भी नाम उपलब्ध होते थे, उनमें यह तय करना मुश्किल हो जाता था कि कौन अधिक अपराधी है तथा कौन कम अपराधी है। दल बदलु नेता भी कम अपराधी नहीं होते। यह दल बदलते ही इसलिए हैं ताकि हर समय सत्ता में बने रहें और इनका वर्चस्व बना रहे। अतः इस अध्यादेश को बकवास कहकर फाड़ने की सलाह देना राहुल गाँधी का एक साहसिक कदम है, जिसके लिए उनको बधाई दी जानी सर्वथा उचित है।

आशाराम बापू के बारे में रोज नये सनसनीखेज खुलासे हो रहे हैं, रोज नई बातें सामने आ रही हैं, रोज नये मुकदमे दायर हो रहे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, और अब तो उनकी पत्नी, बेटी और पुत्र को भी संलिप्त कर लिया गया है। उचित–अनुचित का मुझे पता नहीं, गलत–सही की जाँच मैं नहीं कर सकता। लेकिन इतना अवश्य कहूँगा कि समर्थकों का यह कहना भी किसी सीमा तक सही प्रतीत होता है कि 6 साल बाद बलात्कार का मुकदमा क्यों दर्ज कराया जा रहा है, तत्समय ही क्यों नहीं दायर किया गया। पीड़ित व्यक्ति का यह कहना भी वजनदार है कि उसमें इतने बड़े संगठन की शक्ति को झेलने की ताकत नहीं थी। क्योंकि उसको जान से मारने की धमकी दी गई थी उसके परिवार को धमकी दी गई थी और अब चूँकि मामले खुल रहे हैं, इसलिए उसमें इतनी हिम्मत हुई कि उसने सभी बातें अपने परिजनों से बताई। झूठ–सच का फैसला तो जाँच में होगा, लेकिन संज्ञान लिया जाना चाहिए। यह भी आरोप हैं कि बहुत से आश्रम अवैध जमीनों पर बने हुए हैं। जिन पर जबरदस्ती कब्जा किया गया है। ऐसे सभी आश्रम या तो कानूनी प्रक्रिया अपनाकर वैध घोषित कर दिए जाएँ और उन पर जो भी शुल्क बैठता हो वह ले लिया जाएं अथवा ध्वस्त कर दिए जाएँ। दो बच्चों की हत्या का मामला भी सामने आया था वह कैसे दबा दिया गया। इसको भी देखा जाए। मामला दबाना नहीं चाहिए बल्कि उसमें निर्णय होना चाहिए ताकि यदि आरोप गलत है तो व्यक्ति का मुख उज्ज्वल हो और यदि आरोप सही है तो मुँह काला हो। मामले को दबाने का परिणाम अच्छा नहीं होता। इससे आरोपी का हौंसला बढ़ता है। ऐसे मुकदमों का निस्तारण भी शीघ्र होना चाहिए। जमानत के प्रार्थना पत्र दिए जा रहे हैं, जो अस्वीकार हो रहे हैं लेकिन अभी तक यह स्पष्ट नहीं हुआ। न टी.वी. पर दिखाया गया कि मुकदमें में क्या कार्यवाही हो रही है। किस–किस व्यक्ति की गवाही हो चुकी। बापू आशाराम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के बयान हुए या नहीं। जाँच किस नतीजे पर पहुँची है। यदि बापू आशाराम के मुकदमे का फैसला साल भर के अन्दर नहीं होता है तो इसके दुष्परिणाम हो सकते हैं। अन्ध भक्तों को शीघ्र ही मुकदमे के निर्णय से अवगत करा देना चाहिए। एक आश्रम को लगभग 200 लड़कियों ने छोड़ दिया था इस सन्दर्भ में भी उन लड़कियों का पता लेकर जाँच की जानी चाहिए कि उन्होंने क्यों छोड़ा था। यह भी आरोप है कि कुछ व्यक्ति आश्रम से लापत्ता हो गए उनका पता नहीं चला। वह मर गए या मार दिए गए। इसकी जाँच भी आवश्यक है ताकि आरोपी अथवा आरोप लगाने वाले व्यक्ति में से कौन सच्चा है, कौन झूठा। अभी तक सब कहानियाँ सामने आ रही हैं। सेवादार कितने सच्चे हैं, इसकी भी जाँच होनी चाहिए, आश्रम की जो लड़कियाँ बापू जी के निकट थी उनके चरित्र की भी नापतोल होनी आवश्यक हैं। इस विषय पर अब टी.वी. नहीं, समाचार पत्र नहीं बल्कि अदालत के माध्यम से निर्णय आना चाहिए। अफसरों को धमकियाँ दी गई हैं, पुलिस वालों को धमकियाँ दी गई हैं, सेवादारों को धमकियाँ दी गई हैं, इनकी सबकी सुरक्षा व्यवस्था की जानी चाहिए। जहाँ तक जमानत का प्रश्न है? यह विचार करना आवश्यक है कि जमानत के बाद समर्थक भड़ककर हमलावर तो नहीं हो जाएँगे। बापूश्री की जमानत के बाद क्या भूमिका रहेगी। वह क्या करना चाहेंगे। न्याय के साथ सहयोग करेंगे अथवा सबूतों–गवाहों को मिटाने का प्रयास करेंगे अथवा सम्बन्धित अधिकारियों, पुलिस और सेवादारों को धमकियाँ दिलवाएँगे अथवा अपनी सेना को उनके विरुद्ध करने का प्रयास करेंगे। सभी बातों पर विचार आवश्यक है। समाज में गन्दगी नहीं रहनी चाहिए और निर्दोष व्यक्ति प्रताड़ित नहीं होना चाहिए।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री रशीद मसूद साहब के मामले में 22 साल बाद निर्णय हुआ और श्री लालू यादव के मामले में 16 साल बाद निर्णय हुआ। माननीय सर्वोच्च न्यायालय को यह देखना चाहिए कि अपराधी मंत्रियों और नेताओं के मुकदमों के निस्तारण में इतनी देर क्यों लगती है। क्या मिली–भगत से मुकदमा दबा दिया जाता है ताकि सबूत नष्ट हो सके। गवाह मर सके। अथवा पक्ष और विपक्ष येन–केन–प्रकारेण मुकदमें में तारीखें लेते रहते हैं। इन सब पर कड़ी नजर होनी चाहिए। मुकदमों के देर से निस्तारित होने का एक कारण यह भी है कि किसी भी उच्च न्यायालय में पूरे न्यायाधीश नियुक्त नहीं है। अधीनस्थ न्यायालयों में भी स्थान रिक्त हैं, कर्मचारी भी नहीं हैं, न्यायमूर्तिगण भी नहीं हैं। इसका क्या कारण है, क्यों रिक्त स्थानों पर नियुक्ति नहीं की जा रही। क्या हमारे देश में कानून पास व्यक्तियों की कमी है। क्या हमारे देश में बेरोजगार व्यक्ति नहीं हैं। यदि बेरोजगारी है तो कर्मचारियों की नियुक्ति तुरन्त होनी चाहिए। यदि न्यायाधीश के स्थान रिक्त हैं तो विशेष परीक्षाओं का आयोजन करके त्वरित नियुक्ति होनी चाहिए। कई नेता ऐसे हैं, जो आज भी अपराधिक मुकदमों में लिप्त हैं किन्तु निर्णय नहीं हो रहे। एक सांसद तो गैर इरादतन हत्या के आरोपी हैं। किन्तु मुकदमा लम्बित है। क्यों? इसका उत्तर कौन देगा। न्यायपालिका अथवा कार्यपालिका और जब न्यायपालिका एक स्वतंत्र संस्था है। तो नियुक्तियाँ क्यों नहीं हो रहीं। जब संसद में सारे जनप्रतिनिधि हैं तो या तो जानबूझकर मुकदमों को लम्बित रखने के लिए नियुक्तियाँ नहीं की जा रही है अथवा अन्य कोई कारण ऐसा है जिसकी वजह से नियुक्तियाँ नहीं हो रहीं, सर्वोच्च न्यायालय को इस सन्दर्भ में कठोर कदम उठाना चाहिए और त्वरित कार्यवाही करनी चाहिए। घोटालों में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो लिप्त व्यक्ति है और जिन्हें सजा सुनाई जा रही है, उन पर जुर्माना भी उतनी ही राशि का लगाया जाना चाहिए जितने धन का उन्होंने घोटाला किया है और यदि वह जुर्माना अदा न कर सके तो उनकी सम्पत्ति से जुर्माना वसूल किया जाना चाहिए। केवल मात्र सजा देने से ही न्याय पूरा नहीं होगा। क्योंकि जिस धन का घोटाला किया गया है, जिस धन का गबन किया गया है वह धन भी तो वसूल होना चाहिए और जनहित के कार्यों में लगाया जाना चाहिए। ऐसे घोटालाबाज नेताओं से धन वसूल करके सरकारी खजाने में जमा होना आवश्यक है। अन्यथा घोटालाबाजों का हौंसला बढ़ेगा। करेंगे 40 करोड़ रुपया गबन और सजा होगी 4 साल की, इस प्रकार लाभ में कौन रहेगा और हानि किसकी होगी। सत्य है कि हानि देश की होगी। अतः इस हानि को भी पूरा करना आवश्यक है। सजा के साथ उतनी राशि का जुर्माना, जितना घोटाला किया गया है, न्याय प्रक्रिया को पूर्ण कर देगा। आपको यदि मेरा सुझाव स्वीकार है, तो कार्यवाही करें। अन्यथा मुझे सूचित करे ताकि मैं सुझाव देना बन्द कर दूँ।

❑❑

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–29

एक सच देखने को मिला माता के मन्दिर में पाँच लाख की भीड़ के अन्दर, किसी ने झूठी अफवाह उड़ा दी और सच भीड़ की भगदड़ में दब गया। कितने भक्त मरे और कितने घायल हुए इसके आँकड़े बताये गये हैं किन्तु कितने सच है यह तो भगवान ही जानता है लेकिन जनता दुखी है। इस भगदड़ का और इतने आदमियों के मरने का कारण क्या था? सच बोलें तो अन्धभक्ति। अन्धी श्रद्धा और अन्ध भक्ति में डूबे व्यक्ति घर से निकलकर पाँच लाख की संख्या में मन्दिर में पहुँच गये। सबके अन्दर होड़ थी कि सबसे पहले और सबसे अधिक देर तक दर्शन कौन करें? और सबसे अधिक पास जाकर देर तक दर्शन करके सबसे अधिक पुण्य कौन प्राप्त करें? और इसी होड़ में पूरी भीड़ मंदिर के प्रांगण में एकत्रित हो गयी। मंदिर में पांच लाख की भीड़ समाने की स्थिति नहीं थी और न ही पांच लाख व्यक्तियों को एक साथ अधिक से अधिक देर तक दर्शन करने की सुविधा थी। किन्तु पुण्य लाभ के प्रति लोग एक दूसरे को धकेलते हुए आगे बढ़ते गये। इसी बीच में अफवाह उड़ गयी और सभी दर्शन की बजाये जान बचाने के लिए भागने लगे। भगदड़ में जो गिर गया वह उठ नहीं सका और जो उठ गया वह घायल था। भगवान और माँ भगवती जो कण–कण में विराजमान है। उनको अपने घर में न पूज कर मंदिर में जाकर एक भीड़ का हिस्सा बनकर दर्शन पूजन करना इस दुर्घटना का कारण बना। यदि हम सच्ची श्रद्धा से अपने घर में भगवान और माँ भगवती की पूजा करें तो अधिक सच्चे मन से कर सकते हैं। अधिक देर तक कर सकते

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है और सुविधानुसार मंत्रों का उच्चारण करके पुण्य लाभ प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन मंदिर में जाकर पूजा करने की परम्परा में मंदिरों में खींच कर ले जाती है और कुछ लोगों द्वारा यह कह देना कि किसी विशेष मंदिर में जाने पर समस्त पाप मिट जाते हैं। धन की वर्षा होने लगती है। बिगड़े काम बन जाते है। इस भीड़ को बढ़ाने में सहायक होता है। यदि हम अन्ध भक्ति को त्याग कर, अन्धी श्रद्धा को त्याग कर सच्चे मन से भगवान की पूजा करें तो मंदिर में जाने की बजाये घर में पूजा करने से अधिक पुण्य प्राप्त होगा। क्योंकि तब हम अधिक देर तक अधिक विधि विधान से पूजा कर सकते है। यही अन्ध भक्ति बापू आशाराम के संदर्भ में देखने को मिली। कई करोड़ लोग उनके समर्थक हैं। भला–बुरा सोचे बिना आश्रमों में जाकर अपना सर्वस्व दान कर रहे हैं। तन–मन–धन से समर्पित हैं। यह नहीं जानते कि आश्रम पर आश्रम किस प्रकार बन रहे हैं। बापू आशाराम फिल्मी सितारों की तरह मंच पर नाच क्यों रहे हैं? धन कहाँ से आ रहा है? और उसका क्या उपयोग हो रहा है? किसी भी भक्त ने यह जानने का प्रयास नहीं किया कि आश्रम के अन्दर कुटियों में क्या होता है? एकान्तवास का लक्ष्य क्या है? अच्छे–भले घरों की स्त्रियाँ घरों को छोड़कर आश्रम में क्यों रह रही हैं? बच्चों की मौत कैसे हुई? महिलाएँ गायब कैसे हुई? क्या वास्तव में आश्रम में टार्चर रूप है? अन्ध भक्ति के आगे कुछ दिखाई नहीं दिया। केवल इस होड़ में कि बापू नाम से पुकारे उनको पहचाने। आश्रमों में भीड़ बढ़ती चली गयी और सबने बढ़–चढ़कर दान दिया। सरकार की बात अनसुनी करने वाले बापू आशाराम कब तक खैर मनाते, मना करने के बावजूद, पानी की कमी के बावजूद हजारों गैलन पानी भक्तों पर बहा दिया

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। अब जब बहुत सी बातें सामने आयी हैं, जो सत्य हैं या असत्य यह तो जांच से पता चलेगा और कुछ पता चल भी रहा है। लेकिन अन्धी भक्ति और अन्धी श्रद्धा जो भारतवर्ष में देखने को मिलती है ऐसी घटनाओं के लिए उत्तरदायी है। हमें अन्धभक्ति से और अन्धी श्रद्धा से दूर हटना होगा। तभी दुर्घटनाएं रूकेगी, तभी ऐसे आश्रम नहीं बनेंगे जहाँ दुराचार होता है।

आन्ध्रप्रदेश जल रहा है। नेतागण अनशन पर बैठे हैं। किसी को पता नहीं कि वह किसके समर्थन में अथवा किसके विरोध में अनशन पर बैठा है। आन्ध्र प्रदेश के एक भाग को तेलंगाना नाम दे दिया गया। कुछ लोगों ने इसका विरोध किया। विरोध का कोई कारण नहीं है। क्योंकि जो विरोध कर रहे है उनका कुछ नहीं बाँटा गया है। न जमीन बाँटी गई है, न जायदाद बाँटी गयी है। व्यवसाय भी जस के तस हैं। लेकिन तेलंगाना का विरोध करना है। बिना कुछ करें धरे, बिना देश की प्रगति में हाथ बँटाये। नेता बन जाने का यह एक सुअवसर है। हर आदमी नेता बनना चाहता है। क्योंकि वह देख रहा है कि नेताओं की सम्पत्ति दिन दूनी रात चौगनी बढ़ रही है। उनका सम्मान बढ़ रहा है। अतः नेता बनने में बहुत बड़ा सुख है। यही स्थिति तेलंगाना समर्थकों की है। उन्हें क्या परेशानी है? वह समर्थन में धरना प्रदर्शन आगजनी क्यों कर रहे हैं? सरकारी सम्पत्ति क्यों जलायी जा रही है? किसी को कुछ पता नहीं। वही नेता बनने वाली बात सामने आती है। यदि आन्ध्र प्रदेश के एक हिस्से का नाम तेलंगाना रख दिया गया तो इससे क्या नुकसान होगा? किस व्यक्ति का नुकसान होगा? इसका कोई आंकलन नहीं है। लेकिन विरोध करना है। धरना देना है। अनशन करना है। प्रदर्शन करना है। सरकारी सम्पत्ति फूंकनी है। तकि हम नेता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन सके। यह कोई नहीं सोच रहा है कि जिस स्कूल बस को उन्होंने फूंक दिया। उसी में बैठकर उनके बच्चे पढ़ने जाते थे। जिस सरकारी जीप को उन्होंने जला दिया वह बदमाशों को पकड़ने के काम आती थी। सज्जन व्यक्तियों के समर्थन में सरकारी सम्पत्ति काम आती है। सरकारी अधिकारी काम आते है लेकिन कोई चिंता नहीं। यह सोचने को कोई तैयार नहीं की छोटे–छोटे प्रान्त बनने से प्रगति अधिक तेजी से और अधिक होती है। इसका उदाहरण पंजाब, हरियाणा तथा उत्तराखण्ड है। लेकिन सोचने का समय नहीं है। अनशन पर बैठना है, नेता बनना है और अपनी जय–जयकार करानी है। यही हमारी सोच बन गयी है। देश में वर्तमान में आतंकवाद, नक्सलवाद, माओवाद, उग्रवाद, घुसपैठ जारी है। बजाये इनसे लड़ने के, देश को इन बीमारियों से लड़ने के लिए शक्ति प्रदान करने के, हम देश को अनशन, धरना प्रदर्शन से कमजोर कर रहे हैं। यह सच है कि बड़े प्रान्त में बड़ा बजट होता है और बड़े घोटाले के अधिक अवसर होते है लेकिन बड़े प्रान्त की प्रगति शिथिल होती है। उत्तर प्रदेश इसका उदाहरण है। हमें छोटी–छोटी बातों पर और ऐसे मुददों पर जैसा तेलंगाना और आन्ध्र प्रदेश का है पर अनशन, धरना प्रदर्शन, आगजनी नहीं करनी चाहिए। अभी तक विरोधी या समर्थक यह जनता को नहीं बता सके कि वह तेलंगाना का विरोध क्यों कर रहे हैं अथवा तेलंगाना के समर्थन में क्यों है? एक भेड़ चाल जारी है और जनता इस भेड़चाल का हिस्सा बन चुकी है। दिमाग और दिल काम नहीं कर रहे हैं। काम कर रहा है एक जेहाद जिसका कोई मकसद नहीं होता। सभी नेताओं को सोचना चाहिए कि इस प्रकार के विरोध और प्रदर्शन से देश बहुत पीछे चला जायेगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक सत्य टीवी पर रोज दिखाया जा रहा है। राजा रामबक्श सिंह के खजाने की खोज में खुदाई हो रही है। पहले कहा गया कि स्वामी जी को सपना आया और सपने में यह कहा गया कि किले के अन्दर खजाना दबा हुआ है। उसे खोद कर निकालो ताकि राजा रामबक्श सिंह की आत्मा जो किले में भटक रही है। मुक्त हो सके। बाद में कहा गया कि सपना नहीं आया बल्कि खजाने का नक्शा होने के कारण यह ज्ञात होता है कि क़िले में एक हजार टन सोना होगा। पुरातत्व विभाग ने कुछ जांच करके किसी धातु के जमीन के अन्दर होने की शंका प्रकट की है। खुदाई शुरू हो चुकी है। प्रश्न उठता है कि यदि खजाने का नक्शा पहले से उपलब्ध था तो अब तक सामने क्यों नहीं आया? अब ऐसा क्या हुआ कि नक्शे के आधार पर खजाने की खोज आवश्यक हो गयी। 20 फीट गहरा खोदने पर खजाने के होने का अनुमान लगाया जारहा है। दावा करने वाले व्यक्ति दस लाख रुपया सरकार के पास जमा करने को तैयार है। इस आधार पर कि यदि खजाना न मिला तो उनके दस लाख रुपया जब्त कर लिये जाये। सैकड़ों साल से खजाना दबा पड़ा है। नक्शा भी तभी का होगा आज तक उस सम्बन्ध में कोई आवाज नहीं आयी अचानक ही आँख कैसे खुल गई? यह एक बड़ा प्रश्न है। अगर खुदाई में खजाना मिल जाता है तो वास्तव में यह एक उपलब्धि होगी। देश का बहुत बड़ा आर्थिक संकट दूर हो जाएगा। लेकिन यदि खजाना नहीं मिला तो देश और विदेश में कितनी हँसी उड़ेगी इसका दुख अभी समझ में नहीं आ रहा है। प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक राज्य बड़ा हाथ मारना चाहता है। इसलिए सरकार इस खजाने की खोज में लगी हुई है और लाखों रुपया खर्च करके खुदाई करने को तैयार है। यह भी अन्धी श्रद्धा और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्ध विश्वास का एक उदाहरण है। यह अन्धविश्वास ही है जो सरकार को खजाना खोजने के लिए खुदाई को विवश कर रहा है। यह अन्धविश्वास ही है कि खजाने के बारे में बड़े विश्वास के साथ बयान दिये जा रहे हैं। जहाँ पर खुदाई हो रही है वहाँ पर दुकाने सज गयी है। भीड़ बढ़ रही है। पुलिस जो किसी और काम में लगाई जाती वह वहाँ पर तैनात कर दी गयी है। ईश्वर से प्रार्थना है कि खजाना मिल जाये और देश की जग हँसाई न हो और सरकार की मेहनत सार्थक हो जाये। लेकिन इसके बाद भी कई प्रश्न ऐसे रह जायेंगे जिनका जनता उत्तर चाहेगी और अगर खजाना नहीं मिला तो अन्धविश्वास का इससे बड़ा सरकारी उदाहरण विश्व में नहीं मिलेगा। सच जितनी जल्दी सामने आ जाये उतना ही महत्वपूर्ण होता है। इसी सच की प्रतीक्षा करनी होगी। यही सच है।

□□

डॉ० राम स्वरूप आर्य, बिजनौर
की स्मृति में सादर भेंट--
हरप्यारी देवी, चन्द्रप्रकाश आर्य
संतोष कुमारी, रवि प्रकाश आर्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्–30

कल श्री मोहन जी ने एक बहुत बड़े सत्य की ओर इशारा किया और मैं उस सत्य की खोज में व्यस्त हो गया। काफी अनुसंधान के बाद यह लगा कि मोहन जी का कथन सत्य है, मोहन जी ने प्रश्न किया था कि हिन्दू कभी एक नहीं हो सकते। मेरी सारी विचार श्रृंखला बिखर गई और लगा कि मैंने इस ओर अब तक क्यों नहीं सोचा। सोचता रहा, सोचता रहा, सोचता रहा और सोचते–सोचते इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि मोहन जी का कहना बिलकुल सही है। जहाँ पर तैतीस करोड़ देवी–देवता है, जहाँ कुछ लोग वैष्णव धर्म के हैं, कुछ लोग शैव धर्म के हैं, कुछ लोग मातृ शक्ति को मानते हैं, कुछ सूर्य उपासक हैं, और कुछ अन्य देवी–देवताओं के भक्त हैं। और सबकी विचारधारा अलग–अलग है। कुछ अपने आपको परशुराम का अवतार मानते हैं। कुछ अपने आपको महाराज अग्रसेन की सन्तान मानते हैं। कुछ वाल्मीकि जी के अनुयायी हैं। कुछ जैन धर्म मानते हैं। तो कुछ बौद्ध धर्म में श्रद्धा रखते हैं। कुछ श्री चित्रगुप्त जी की पूजा करते हैं और कुछ साई नाथ जी के भक्त हैं। और साईनाथ जी भी शिरडी वाले अलग है, और पट्टीपूर्ति वाले अलग हैं। एक ही शहर में कई–कई धर्मगुरुओं के अनुयायी/चेले/भक्त उपलब्ध हैं, कुछ श्री–श्री 108 कृष्णाचार्य जी को मानते हैं। कुछ आदरणीय अलवर वाले बाबा जी के भक्त हैं। कुछ ने आशाराम जी से दीक्षा ले रखी हैं। कुछ राधास्वामी मत के हैं। कुछ राम–रहीम सरदार गुरमीत सिंह के भक्त हैं। कुछ फुलसन्दे वाले बाबा को मानते हैं। कुछ आनन्द साहब दरबार में हाजरी लगाते हैं। और भी होंगे,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिनकी मुझे जानकारी नहीं है। लेकिन स्थान–स्थान पर सत्संग होता है। लखनऊ में एक परम श्रद्धेय महिला गुरु जी हैं उनके भी अनुयायी चारों तरफ फैले हुए हैं। कुछ बाते सभी गुरु एक ही कहते हैं। लेकिन कुछ भिन्न कहते हैं। कोई अपने गुरु को महान बताता है और दूसरा अपने गुरु को महान बताता है। कौन महान है, कौन महानता का दावा करता है, यह मेरा विषय नहीं है, मेरा विषय है कि जहाँ मैं रहता हूँ वहाँ लगभग डेढ लाख की आबादी है। उस डेढ़ लाख की आबादी में लगभग पन्द्रह धर्मगुरुओं के अनुयायी मौजूद हैं। सबके अलग–अलग मंच हैं। सबके अलग–अलग विचार हैं। और सबके अलग–अलग सत्संग कीर्तन करने के स्थान हैं। मतैक्य सबमें नहीं है और मतैक्य हो भी नहीं सकता। क्योंकि मैं भगवान शंकर का उपासक हूँ तो उन्हीं को सर्वोपरि मानता हूँ और यदि मैं सभी देवताओं का उपासक हूँ तो सबकी पूजा करता हूँ लेकिन ईष्ट अपना–अपना अलग–अलग होता है। परम पूज्य शंकराचार्य जी भी चार हैं कभी–कभी चारों में मतभेद हो जाता है। ऐसी स्थिति में क्या हिन्दू एक हो सकते हैं। जाट महासभा के व्यक्ति अपने लिए आरक्षण माँग रहे हैं। जैन भी आरक्षण चाहते हैं। दलित समाज को आरक्षण प्राप्त है। अतः जो आरक्षण प्राप्त व्यक्ति हैं वह अनारक्षित व्यक्तियों से कैसे मिल सकते हैं। अनारक्षित रह जाते हैं केवल ब्राह्मण और वैश्य। इनमें भी ब्राह्मण परशुराम के अनुयायी हैं और वैश्य महाराज अग्रसेन के। यदि हम इतिहास देखें और विहंगम दृष्टि डाले तो यह स्थिति केवल हिन्दू समाज में ही है। समस्त मुस्लिम भाईयों का एक ही धार्मिक नेता पूरे भारत में हैं। ईसाईयों का एक ही मान्य पोप वैटिकन में है। जबकि भारतवर्ष में घर–घर में अलग–अलग देवी–देवताओं की

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूजा होती है। कहीं रामायण का पाठ होता है, कहीं गुरु ग्रंथ साहब का जाप होता है। और कहीं श्रीमद्भागवत की कथा होती है। धर्मग्रन्थ भी अलग–अलग हैं, धर्मगुरु भी अलग–अलग है और सभी के मान्य देवता भी अलग–अलग है। जो भी व्यक्ति मेरे इस लेख को पढ़े वो मुझे यह सुझाव अवश्य लिखे कि इन परिस्थितियों में हिन्दू एक कैसे हो सकते हैं। क्या यह सम्भव नहीं है कि समस्त हिन्दू समाज का एक ही गुरु हो। समस्त हिन्दू समाज का एक ही परमात्मा हो। इस पर चिन्तन आवश्यक है और मुझे लगता है कि हिन्दू में एकता न होने के कारण ही इनकी उपेक्षा भी हो रही है, राजनेता हिन्दुओं के पीछे नहीं भागते बल्कि कभी जाटों के पीछे जाते हैं, कभी गुर्जरों को पटाते हैं। कभी ब्राह्मणों को लालच देते हैं और कभी वैश्यों को प्राथमिकता देते हैं। और कुछ का दलित वोट बैंक है। आज एकता के कारण ही मुस्लिम समाज के वोटों का महत्व राजनीति में सबसे ऊपर है। भिन्न–भिन्न मतो के होने के कारण वैमनस्य की जड़े उखड़नी असम्भव नहीं तो मुश्किल प्रतीत होती हैं।

यही सच भाजपा के सम्बन्ध में भी कहा जा सकता है, भाजपा की सर्वोच्च शिखर पर पहुँचने वाली पार्टी न बनने का कारण एकता का अभाव है। भाजपा में भी एक नेता नहीं है। सभी स्वयंभू नेता हैं। और एक–दूसरे की बात काटना भाजपा के स्वभाव में है। हो सकता है भाजपा का विश्लेषण किया जाए तो उसका अर्थ मतभेद ही निकले। मोदी के मामले में भाजपा दो फाड़ नजर आई। वह तो शाबासी है श्री राजनाथ सिंह को कि वह हिले नहीं। वरना भाजपा के भीष्म पितामह ने कोई कसर नहीं छोड़ी थी। यही स्थिति अन्य नेताओं के बारे में भी है। कोई भाजपा सदस्य अपने नेता की बात मानने को तैयार नहीं होता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी उमा भारती नाराज हो जाती हैं। तो कभी श्री विजय गोयल अपना विचार प्रकट करने लगते हैं और जिला स्तर पर तो कहानी ही मतभेदों की है। भाजपा सर्वोच्च प्राथमिकता वाली पार्टी बन सकती है, सर्वग्राह्य पार्टी बन सकती है। यदि इसमें मतैक्य स्थापित हो जाए। नरेन्द्र मोदी के बारे में कई नेताओं के अलग–अलग बयान आए। किसी ने कहा कि वह नमो का मंत्र नहीं जपना चाहते। कोई नरेन्द्र मोदी के साथ मंच साझा करना नहीं चाहता। कोई उसमें पुरानी बातों को लेकर अपना मतभेद प्रकट करता है। स्थिति अच्छी नहीं है। जनता चाहती है भाजपा को लेकिन भाजपा अपने मतभेदों के कारण जनता के अन्दर विश्वास पैदा करने में सफल नहीं होती। आज अगर आप गौर से देखे तो काँग्रेस में आरम्भ से अब तक एक ही नेता रहा है और उसी की बात सबने मानी है। जो लोग काँग्रेस पार्टी से अलग भी हुए उनसे भी कोई अन्तर नहीं पड़ा क्योंकि जो बचे उनका नेता एक ही रहा। यही कारण है कि तमाम विरोधों के बावजूद, तमाम घोटालों के बावजूद काँग्रेस की स्थिति आज भी मजबूत है। क्योंकि वहाँ हर एक आदमी नेता नहीं है। केवल एक ही नेता है उसी की बात सब मानते हैं। यही स्थिति बसपा और सपा की है। दोनों पार्टियों में एक ही नेता है। सब नेता नहीं है। सब अपने एक ही नेता की बात मानते हैं। दोनों स्थानीय दल हैं, यू.पी. के बाहर दोनों की कोई पहचान नहीं है लेकिन देश की राजनीति पर हावी हैं क्योंकि इनमें एकता है। आज से नहीं पुरातन काल से यह स्थिति स्पष्ट है कि एकता में बड़ी शक्ति होती है। यही कारण है कि भाजपा विस्तार में बड़ी होते हुए भी शीर्ष पर नहीं पहुँच पा रही है राष्ट्रीय स्तर की पार्टी होते हुए भी राष्ट्र में अपनी वह पहचान नहीं बना पाई, जो एक साफ–सुथरी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले ध्यान क्यों नहीं आई। इससे भी बड़ा आश्चर्य है कि धर्माचार्यो तथा धर्मगुरुओं को यह बात ध्यान में क्यों नहीं आई। यदि ध्यान में आती तो वह अवश्य ही इस पर कुछ कहते। अन्य धर्मावलम्बियों को देखे तो उनमें यह बात नहीं है। किसी भी वस्तु पर ईसा–मसीह का चित्र नहीं मिलेगा। किसी भी कलैण्डर में अल्लाह का या खुदा का चित्र नहीं होगा। ऐसे व्यक्तियों की संख्या एक प्रतिशत भी नहीं है, जो अपने भगवान का चित्र वस्तुओं के पैकेट पर, शादी के कार्ड पर अथवा कलैण्डर पर छपवाते हों। यदा–कदा देखने को मिलता है कि पुण्यस्थली मक्का–मदीना का चित्र कलैण्डर पर छपा हुआ है अथवा ईसा–मसीह का चित्र कलैण्डर पर छपा हुआ है, मैं हिन्दुओं के साथ–साथ उन सभी धर्मावलम्बियों से कहता हूँ कि अपने भगवान का चित्र घर के मंदिर में रखो, मन के मंदिर में रखो उसे कलैण्डरों पर, वस्तुओं के पैकेट पर, शादी के कार्डो पर मत छापो, भगवान का नाम भी मत छापो क्योंकि इन सब वस्तुओं का अन्त कूड़ें में जाकर ही होता है। और हम जिसकी पूजा करते हैं, जिससे अपने लिए आशीर्वाद मांगते हैं, जिससे अधिक आदर हम किसी को नहीं देते उसका निरादार इससे अधिक क्या हो सकता है कि एक दिन उसके चित्र को व्यर्थ मानकर कूड़े में फेक दें। आशा है सभी धर्मावलम्बी मेरी इस बात को समझेंगे तथा गुनेंगे और प्रयास करेंगे कि कलैण्डरों पर वस्तुओं के पैकेटों, पर शादी के कार्डो पर भगवान के चित्र न छापे जाएँ और ऐसे छपे चित्रों को कूड़ें में भी ना फेंका जाए। इससे बड़ा पाप कुछ नहीं हो सकता कि हम अपने पूज्य का चित्र कूड़ें में फेंक दें। मेरा लिखना सार्थक हो जाएगा यदि सभी लोगों की समझ में यह बात आ गई।

□□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूजा होती है। कहीं रामायण का पाठ होता है, कहीं गुरु ग्रंथ साहब का जाप होता है। और कहीं श्रीमद्भागवत की कथा होती है। धर्मग्रन्थ भी अलग–अलग हैं, धर्मगुरु भी अलग–अलग है और सभी के मान्य देवता भी अलग–अलग है। जो भी व्यक्ति मेरे इस लेख को पढ़े वो मुझे यह सुझाव अवश्य लिखे कि इन परिस्थितियों में हिन्दू एक कैसे हो सकते हैं। क्या यह सम्भव नहीं है कि समस्त हिन्दू समाज का एक ही गुरु हो। समस्त हिन्दू समाज का एक ही परमात्मा हो। इस पर चिन्तन आवश्यक है और मुझे लगता है कि हिन्दू में एकता न होने के कारण ही इनकी उपेक्षा भी हो रही है, राजनेता हिन्दुओं के पीछे नहीं भागते बल्कि कभी जाटों के पीछे जाते हैं, कभी गुर्जरों को पटाते हैं। कभी ब्राह्मणों को लालच देते हैं और कभी वैश्यों को प्राथमिकता देते हैं। और कुछ का दलित वोट बैंक है। आज एकता के कारण ही मुस्लिम समाज के वोटों का महत्व राजनीति में सबसे ऊपर है। भिन्न–भिन्न मतो के होने के कारण वैमनस्य की जड़े उखड़नी असम्भव नहीं तो मुश्किल प्रतीत होती हैं।

यही सच भाजपा के सम्बन्ध में भी कहा जा सकता है, भाजपा की सर्वोच्च शिखर पर पहुँचने वाली पार्टी न बनने का कारण एकता का अभाव है। भाजपा में भी एक नेता नहीं है। सभी स्वयंभू नेता हैं। और एक–दूसरे की बात काटना भाजपा के स्वभाव में है। हो सकता है भाजपा का विश्लेषण किया जाए तो उसका अर्थ मतभेद ही निकले। मोदी के मामले में भाजपा दो फाड़ नजर आई। वह तो शाबासी है श्री राजनाथ सिंह को कि वह हिले नहीं। वरना भाजपा के भीष्म पितामह ने कोई कसर नहीं छोड़ी थी। यही स्थिति अन्य नेताओं के बारे में भी है। कोई भाजपा सदस्य अपने नेता की बात मानने को तैयार नहीं होता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

185407

छवि वाली पार्टी की होनी चाहिए थी। हमारा एक ही नेता हो और उसके विरुद्ध सपने में भी हम कुछ ना बोले, कुएँ के अन्दर भी कुछ ना बोले, केवल उसकी बात माने यदि गलती कर रहा है तो वह स्वयं ही समझेगा अथवा अकेले में जगजाहिर किए बगैर उसको समझाए तभी हम शीर्ष पर पहुँच सकते हैं। घर, परिवार और समाज की भी यही स्थिति होती है। जिस घर में एक ही मुखिया होता है और सब उसकी बात मानते हैं उसी को खजाना मिलता है। जहाँ मतैक्य नहीं होता वहाँ दुर्दैव होता है और उसकी कोई पहचान नहीं होती। इस पर चिन्तन आवश्यक है।

चलते–चलते एक और सत्य आपके समक्ष रखना चाहूँगा। हिन्दू जिस तरह से अपने भगवान की पूजा करते हैं, उसी अनुपात में भगवान का निरादर भी होता है, कलैण्डरों पर, धूपबत्ती के पैकेटों पर, शादी विवाह के कार्ड पर भगवान के चित्र छापे जाते हैं। वर्ष समाप्त होने के पश्चात जब कलैण्डर व्यर्थ हो जाता है तब भगवान के चित्रवाला वह कलैण्डर कूड़े में फेंक दिया ज़ाता है। इसी प्रकार शादी विवाह समाप्त हो जाने के पश्चात शादी के कार्ड पर जो गणेश भगवान का चित्र छपा होता है। वह भी कूड़े में ही दर्शन देता है। धूपबत्ती के पैकेट, चाय के पैकेट अथवा अन्य कई वस्तुओं के पैकेट पर भी भगवान के चित्र छपे होते हैं। जो एक समय पश्चात कूड़े में ही शोभा पाते हैं। भगवान का इससे बड़ा निरादर क्या हो सकता है कि उसके चित्र को कूड़े में फेक दिया जाए। कुछ व्यक्ति जरूर ऐसे हैं जो ऐसे चित्रों को गंगा जी में प्रवाहित करते है अथवा अन्य किसी नदी में प्रवाहित करते हैं किन्तु ऐसे व्यक्तियों की संख्या 5–10 प्रतिशत से अधिक नहीं है। अधिकांश लोग व्यर्थ कलैण्डरों को वस्तुओं के, पैकेटों को, शादी ब्याह के अनुपयोगी कार्डो को कूड़े में ही फेंकते हैं। अथवा रद्दी में बेच देते हैं। आश्चर्यचकित हूँ कि मुझे यह बात

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R.P.S पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या 097 ARY-S आगत संख्या 185407

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

097

185407

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

उषा शर्मा

सत्य की खोज में पता नहीं कितने ऋषियों, मुनियों ने प्रयास किये होंगे भगवान ने किस प्रकार सत्य की स्थापना की होगी। सत्य जो कि कड़वा होता है उसको लोग कैसे ग्रहण करते हैं यह एक खोज का विषय है। समसामयिक घटनाओं को सत्य के परिपेक्ष में देखते हुए इस पुस्तक में लेख संकलित किये गये हैं जो समाचार पत्रों में भी प्रकाशित हुए हैं और कुछ लोगों की टिप्पणियां भी प्राप्त हुई हैं। मैं इस सबसे सरोकार नहीं रखती। जो भी घटना समसामयिक होती है वह उनके लेखों में परिलक्षित होती है। कुछ सुझाव भी होते हैं। कुछ मनोदगार होते हैं। समाज को परिवर्तित करने की चेष्टा एक बड़ा मुश्किल कार्य है। किन्तु असम्भव नहीं। प्रत्येक दिन या तो काव्य में अथवा लेखों में समसामयिक घटनाओं के प्रति कभी इनके मन में आक्रोश उत्पन्न होता है, कभी संवेदना उत्पन्न होती है, कभी परिवर्तन का प्रयास होता है। मैं नहीं चाहती कि यह राजनीति पर लेख लिखें क्यों कि कोई इनका मूल्य, इनका महत्व वर्तमान्न में समझने को तैयार नहीं होगा। फिर भी यह लिखते हैं। कभी-कभी मुझे पढ़वाते हैं और मेरे सुझाव पर उनमें परिवर्तन भी करते हैं किन्तु फिर भी जो बात इनके मन को कचोटती है वह अवश्य लिखते हैं। क्रिकेट के संदर्भ में बहुत कुछ लिखा है जिसको यह अंग्रेजो द्वारा थोपा गया एक ऐसा खेल मानते हैं जो देश हित में नहीं है फिर भी इनके लिखने से क्या होता है। क्रिकेट बन्द नहीं हो सकता क्योंकि इससे बहुत से लोगों के हित जुड़े हुए हैं। किन्तु मा0 अटल बिहारी वाजपेयी जैसे व्यक्तियों के साथ क्रिकेटर का नाम जोड़ना और क्रिकेटर को भी वही सम्मान देना जो देश हित के लिए समर्पित व्यक्तियों को है इनको नहीं सुहाता। लेकिन होनी-अनहोनी सब साथ चलती है जो होना है वो होता है, किसी एक व्यक्ति के शोर मचाने से न होनी रुकती है और ना अनहोनी टलती है। कविता में भी वही भाव होते हैं जो लेख में हैं। समाज में परिवर्तन चाहते हैं, समाजहित और देशहित इनके अन्दर रचा-बसा है। अभी तक हो किसी राजनेता ने अथवा किसी बुद्धिजीवी ने, एक-दो को छोड़कर, इनके लेखों की या इनके प्रयासों की सराहना नहीं की है फिर भी हतोत्साहित नहीं हैं। अब मोदी जी के देश का प्रधानमंत्री बनने के बाद इनके लेखों में बदलाव आया है और मैं समझती हूँ कि समय भी अवश्य परिवर्तित होगा और जो प्रबुद्ध समाज अबतक उपेक्षित रहा है अब अपना अपेक्षित अवश्य प्राप्त करेगा। बदलाव देशहित में होगा ऐसा मेरा विश्वास है। भगवान से इन्होंने भी प्रार्थना की है और मैं भी प्रार्थना करती हूँ कि मोदी जी के आगमन से देशहित में परिवर्तन अवश्य हो।

– उषा शर्मा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar